सूचना और प्रसारण मंत्रालय

वार्षिक रिपोर्ट

1993-94

विषय-सूची

अध्याय	1	वर्ष-एक दृष्टि में	1
अध्याय	2	योजना निष्पादन	13
अध्याय	3	संगठन	22
अध्याय	4	आकाशवाणी	27
अध्याय	5	दूरदर्शन	45
अध्याय	6	फिल्में	57
अध्याय	7	पत्र सूचना कार्यालय	73
अध्याय	8	भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक	76
अध्याय	9	प्रकाशन विभाग	78
अध्याय	10	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	82
अध्याय	11	विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय	87
अध्याय	12	फोटो प्रभाग	93
अध्याय	13	गीत और नाटक प्रभाग	95
अध्याय	14	गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग	99
अध्याय	15	भारतीय जनसंचार संस्थान	101

परिशिष्ट

I	मंत्रालय का संगठनात्मक चार्ट	105
II	योजना और गैर-योजना बजट का विवरण	107
III	1994-95 की अवधि में सम्भावित नए आकाशवाणी केन्द्रों की सूची	111
IV	विविध भारती और आकाशवाणी के प्राथमिक चैनलों के विज्ञापनों से प्राप्त राजस्व	112
V	1993 में प्रमाणित की गई फीचर फिल्मों की सूची	113
VI	दूरदर्शन प्रसारण केन्द्रों की सूची (8-2-1994 तक की स्थिति)	114
VII	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की गतिविधियों से संबंधित आंकड़े	115
VIII	पत्र सूचना कार्यालय - क्षेत्रीय एवं शाखा कार्यालयों की सूची	116
IX	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालयों की सूची	117

अध्याय 1

वर्ष : एक दृष्टि में

1.1.1. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का उद्देश्य लोगों को सूचना देना, शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है। मंत्रालय की माध्यम इकाइयां विकास की दिशाओं के बारे में जागरूकता पैदा करती हैं और सरकार की नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों में लोगों का सहयोग सुनिश्चित करती हैं।

1.1.2. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत निम्नांकित माध्यम इकाइयां हैं: आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र सूचना कार्यालय, प्रकाशन विभाग, गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण विभाग, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, फोटो प्रभाग, गीत एवं नाटक प्रभाग, फिल्म समारोह निदेशालय तथा फिल्म प्रभाग। मंत्रालय राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, भारतीय जनसंचार संस्थान, भारतीय प्रेस परिषद तथा केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड से भी संबद्ध हैं। आगामी अनुच्छेदों में वर्ष 1993-94 के दौरान इन माध्यम इकाइयों की गतिविधियों का विवरण दिया गया है। इसके पश्चात प्रत्येक माध्यम इकाई के बारे में विस्तृत अध्याय दिया गया है। रिपोर्ट के अंत में परिशिष्टों में आंकड़ों और सारणियों के रूप में जानकारी दी गई हैं।

आकाशवाणी

1.2.1. इस समय आकाशवाणी के नेटवर्क में 162 (31.12.1993 तक) प्रसारण केन्द्र हैं। 1993-94 के दौरान (दिसंबर, 1993 तक) 10 स्थानीय आकाशवाणी केन्द्रों तथा तीन नए आकाशवाणी केन्द्रों ने नियमित प्रसारण आरंभ किया। इनके अतिरिक्त, जम्मू में एक एफ.एफ. ट्रांसमीटर ने काम करना आरंभ किया और जैपुर तथा बीकानेर के ट्रांसमीटर की क्षमता क्रमश: 20 किलोवाट मेगावाट से 100 किलोवाट मेगावाट तथा 10 किलोवाट मेगावाट से 20 किलोवाट मेगावाट तक बढ़ा दी गई।

1.2.2. --

1.2.3. दिल्ली, बंबई और मद्रास में एफ.एम. चैनल पर निजी निर्माताओं को भी प्रसारण-समय आबंटित किया गया।

1.2.4. आकाशवाणी, दिल्ली में स्वास्थ्य, व्यावसायिक शिक्षा, उपभोक्ता संरक्षण, लघु उद्योग, इत्यादि जैसे विषयों पर देश का पहला सजीव 'फोन इन कार्यक्रम' आरंभ किया।

1.2.5. आकाशवाणी, दिल्ली द्वारा श्रोताओं को अपने पसंदीदा कार्यक्रमों के मुख्य अंश टेलीफोन पर प्राप्त करने और उन पर अपने विचारों को रिकार्ड करने का अवसर प्रदान करने के ध्येय से वॉयस मेल सेवा आरंभ की गई।

1.2.6. वर्ष 1993-94 के दौरान हिन्दी समाचार पूल की शुरूआत आकाशवाणी, कटक द्वारा उड़िया में पांच मिनट के एक अतिरिक्त समाचार बुलेटिन का आरंभ, आकाशवाणी, दरभंगा द्वारा मैथिली में एक द्वै-साप्ताहिक समाचार सारांश, मुख्यालय के सामान्य समाचार

कक्ष और प्रादेशिक समाचार इकाइयों में कंप्यूटरीकरण की प्रक्रिया और तेज करना, आर्थिक सुधारों तथा परिवर्द्धित सार्वजनिक वितरण प्रणाली को उभारने और उनकी व्याख्या करने के ध्येय से प्रदेशों की राजधानियों में अवस्थित प्रादेशिक समाचार इकाइयों द्वारा सप्ताह में कम से कम एक बार समाचार-विश्लेषण का प्रसारण तथा महत्वपूर्ण समाचारों का प्रभावशाली कवरेज, समाचार सेवा प्रभाग के कार्य-निष्पादन की मुख्य झलकियां थीं।

दूरदर्शन

1.3.1. वर्ष के दौरान दूरदर्शन के सात कार्यक्रम निर्माण केंद्रों ने कार्य करना आरंभ कर दिया तथा देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग क्षमता वाले 21 ट्रांसमीटर लगाए गए। इस प्रकार 31 कार्यक्रम निर्माण केंद्रों (इसमें दिल्ली का केन्द्रीय निर्माण केन्द्र और गुवाहाटी का कार्यक्रम निर्माण एवं आपूर्ति केंद्र शामिल नहीं हैं) तथा अलग-अलग क्षमता वाले 562 टी.वी. ट्रांसमीटरों के नेटवर्क के साथ दूरदर्शन देश के लगभग 84 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच रहा है।

1.3.2. वर्ष के दौरान दूरदर्शन ने पांच सैटेलाइट चैनलों तथा दस भाषाओं में एक सैटेलाइट प्रादेशिक भाषा सेवा की शुरूआत की।

1.3.3. प्रात:कालीन प्रसारण में अंग्रेजी में एक दैनिक विश्व समाचार बुलेटिन आरंभ किया गया।

1.3.4. दूरदर्शन केंद्र, श्रीनगर से कश्मीरी में समाचार बुलेटिन का प्रसारण फिर आरंभ किया गया।

1.3.5. दूरदर्शन के पांच नए चैनल का पुनर्गठन किया गया। शाम के प्रसारण में राष्ट्रीय समाचार बुलेटिनों की अवधि बढ़ाकर तीस मिनट कर दी गई।

फिल्म प्रभाग

1.4.1. अप्रैल से नवंबर 1993 की अवधि में फिल्म प्रभाग ने 17 समाचार पत्रिकाओं तथा 21 वृत्त चित्र/लघु फिल्मों का निर्माण किया। इनमें से 13 फिल्में प्रभाग के लोगों द्वारा तथा 8 फिल्में स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा बनाई गईं।

1.4.2. प्रभाग ने राष्ट्रीय एकता, आर्थिक नीति तथा पेट्रोलियम उत्पादों के उपभोग में बचत जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों के लिए फिल्मों का निर्माण किया। प्रभाग ने लोकप्रिय गोपीनाथ बड़दलोई, डा. गुलाम रसूल तथा नृत्यांगना कोमला वरदन जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर जीवनीपरक फिल्में पूरी की।

1.4.3. प्रभाग ने स्वामी कृष्णानंद महाराज की जन्मशताब्दी पर 'स्वामी कृष्णानंद महाराज को श्रद्धांजलि' शीर्षक से बनाई जाने वाले वृत्त-चित्र के लिए मारिशस सरकार को सुविधाएं प्रदान की।

1.4.4. सरकार की आर्थिक नीति, औद्योगिक नीति, परिवर्द्धित सार्वजनिक वितरण तथा आम लोगों को लाभ पहुंचाने वाले अन्य कार्यक्रमों के उचित प्रस्तुतीकरण के लिए फिल्म प्रभाग ने 'यात्रा', 'एक नई कोशिश-एक नई उम्मीद', ए न्यू इंवीटेशन और 'लेना एक न देना दो' शीर्षक से चार विशेष फिल्मों के निर्माण का काम हाथ में लिया है।

1.4.5. वर्ष के दौरान नवंबर, 1993 तक फिल्म प्रभाग द्वारा बनाई गई 7 फिल्मों ने राष्ट्रीय

पुरस्कार प्राप्त किया। 'फ्रीडम' तथा 'बाजार सीताराम' शीर्षक से दो फिल्में भारत के 25 वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1994 में भारतीय पैनोरमा खंड में दिखाई गई।

1.4.6. दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारण के लिए प्रभाग नियमित रूप से फिल्में देता रहा है। इन चैनलों के उद्घाटन पर प्रसारित फिल्मों में 15 अगस्त, 1947 के स्वतंत्रता दिवस समारोह तथा 1951 में दिल्ली में आयोजित पहले एशियाई खेलों पर प्रभाग की फिल्में शामिल थीं। प्रभाग ने मेट्रो चैनल पर अपनी फिल्मों के प्रसारण के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लि. के साथ एक सहयोग-पत्र पर हस्ताक्षर किया हैं। इस योजना के अंतर्गत विख्यात फिल्मी व्यक्तित्वों, जैसे पृथ्वीराज कपूर, नरगिस दत्त, राजकपूर तथा सोहराब मोदी पर अब तक सात फिल्में प्रसारित की जा चुकी हैं।

1.4.7. प्रभाग को बंबई के वृत्त चित्र, लघु तथा एनीमेशन फिल्मों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के आयोजन का, जो एक द्विवार्षिक आयोजन है, दायित्व सौंपा गया है। पहला फिल्म समारोह 1-7 मार्च, 1990 तथा दूसरा 1-7 फरवरी, 1992 को हुआ था। इस तरह का तीसरा समारोह 1-7 फरवरी, 1994 को हुआ। यह समारोह एशिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित समारोहों में से एक बन चुका है।

1.4.8. प्रभाग विभिन्न प्रांतों और छोटे शहरों में अपनी कुछ सर्वोत्कृष्ट एवं पुरस्कृत फिल्मों को दिखाने के लिए समारोह आयोजित करता रहा है। 1993 में जिन स्थानों पर ये समारोह आयोजित किए गए उनमें से कुछ नागपुर, इंदौर, नोएडा और बंगलौर में हैं।

1.4.9. 1992 तक प्रभाग ने अपनी फिल्मों के 684 श्वेत-श्याम प्रिंट तथा 222 रंगीन प्रिंट जारी किए। अप्रैल 1993 से इसने सभी फिल्मों के रंगीन प्रिंट जारी करना आरंभ कर दिया है। परिवर्तित वितरण प्रणली के अंतर्गत साप्ताहिक रूप से निर्गत करने पर सभी प्रेक्षागृहों के लिए केवल 400 रंगीन प्रिंटों की जरूरत होती है।

1.4.10. प्रभाग ने हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश में हुए सद्भावना समारोहों में भाग लिया और स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, आर्थिक नीति, पेट्रोलियम पदार्थों की बचत, पंचायती राज एवं प्रजातंत्र आदि पर अपनी फिल्में दिखाईं।

फिल्म समारोह निदेशालय

1.5. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत फिल्म समारोह निदेशालय ने भारत में कई फिल्म सप्ताहों का आयोजन किया। निदेशालय ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत अथवा अन्य तरीके से विदेशों में भारतीय फिल्म सप्ताहों का आयोजन कर भारतीय फिल्मों को लोकप्रिय बनाने का अपना उद्देश्य प्राप्त किया। मई, 1993 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह आयोजित किया जिसमें पुरस्कृत फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष का दादा साहब फालके पुरस्कार पूर्वोत्तर की विख्यात फिल्मी हस्ती डा. भूपेन हजारिका को दिया गया। भारत का 25वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह सफलतापूर्वक 10-20 जनवरी, 1994 तक कलकत्ता में आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र

1.6. राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र का मुख्य उद्धेश्य बच्चों के लिए फिल्मों का

निर्माण, वितरण और प्रदर्शन करना है। केन्द्र ने 2 फीचर फिल्में तथा एक टी.वी. सीरियल पूरा किया। तीन फिल्मों को अन्य भारतीय भाषाओं में डब किया गया। आठवां बाल एवं युवा फिल्म समारोह 14-23 नवंबर 1993 तक उदयपुर में संपन्न हुआ जिसमें 39 देशों की 265 फिल्मों ने भाग लिया।

भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

1.7.1. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की स्थापना फरवरी, 1964 में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वतंत्र माध्यम इकाई के रूप में की गयी थी। इसे सिनेमा के विभिन्न रूपों और अभिव्यक्तियों के संरक्षण का दायित्व सौंपा गया है।

1.7.2. पहली जनवरी से 30 नवंबर, 1993 की अवधि में भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने 14 नई फिल्में, 41 फिल्मों की नकल प्रिंट, 61 नि:शुल्क जमा, 194 वीडियो कैसेट, 331 किताबें, 573 छाया चित्र, 309 गीत पुस्तिकाएं, 32 पैम्फलेट/फोल्डर, 6000 अखबारी कतरन, 275 दीवार-पोस्टर, 416 स्लाइड तथा 103 पूर्व-रिकार्डेड कैसेट प्राप्त की।

1.7.3. वर्ष के दौरान कुछ महत्वपूर्ण पुरानी भारतीय फिल्मों को नि:शुल्क भी जमा कराया गया। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण ए.आर.कारदार द्वारा जमा कराईं गईं 13 फिल्में तथा मेसर्स मोटवाने फिल्म्स प्रा.लि. द्वारा दान दिया गया स्वतंत्रता-पूर्व काल के समाचार-चित्रों और वृत्तचित्रों की 50 रीलें हैं।

1.7.4. संरक्षण कार्यक्रम के अंग के रूप में और कुछ मामलों में वितरण लायब्रेरी में इस्तेमाल के लिए 15 फीचर फिल्मों तथा 19 लघु फिल्मों की प्रतियां बनाई गई। विनिमय-आधार पर हंगरी फिल्म संस्थान एवं फिल्म अभिलेखागार से निकलस जांस्को की तीन हंगरी फिल्में तथा पोलस्की, वारसा के पोल निर्देशक क्रिज़न्तोफ किस्लावस्की की तीन हंगरी फिल्में हासिल की गईं।

1.7.5. इस अवधि में भारतीय सिनेमा पर पूरे किए गए शोध कार्य ये हैं: (1) आरंभिक वृत्तचित्र निर्माता एज़रा मीर पर एक फिल्म तथा (2) महत्वपूर्ण मराठी फिल्म निर्माता राजा परांजपे पर एक फिल्म।

1.7.6. फिल्म संस्कृति के प्रसार के अपने प्रयासों के तहत, राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार अपनी वितरण लायब्रेरी के द्वारा, देशभर में फैले 100 सक्रिय सदस्यों के बीच फिल्में वितरित करता है। यह भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान तथा अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के सहयोग से एक फिल्म शिक्षण कार्यक्रम भी चलाता है जिसमें लंबी तथा छोटी अवधि के फिल्म समीक्षा पाठ्यक्रम शामिल हैं। इस वर्ष पुणे में आयोजित पांच सप्ताह के एक पाठ्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों एवं व्यवसायों के 69 व्यक्तियों ने भाग लिया। मणि कौल, जब्बार वोरा, श्याम बेनेगल, के.हरिहरन, गोपी देसाई, गौतम वोरा तथा कल्पना लाजमी जैसे महत्वपूर्ण फिल्म निर्माताओं ने अपनी नवीनतम फिल्में प्रस्तुत की तथा भाग लेने वालों के साथ परिसंवाद किया। अन्य केन्द्रों पर कुछ अल्पकालिक पाठ्यक्रम भी आयोजित किए गए।

1.7.7. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने वर्ष के दौरान प्रदर्शन के लिए कई महत्वपूर्ण फिल्मों की आपूर्ति की। अगस्त में इटली के 12वें पोर्देनोन मूक फिल्म

समारोह में दादा साहब फालके की राजा हरिश्चन्द्र (1913) का प्रदर्शन किया गया। अक्तूबर, 1993 के दौरान नेहरू केंद्र पर श्रीमती एम.एस. सुब्बलक्ष्मी के 77 वें जन्मदिवस के सिलसिले में लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग को मीरा (1946) उधार दी गई। हमारे अभिलेखागार विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत हंगरी फिल्म संस्थान एवं फिल्म अभिलेखागार, बुडापेस्ट से तीन फिल्मों का विनिमय किया गया।

1.7.8. इस वर्ष अभिलेखागार ने अपने संग्रह में एक बहुत ही महत्वपूर्ण फिल्म प्राप्त की है। आंरभिक तमिल फिल्म निर्माता रघुपति एस. प्रकाश द्वारा निर्मित मूक फिल्म 'द कैटेसिस्ट ऑफ कील-अर्नी' आयरिश फिल्म संस्थान में पाई गई। आयरिश राष्ट्रापति के भारत के राजकीय दौरे के दौरान 27 सितंबर, 1993 को इस फिल्म की एक उपहार-प्रति सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंह देव को भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के लिए भेंट की गई। यह अब अभिलेखागार में उपलब्ध सबसे प्राचीन दक्षिण भारतीय फिल्म है।

1.7.9. इस अवधि में भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार में आने वालों में ब्रिटेन के फिल्म इतिहासकार श्री स्टीफन बॉटोमोर शामिल हैं।

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे

1.8.1. भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत एक अनुदान-प्राप्त स्वायत्तशासी संस्था है। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान फिल्म-निर्माण तथा टेलीविजन कार्यक्रम उत्पादन गतिविधियों के क्षेत्र में प्रशिक्षण देता है। संस्थान के मामलों का सामान्य निरीक्षण, निर्देशन, नियंत्रण तथा प्रशासन और इसकी संपत्ति एवं आय संस्थान की शासकीय परिषद के अंतर्गत आता है जिसमें अध्यक्ष (1), पदेन सदस्य (7), महत्वपूर्ण व्यक्ति/विशेषज्ञ (4), संस्थान के पूर्व छात्र (2) तथा निदेशक (1) शामिल हैं।

1.8.2. रिपोर्ट-वर्ष की अवधि में फिल्म खंड में 104 छात्र (इसमें 12 विदेशी शामिल हैं) प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। टेलीविजन खंड ने दूरदर्शन कर्मियों के लिए बुनियादी टेलीविजन निर्माण तथा तकनीकी संचालन में 38वां तथा 39वां सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया जिसमें दो दलों में 137 लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। टेलीविजन प्रशिक्षुओं के लिए 40वां पाठ्यक्रम जिसमें 80 लोग भाग ले रहे थे, 13 दिसंबर, 1993 को आरंभ हुआ। भारतीय सूचना सेवा के 20 परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए 11 अक्तूबर से 6 नवंबर 1993 तक एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन भी किया गया। फिल्म समीक्षा में एक महीने का एक पाठ्यक्रम भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान तथा भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। 25 मई से 27 जून, 1993 तक चले इस पाठ्यक्रम में 69 लोगों ने भाग लिया जिनमें छात्र, शिक्षाविद, पत्रकार तथा सरकारी कर्मचारी शामिल थे।

1.8.3. कलकत्ता स्थित सत्यजित राय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान का काम जिसे आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान क्रियान्वित किए जाने की स्वीकृति मिली थी, अपने कार्यक्रमानुसार प्रगति कर रहा है। इस परियोजना का दायित्व आकाशवाणी के सिविल निर्माण खंड को सौंपा गया है। इस कार्य के लिए 14 पदों के एक अलग विभाग की स्वीकृति दी गई है। 25 अक्तूबर, 1993 को भवन के लिए 11.35 करोड़ रुपये की

प्रशासकीय अनुमोदन/व्यय स्वीकृति दे दी गई है। भूमि-परिक्षण कार्य पूरा हो गया है और चहारदीवारी (फेज-I) का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

1.9.1. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम फिल्म संबंधी बड़ी विस्तृत गतिविधियां संभालता है, मसलन निर्माण, निर्यात एवं आयात तथा फिल्मों का वितरण, वीडियो कैसेट्स का विपणन और सिनेमाघरों के निर्माण के लिए वित्त प्रदान करना।

1.9.2. निगम और दूरदर्शन के मध्य हुए समझौते के अंतर्गत स्तरीय फिल्मों और टेली फिल्मों का संयुक्त रूप से निर्माण किया जा रहा है। अक्तूबर, 1993 तक इस योजना के अंतर्गत 30 फिल्में या तो पूरी की जा चुकी हैं अथवा निर्माणाधीन हैं।

1.9.3. अच्छी पटकथा पर आधारित तथा सुविख्यात निर्देशकों द्वारा निर्देशित फिल्मों का निर्माण-कार्य लेने की निगम की योजना के अंतर्गत स्वीकृत की गई 27 फिल्मों में से 26 का काम पूरा किया जा चुका है।

1.9.4. वर्तमान में निगम प्रतिवर्ष लगभग 30-40 फिल्मों का आयात करता है। इस वर्ष अक्तूबर, 1993 तक 12 फीचर फिल्मों, 11 वीडियो फिल्में और दूरदर्शन कार्यक्रमों के 105 एपिसोड आयात किये गए। निगम ने 57.12 लाख रुपये मूल्य की 82 फिल्मों का निर्यात किया।

1.9.5. वर्ष के दौरान (अक्तूबर, 1993 तक) निगम ने पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों के 75 सिनेमाघरों में छह भारतीय फिल्में रिलीज की।

1.9.6. निगम ने दूरदर्शन के मेट्रो चैनल पर 36 घंटे के शुरूआती समय से कम में प्रसारण आंरभ कर दिया। इस चैनल पर प्रसारित सफल और महत्वपूर्ण सीरियलों/कार्यक्रमों में से कुछ 'सुपरहिट मुकाबला', 'जबान संभाल के', 'देख भाई देख', 'डम डमा डम डम', 'जंगल बुक', 'फुलवारी बच्चों की', 'मालगुड़ी डेज़' आदि थे। वर्ष के दौरान (अक्तूबर, 1993 तक) निगम ने मैट्रो चैनल से 400 लाख रुपये से ज्यादा का सकल राजस्व अर्जित किया।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

1.10.1. भारत में फिल्में केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड से प्रमाणित होने के बाद ही सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित की जा सकती है। इसका गठन सिनेमेटोग्राफी अधिनियम, 1952 के अंतर्गत किया गया था। इस बोर्ड में एक अध्यक्ष तथा 25 अन्य सदस्य होते हैं। इसका मुख्यालय बंबई में है तथा बंगलौर, बंबई, कलकत्ता, कटक, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद, मद्रास और तिरूअनंतपुरम में नौ क्षेत्रीय कार्यालय हैं।

1.10.2. 1993 में बोर्ड ने कुल 2,888 प्रमाण-पत्र जारी किए। बोर्ड द्वारा प्रमाणित 812 भारतीय फीचर फिल्मों (सेल्यूलाइड) में से 607 को 'यू' प्रमाण-पत्र (74.75%), 80 को 'यू' 'ए' प्रमाण-पत्र (9.85%) तथा 125 को 'ए' प्रमाण-पत्र (15.40%) दिया गया, 174 विदेशी फीचर फिल्मों (सेल्यूलाइड) को प्रमाण-पत्र दिया गया, जिनमें 32 को 'यू' प्रमाण-पत्र (18.39%), 22 को 'यू' 'ए' प्रमाण-पत्र (12.65%) 120 को 'ए' प्रमाण-पत्र (68.96%) दिया गया।

1.10.3. वर्ष के दौरान 7 भारतीय फीचर फिल्मों और 16 विदेशी फीचर फिल्मों को

प्रमाण-पत्र देने से इंकार कर दिया गया क्योंकि उनसे प्रमाणीकरण के एक अथवा एकाधिक दिशा-निर्देशों का उल्लंघन होता था। इनमें कुछ फिल्मों को या तो बाद में परिवर्तित संस्करण पर प्रमाण-पत्र दे दिया गया, या उन्हें फिल्म प्रमाणन अपील ट्रिब्यूनल द्वारा प्रमाणित कर दिया गया।

1.10.4. इस अवधि में दिशा-निर्देशों का उल्लंघन के कारण सेल्यूलाइड फिल्मों से हटाए गए कुल अंश की लम्बाई 14,602.27 मीटर है। हटाए गए अंशों में मुख्यत: रक्तपात, बेमतलब और लक्ष्यहीन हिंसा, छेड़छाड़, बलात्कार आदि के दृश्य शामिल थे।

पत्र सूचना कार्यालय

1.11.1. वर्ष के दौरान पत्र सूचना कार्यालय ने आर्थिक सुधारों से प्राप्त, अनुकूल परिणामों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। इसने आर्थिक सर्वेक्षण तथा 1993-94 के बजट में किए नये उपायों का प्रचार-प्रसार भी किया। अयोध्या पैकेज, जम्मू-कश्मीर की स्थिति, पंजाब में सामान्य स्थिति बहाल होने, झारखंड समस्या के समाधान के लिए किए गए प्रयासों, सरदार सरोवर परियोजना के क्रियान्वयन, अन्य पिछड़ी जातियों के लिए 27 प्रतिशत नौकरियों के आरक्षण का क्रियान्वयन, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत बनाने तथा उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, मुख्यमंत्रियों द्वारा अनुमोदित कृषि नीति के साथ-साथ चुनाव आयोग एवं संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट को भी प्रचारित किया गया।

1.11.2. वर्ष के दौरान पत्र सूचना कार्यालय ने विभिन्न विषयों पर 894 संवाददाता सम्मेलन आयोजित किए, 35,049 प्रेस विज्ञप्तियां जारी कीं तथा 1,775 समाचार चित्रों की 2,75,546 प्रतियां उपलब्ध कराई। विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को समाचार-पत्रों की लगभग आठ लाख कतरनें भेजी गईं।

1.11.3. 'सबके लिए शिक्षा' विषय पर दिसंबर, 1993 में हुए नौ देशों के सम्मेलन तथा सम्मेलन-पूर्व बैठकों को बड़ी संख्या में संवाददाता सम्मेलन तथा संवाददाता सूचना द्वारा व्यापक प्रचार दिया गया। इसमें सभी नौ देशों के नेताओं द्वारा संबोधित किया गया संयुक्त संवाददाता सम्मेलन भी शामिल है। दूरदर्शन पर उपग्रह चैनलों की शुरूआत पर बहु-माध्यम प्रचार भी आयोजित किया गया।

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक

1.12.1. अप्रैल-अक्तूबर, 1993 के दौरान भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक के कार्यालय ने प्रस्तावित समाचार पत्र/पत्रिकाओं के 10,510 आवेदनों का निष्पादन किया। इसी अवधि में 870 समाचार पत्रों को पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी किया गया। अप्रैल-अक्तूबर, 1993 के दौरान 292 समाचार-पत्रों के प्रसार संख्या की भी जांच की गई।

1.12.2. वर्ष 1993-94 के लिये अखबारी कागज की आयात नीति की घोषणा तथा उसके आयात पर 1 अप्रैल, 1992 से नियंत्रण समाप्त होने की अधिसूचना जारी होने के बाद समाचार पत्रों को अधिकार प्रमाण-पत्र जारी करने के संबंध में 4 मई, 1993 को दिशा-निर्देश जारी किए गए। अक्तूबर 1993 तक 157 व्यक्तियों को चिकने अखबारी कागज का कोटा तथा 352 समाचार पत्र-पत्रिकाओं को जिनको वार्षिक 200 मीट्रिक टन स्टैंडर्ड अखबारी कागज से अधिक मिलता था, कागज खरीदने के प्रमाण पत्र जारी किए गए। उन

समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं को जिनका वार्षिक अधिकार 200 मीट्रिक टन तक था, 85,737.49 मीट्रिक टन से ज्यादा मात्रा में आयातित स्टैंडर्ड अखबारी कागज आबंटित किया गया। नए आवेदकों को अक्तूबर, 1993 तक 10,126.30 मीट्रिक टन देशी अखबारी कागज का आबंटन किया गया।

प्रकाशन विभाग

1.13.1. प्रकाशन विभाग ने बाबा साहेब डा. बी.आर. अम्बेडकर संपूर्ण वांगमय का पहला खंड हिन्दी, तमिल और गुजराती में प्रकाशित किया। माननीय प्रधानमंत्री ने 12 अप्रैल, 1993 को इनका विमोचन किया। इसके अतिरिक्त विभाग ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा 1943 में प्रांतीय सरकार के गठन की स्वर्ण-जयंती के अवसर पर 'चैलेंज टू द एंपायर-ए स्टडी ऑफ नेताजी' शीर्षक पुस्तक भी प्रकाशित की। विभाग ने आर. वेंकटरमण के भाषण (राष्ट्रपति के रूप में) का तीसरा खंड भी प्रकाशित किया।

1.13.2. विभाग ने अपनी विभिन्न पत्रिकाओं का प्रकाशन जारी रखा और इस वर्ष योजना का उड़िया संस्करण आरम्भ किया। इन पत्रिकाओं ने सरकार के गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य सेवाओं की व्यवस्था, 20-सूत्री कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाले क्रियाकलापों का सशक्त क्रियान्वयन, विद्यालयों में व्यवसायोन्मुख शिक्षा की शुरूआत तथा पंचायती राज जैसे कार्यक्रमों पर ध्यान केन्द्रित किया।

1.13.3. विभाग ने वर्ष के दौरान विभिन्न राज्यों में सांप्रदायिक सद्भाव पर आयोजित बहु-माध्यम प्रचार अभियान में कई प्रदर्शनियों में भाग लिया। देश के विभिन्न भागों में बडी संख्या में आयोजित पुस्तक मेलों में भी इसने भाग लिया।

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय

1.14.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय देश भर में समाज के सभी वर्गों में सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों का प्रचार करता है। यह प्रचार कार्य हिन्दी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में मुद्रण माध्यमों, प्रेस विज्ञापनों, दृश्य-श्रव्य माध्यमों, बाह्य प्रचार तथा बाल विकास के जरिए किया जाता है।

1.14.2. अप्रैल-दिसंबर, 1993 के दौरान निदेशालय ने नए आर्थिक उपाय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास, साक्षरता, मादक द्रव्यों का कुप्रभाव एवं निषेध, पर्यावरण संरक्षण, 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की स्वर्ण-जयंती, सद्भावना समारोह तथा महिला एवं बाल कल्याण जैसे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक विषयों पर प्रचार अभियान चलाया।

1.14.3. हिन्दी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में 600 प्रकाशनों की लगभग 1.79 करोड़ प्रतियां मुद्रित की गई। सामाजिक-आर्थिक विषयों पर लगभग 16,260 प्रेस विज्ञापन (14,970 वर्गीकृत एवं 1,290 डिस्प्ले) समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को जारी किए गए।

1.14.4. दृश्य-श्रव्य प्रचार के संदर्भ में 2,150 रेडियो तथा 115 वीडियो विज्ञापन तैयार किए गए जिनके क्रमशः 32,650 रेडियो तथा 500 टी.वी. प्रसारण हुए। बाह्य प्रचार माध्यम के द्वारा लगभग 340 होर्डिंग, 5,670 बस पैनल, 3,130 कियोस्क, 38,440 सिनेमा स्लाइड, 855 बैनर तथा अन्य विविध प्रचार सामग्री तैयार और प्रदर्शित की गई।

1.14.5. निदेशालय के 7 वाहनों सहित 35 क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयों ने लगभग 475 प्रदर्शनियां लगाई जो 2,000 प्रदर्शनी दिवसों तक चलीं।

1.14.6. निदेशालय ने दिसंबर, 1993 में चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान मारिशस में एक प्रतिष्ठित प्रदर्शनी लगाई। प्रदर्शनी का उद्घाटन मारिशस के राष्ट्रपति ने किया। इसने सातवीं शताब्दी से हिन्दी के विकास पर प्रकाश डाला। हिन्दी की 3,000 से ज्यादा चुनिंदा पुस्तकें भी प्रदर्शनी में प्रदर्शित की गई थीं। प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में लोग आए जिनमें मारिशस के लगभग 2 लाख हिन्दी जानने वाले तथा विद्वान शामिल हैं।

1.14.7. देश भर में स्वतंत्रता-आंदोलन तथा 'भारत छोड़ो आंदोलन' सांप्रदायिक सद्भाव तथा नए आर्थिक उपायों पर विशेष प्रचार अभियान चलाए गए।

1.14.8. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए प्रगति-मैदान में भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला, 1993 में 'छोटा परिवार खुशियां अपार'-शीर्षक से एक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी को 'एक्सेलेंस ऑफ डिस्पले' पुरस्कार प्रदान किया गया।

1.14.9. 'हसीन लम्हें' शीर्षक से परिवार-कल्याण पर 10 मिनट के एक प्रायोजित कार्यक्रम को रेडियो एवं टी.वी. कर्मी संघ, बंबई ने एक पुरस्कार प्रदान किया।

1.14.10. निदेशालय द्वारा तैयार की गई मुद्रित प्रचार सामग्री की 1.5 लाख प्रतियां वितरित की गई। निदेशालय के पास लगभग 15.5 लाख पतों वाली एक प्रेषण सूची और 530 से ज्यादा वर्ग हैं जिसमें ग्रामीण बैंक, पंचायतें, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संगठन, सामाजिक संगठन तथा स्थानीय स्वशासन के प्रशासनिक कार्यालय शामिल हैं।

गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग

1.15.1. गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, इसकी माध्यम इकाइयों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए सूचना प्रदान करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करता है। प्रभाग विभिन्न माध्यम इकाइयों के प्रचार अभियानों तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए एक सूचना बैंक तथा सूचना फीडर सेवा की तरह कार्य करता है। प्रभाग जनसंचार माध्यमों की प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है तथा साथ ही वर्तमान घटनाक्रम और जनसंचार के बारे में ताजा संदर्भ तथा प्रलेखन सेवा जुटाता है।

1.15.2. इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रभाग विभिन्न प्रकार की सूचना सामग्री तैयार करता है जैसे 'बैकग्राउंडर टू द न्यूज' जनमहत्व के विषयों पर संदर्भ-पत्र, प्रमुख भारतीयों का जीवन परिचय, प्रमुख राष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी देने वाली, 'डायरी ऑफ इवेन्ट्स,' दो वार्षिक संदर्भ ग्रंथों-'इंडिया' तथा 'मास मीडिया इन इंडिया' का संकलन। प्रभाग की प्रलेखन सेवाएं राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र द्वारा की जाती हैं जो प्रभाग का एक अभिन्न अंग हैं।

1.15.3. वर्ष की मुख्य झलकी प्रभाग द्वारा भारत में उपग्रह एवं केबल टेलीविजन के प्रभाव पर किया गया 'आकाशीय आक्रमण तथा जमीनी यथार्थ' शीर्षक अध्ययन रहा, जिसे उत्साहवर्द्धक तरीके से लिया गया।

फोटो प्रभाग

1.16. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के तहत फोटो प्रभाग देश में फोटोग्राफी के क्षेत्र में

अपनी तरह की सबसे बड़ी उत्पादन इकाई है। प्रभाग भारत सरकार की ओर से आंतरिक तथा बाह्य प्रचार के लिए श्वेत-श्याम और रंगीन, दोनों ही तरह के फोटो बनाने के लिए उत्तरदायी हैं। अप्रैल-नवंबर, 1993 के दौरान प्रभाग ने विभिन्न कार्यक्रमों/घटनाओं के लगभग 2,586 श्वेत-श्याम और रंगीन फोटो का कार्यभार निबटाया और विभिन्न माध्यम इकाइयों, केन्द्रीय/प्रांतीय सरकार/विभागों की प्रचार आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें फोटो की आपूर्ति की।

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

1.17.1. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से एक माध्यम इकाई के रूप में संबद्ध क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की स्थापना 1953 में, आरंभ में 32 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों तथा उनके कार्यों के नियंत्रण और निरीक्षण के लिए चार प्रादेशिक कार्यालयों से की गई थी। इसकी संरचना एकीकृत प्रचार कार्यक्रम के तहत की गई थी जिसे 'पंच वर्षीय योजना प्रचार संगठन' के रूप में जाना जाता था। तब यह संगठन सीधे सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन काम करता था। बाद में दिसंबर 1959 में क्षेत्रीय इकाइयों की गतिविधियों की देखरेख के लिए एक पूर्ण निदेशालय का गठन किया गया और इसका नाम 'क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय' रखा गया।

1.17.2. 1982 में क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों की संख्या बढ़कर 257 तथा प्रादेशिक कार्यालयों की संख्या 22 हो गई। 1993 में उड़ीसा में (ढेंकनाल में) एक नई इकाई खोली गई। वर्तमान 258 इकाइयों में से 156 सामान्य इकाइयां, 12 सीमा यूनिट तथा 30 परिवार कल्याण इकाइयां हैं।

1.17.3. इस वर्ष निदेशालय ने उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, तथा तमिलनाडु में लोगों में सांप्रदायिक सद्भाव की भावना मजबूत करने के उद्देश्य से सद्भावना समारोह आयोजित किए।

गीत एवं नाटक प्रभाग

1.18.1. गीत एवं नाटक प्रभाग नई आर्थिक नीति, तथा आर्थिक उदारीकरण, परिवर्द्धित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, मादक पदार्थों का सेवन रोकने तथा ग्रामीण एवं सामाजिक विकास जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषयों जिसमें सरकार द्वारा शुरू किए महत्वपूर्ण नीतिगत उपाय शामिल है, का प्रसार करता है। अप्रैल-दिसंबर, 1993 के दौरान प्रभाग ने देश भर में 24,000 से ज्यादा कार्यक्रम आयोजित किए। इसने पंजाब, जम्मू-कश्मीर तथा असम के संवेदनशील इलाकों में प्रभावशाली ढंग से अपने कार्यक्रम आयोजित करने का अभियान चलाया।

1.18.2. इस वर्ष प्रभाग ने ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों, विशेषकर जिन क्षेत्रों में इलेक्ट्रोनिक माध्यमों की पहुंच नहीं हैं, पारंपरिक तथा लोक संस्कृति का उपयोग करते हुए बड़ी संख्या में कार्यक्रम आयोजित करने तथा महत्वपूर्ण विषयों पर संदेश पहुचाने पर जोर दिया। उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश तथा कर्नाटक में सद्भावना समारोह आयोजित किए गए। गीत एवं नाटक प्रभाग सीमाई जिलों तथा गड़बड़ी वाले इलाकों में अधिक से अधिक कलाकारों की स्थानीय तथा अन्य पंजीकृत निजी मंडलियों का उपयोग कर रहा है। इस मामले में विभिन्न सरकारी विभागों तथा रक्षा बलों

के साथ प्रभावशाली सहयोग किया गया। पूर्वोत्तर क्षेत्र में सांप्रदायिक सद्भाव तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम तथा प्रचार अभियान चलाए गए।

1.18.3. अंतरराष्ट्रीय मद्य निषेध दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध नर्तक श्री आनंद प्रकाश ने मद्य निषेध पर 'टेंपटेशन' शीर्षक से एक कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रभाग के साथ सहयोग किया। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सहयोग से 10-19 दिसंबर, 1993 तक लखनऊ में नुक्कड़ नाटक पर एक दस-दिवसीय प्रशिक्षण तथा कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रभाग ने केन्द्र तथा राज्य सरकारों की विभिन्न एजेंसियों, सेना, अर्द्धसैनिक बलों तथा स्वैच्छिक संगठनों को तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया।

भारतीय जनसंचार संस्थान

1.19. भारतीय जनसंचार संस्थान ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रम और चार डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किए। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए कई पाठ्यक्रम आयोजित किए। कुल मिलाकर संस्थान ने वर्षभर में 400 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण दिया। 14 अगस्त, 1993 को संस्थान ने ढेंकनाल उड़ीसा में अपनी पहली शाखा का शुभारंभ किया तथा वहां 16 अगस्त, 1993 को पत्रकारिता में दो स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की शुरूआत की।

गुटनिरपेक्ष देशों का समाचार एजेंसी पूल

1.20.1. गुटनिरपेक्ष देशों का समाचार एजेंसी पूल, गुटनिरपेक्ष देशों की समाचार एजेंसियों में परस्पर सहयोग और समन्वय पर आधारित समाचारों के आदान-प्रदान की एक व्यवस्था है। पूल की स्थापना 1976 में गुट-निरपेक्ष देशों में सूचना के स्वतंत्र, सीधे और शीघ्र प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। पूल के कार्यकलापों के मूल्यांकन और मानीटरिंग के लिए एक समन्वय समिति है जिसका चुनाव सहयोगी एजेंसियों में से किया जाता है। भारत प्रारंभ से ही इस पूल का सदस्य है, और प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पी.टी.आई.) इस समाचार पूल डेस्क का देश में संचालन करती है।

1.20.2. इसमें भाग लेने वाली प्रत्येक समाचार एजेंसी पूल में अपने समाचार देती है तथा समाचारों की गुणवत्ता के आधार पर उनके वितरण के लिए इसमें से समाचार लेती है। वर्ष के दौरान पी.टी.आई. ने इस पूल में औसतन प्रतिदिन 10,000 शब्दों का योग दिया तथा दूसरी समाचार एजेंसियों के लगभग 22,000 शब्द लिए। पूल अपने यहां प्राप्त होने वाले समाचारों का लगभग 15 प्रतिशत भारतीय माध्यमों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप दे देता है। अग्रणी राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रों ने एक महीने में लगभग 70 पूल-सामग्री प्रकाशित की। पी.टी.आई. ने पूल को आर्थिक तथा पर्यावरण संबंधी सामग्री का योगदान बढ़ा दिया है।

1.20.3. 'इरना' (ईरान की समाचार एजेंसी) के अध्यक्ष श्री फेरिडाउन वेर्डीनेज़ाद ने जुलाई, 1993 में भारत का दौरा किया और इस दौरान पी.टी.आई. के प्रतिनिधियों तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंह देव और विदेश राज्यमंत्री श्री सलमान खुर्शीद से बातचीत की।

1.20.4. बहरीन में मई, 1993 में हुए पूल की समन्वय समिति की 17वीं बैठक में

पी.टी.आई. के एक प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। बैठक में पूल की ट्रांसमीशन प्रणाली को नवीनतम दूर-संचार तथा उपग्रह तकनीक के आधार पर सुदृढ़ करने की संभावनाओं का अध्ययन करने के लिए एक तकनीकी विशेषज्ञ दल की नियुक्ति की गई। पी.टी.आई. इसका एक सदस्य है।

1.20.5. भारतीय जनसंचार संस्थान ने विभिन्न गुटनिरपेक्ष देशों की समाचार एजेंसियों से आने वाले पत्रकारों को प्रशिक्षण देना जारी रखा।

विविध

1.21.1. मंत्रालय ने 16 अप्रैल, 1993 को श्री यू.सी. अग्रवाल (अवकाश-प्राप्त सचिव, कार्मिक विभाग) की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया। यह समिति माध्यम इकाइयों की सभी सेवाओं और काडरों तथा मंत्रालय के संगठनों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करके सुधार के उपाय सुझाएगी जिसमें सेवाओं, काडरों, विभिन्न कार्य दलों तथा अलग-थलग पड़े पदों का पुनर्गठन इस प्रकार करने के सुझाव देंगे, जिससे कि बेहतर काडर प्रबंध किया जा सके, अधिकारियों और कर्मचारियों में व्यावसायिक सोच उत्पन्न करने के लिए ठोस प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने, अधिकारों के उचित विभाजन तथा अन्य परिवर्तन ताकि व्यवस्था की कुशल कार्यशैली सुनिश्चित की जा सके तथा सभी माध्यम इकाइयों/संगठनों में अधिकतम कुशलता तथा बेहतर प्रबंध प्रणाली प्राप्त की जा सके।

1.21.2. समिति ने सरकार को अपनी रिपोर्ट 16 नवंबर, 1993 को सौंप दी। रिपोर्ट की मुख्य विशेषताओं में सेवाओं और काडरों से जुड़े मामले तथा इसकी विभिन्न माध्यम इकाइयों को पुनर्गठित करने, कार्मिकों के प्रशिक्षण और शासकीय तथा वित्तीय अधिकारों के विभाजन शामिल हैं। समिति के कुछ सुझाव लागू कर दिए गए हैं, बाकी सरकार द्वारा उचित कारवाई किए जाने की प्रक्रिया में हैं।

President Honouring Dr. Bhupen Hazarika with Dada Sahib Phalke Award.

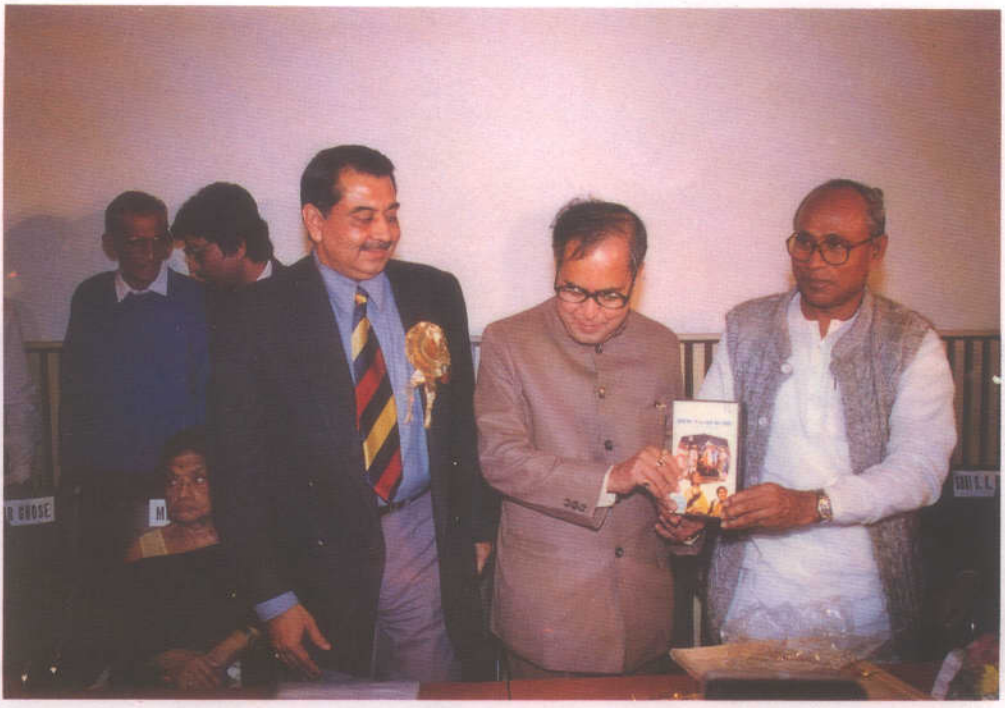

Release of video cassette of Satyajit Ray's film 'Goopi Gayan Bagha Bayari' at Nandan, Calcutta, by Shri Pranab Mukherjee, January 11,1994. Shri K.P. Singh Deo, Minister of State for Information & Broadcasting is also seen in the picture.

Shri K.P. Singh Deo, Minister of State for Information & Broadcasting addressing the inaugural function of IFFI-94 at Nazrul Manch, Calcutta, January 10,1994.

Inauguration of Main Stream Indian Cinema Section in Chaplin, Calcutta, January 11, 1994.

Inauguration of 25th International film festival of India, Rabindra Sarovar Calcutta, January 10, 1994.

Shri K.P. Singh Deo, Minister of State for Information & Broadcasting at a Function of IFFI-94, Calcutta, January 10,1994.

Noted Film Director, Shri Tapan Sinha lighting the Lamp to mark the inaugural ceremony of the 25th IFFI 1994, Rabindra Sarovar, Calcutta January 10, 1994.

अध्याय 2

योजना निष्पादन

2.1.1. मंत्रालय और इसकी जनसंचार इकाइयों का मुख्य उद्देश्य सरकार की नीतियों और कार्यक्रम संबंधी सूचना का व्यापक प्रचार-प्रसार करना और लोगों को राष्ट्र के समग्र विकास में भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। मंत्रालय के अधीन ये इकाइयां इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आपसी संवाद के पारंपरिक और लोक कला माध्यमों का इस्तेमाल करती हैं और साथ ही अपने जन-संचार के अति आधुनिक इलैक्ट्रानिक माध्यमों का भी उपयोग करती हैं। संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने और विशेषकर सीमावर्ती और संवेदनशील क्षेत्रों में मीडिया इकाइयों की पहुंच को व्यापक बनाने के लिए मंत्रालय के योजना कार्यक्रमों में वर्तमान सुविधाओं को सुदृढ़ तथा विस्तृत बनाने पर ध्यान दिया गया है।

2.1.2. योजना आयोग ने आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97) के लिए 3,634 करोड़ रूपये के प्रावधान को स्वीकृति दी है। आठवीं पंचवर्षीय योजना और वार्षिक योजना का क्षेत्रवार विवरण इस प्रकार है:-

(करोड़ रुपये में)

क्षेत्र	प्रावधान आठवीं पंचवर्षीय योजना 1992-97	प्रावधान 1993-94	व्यय (सं.अ.) 1993-94
दूरदर्शन	2300.00	170.00	172.69
आकाशवाणी	1134.95	203.00	155.78
सूचना माध्यम	75.40	10.36	6.28
फिल्म माध्यम	123.65	21.64	14.33
योग	3634.00	405.00	349.08

2.1.3. 1993-94 के दौरान प्रचार माध्यमों के योजना कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की उपलब्धियों का विवरण निम्नलिखित है:-

दूरदर्शन

2.2.1. वर्ष 1993-94 के दौरान 'इन्सैट-2बी' के सफल प्रक्षेपण से दूरदर्शन के लिए अतिरिक्त टी.वी. कार्यक्रम प्रसारित करना संभव हो सका, जिन्हें डिश एंटना की मदद से देश भर में देखा जा सकता है। 15 अगस्त 1993 को मनोरंजन चैनल के अलावा 4 अतिरिक्त चैनल आरंभ किए गए। ये चैनल संगीत, खेलकूद, एनरिचमेंट और व्यापार समाचार व सामयिक कार्यक्रमों के लिए थे। मनोरंजन चैनल द्वारा दोपहर का प्रसारण भी आरंभ करने का उद्देश्य यह था कि शहरों और छोटे कस्बों के केबल आपरेटर अपनी पसंद के उपग्रह चैनल (चैनलों) के कार्यक्रम रिले कर सकें।

2.2.2. दूरदर्शन ने प्रायोगिक आधार पर 1 अक्तूबर, 1993 से उपग्रह क्षेत्रीय भाषा सेवा शुरू की। इस सेवा के प्रसारण दूरदर्शन के चार उपग्रह चैनलों पर सोमवार से शुक्रवार तक शुरूआत में दोपहर में ढाई-ढाई घंटों के लिए शुरू किए गए। ये कार्यक्रम असमिया तथा

अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, तमिल और तेलुगू भाषाओं में प्रसारित किए जाते हैं। प्रारंभ में इन टी.वी. चैनलों के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रमों के कैप्सूल सम्बद्ध दूरदर्शन केन्द्रों द्वारा दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र को उपलब्ध कराए जाएंगे, जहां से इन्हें उपग्रह से अपलिंक करके प्रसारित किया जाएगा। इस सेवा के कार्यक्रमों को दिल्ली में भूस्थित सुविधाओं से प्रसारित किया जाता है।

2.2.3. इन्सैट-2बी उपग्रह द्वारा परिचालन आरंभ होने के दो दिनों के भीतर उपग्रह चैनल सेवा का आरंभ दूरदर्शन के इंजीनियरों के अथक और गंभीर प्रयासों के कारण ही संभव हो सका। इसके अतिरिक्त उपग्रह आधारित क्षेत्रीय सेवाएं केरल और उत्तर प्रदेश में आरंभ की गई हैं तथा जयपुर और भोपाल में उपग्रह अपलिंक सेवा प्रारंभ की गई। पूर्वोक्त उपग्रह चैनलों से राज्यों की क्षेत्रीय सेवाओं के कार्यक्रमों का प्रसारण भी 2 अक्तूबर, 1993 से आरंभ हो गया है।

2.2.4. संसद की कार्यवाही के प्रसारण के लिए कार्यक्रम निर्माण सुविधाएं (अंतरिम व्यवस्था) संसद भवन में चालू कर दी गई है। अभी तक यह प्रसारण ओ.बी. वैनों द्वारा किया जाता था।

2.2.5. दूरदर्शन ने नवम्बर, 1993 में हुए विधानसभा चुनावों की कवरेज के लिए व्यापक प्रबंध किए। चुनाव विश्लेषण की विशेषता टेलीकान्फरेंसिंग का सीधा प्रसारण थी, जिसके दिल्ली स्टूडियो और विभिन्न राज्यों के बीच सीधे प्रसारण की व्यवस्था की गई। उपकरणों की इस सफलता का श्रेय जनशक्ति और उपकरण संसाधनों के नियोजित संचालन को जाता है। संचार संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हॉटलाइनों और एक्सचेंज टेलिफोनों का एक व्यापक संचार ढांचा स्थापित किया गया।

2.2.6. पहली अप्रैल, 1993 से 6 जनवरी 94 के बीच डिब्रूगढ़, सिलचर, इम्फाल, शिलांग और तुरा में स्टुडियो-केन्द्र स्थापित किए गए तथा जम्मू में कार्यक्रम निर्माण सुविधा केन्द्र तथा गुवाहाटी में कार्यक्रम निर्माण एवं फीडिंग केन्द्र खोले गए। टेलीविजन कार्यक्रमों की पहुंच का दायरा बढ़ाने के लिए बूंदी और भुज में उच्चशक्ति वाले ट्रांसमीटर (1 किलोवाट की अंतरिम स्थापना) और झाड़ग्राम, पुरूलिया, गढ़वाल, जगतियाल, गोलाघाट, रसरा, खामगांव, गिड्डालूर, ढेंकनाल, बागलकोट, सिद्दीपेट, कामाख्यानगर, देवगढ़, नौरंगपुर, पद्मपुरम, पदमपुर, विलियमनगर और अत्माकुर में 18 कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर तथा झलदा और एगरा में 2 अत्यंत कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर लगाए गए हैं। जबलपुर टी.वी. ट्रांसमीटर की शक्ति को एक किलोवाट से बढ़ाकर 10 किलोवाट किया गया है। उपग्रह चैनल कार्यक्रमों के रिले के लिए दिल्ली में चार ट्रांसमीटर और मेट्रो चैनल के कार्यक्रमों के रिले के लिए लखनऊ और हैदराबाद में एक-एक ट्रांसमीटर चालू किया गया है। गंगटोक (एक किलोवाट), जैसलमेर (10 किलोवाट), शिमला (एक किलोवाट) और कालीकट (1 किलोवाट अंतरिम स्थापना) में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर की स्थापना का काम पूरा हो गया है। इसके अतिरिक्त श्रीडूंगरगढ़, गंगापुर, रियासी, बोंगईगांव, उत्तरी-लखीमपुर, गोड्डा, पावगड़ा, राजापालयम, हाफलांग, हजारीबाग, लोहारडागा, सुजानगढ़, हिन्दुपुर, अल्लागड्डा, गंगावाटी, मांड्या, कुप्पम, तंदुर, चम्पावत, मोहम्मदाबाद, सिकंदरपुर, भीमावरम, आर्काट, औरंगाबाद, खम्बात, हिंगनघाट में कम शक्ति के 26 ट्रांसमीटर और देवगढ़ तथा कुम्भलगढ़ में एक-एक अत्यंत कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर तकनीकी दृष्टि से चालू किए जाने के लिए तैयार हैं।

2.2.7. आशा है कि 31 मार्च 1994 तक कुछ टी.वी. परियोजनाओं का काम पूरा हो जाएगा। इनमें आइजोल और इटानगर में नए स्टूडियो केन्द्र, मद्रास में दूसरे चैनल के स्टूडियो और लगभग 17 कम व अत्यंत कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर और मध्यप्रदेश तथा राजस्थान में उपग्रह आधारित क्षेत्रीय सेवाओं की शुरूआत शामिल है।

आकाशवाणी

2.3.1. 15 नवम्बर, 1993 तक आकाशवाणी ने फैजाबाद, बरेली, झांसी, ओबरा, बरहामपुर, डाल्टनगंज, गुना, सागर, मरकापुरम, रायचूर और मरकारा में नए प्रसारण केन्द्र चालू किए हैं।

2.3.2. वर्ष के दौरान चालू की गई अन्य परियोजनाओं में दिल्ली में स्टीरियो ट्रांसमीटर, वाराणसी में 1 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, जेपोर में 100 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर शामिल है।

2.3.3. हमीरपुर, जैसलमेर, कुल्लू (रिले), नौगांव, धुले, नासिक, अकोला, करईकल, कारवाड़ और तूतीकोरिन में प्रसारण केन्द्रों का निर्माण पूरा हो गया है तथा वे चालू किए जाने के लिए तैयार हैं।

2.3.4. जम्मू में 3 किलोवाट का एफ.एम. ट्रांसमीटर, जयपुर में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, बीकानेर में 20 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, पासीघाट में बहु-उद्देशीय स्टूडियो, कलकत्ता में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, परभनी में टाइप I (आर) का स्टूडियो, भोपाल में 50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर, पणजी में 250-250 किलोवाट के दो शार्टवेव ट्रांसमीटर, तिरुअनंतपुरम में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, मद्रास में 10-10 किलोवाट के 2 मीडियम वेव ट्रांसमीटर और हैदराबाद में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, कुछ ऐसी परियोजनाएं हैं जो चालू किए जाने के लिए तैयार हैं।

2.3.5. मार्च 1994 तक जिन प्रसारण केन्द्रों के तकनीकी दृष्टि से पूरे हो जाने की आशा हैं, वे धर्मशाला, भदरवाह, पुंछ, उत्तरकाशी (रिले), मसूरी (रिले), लुंगलेह, राउरकेला, दमन, उस्मानाबाद, ऊटकमंड, इडुक्की और कावारत्ती में हैं।

2.3.6. शिमला में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, श्रीनगर में 10 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, पासीघाट में 10 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, इम्फाल में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, श्रेणी-I (आर) स्टूडियो, इटानगर में 100 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, तेजू में कई बहु-उद्देशीय स्टूडियो, गुवाहाटी में अतिरिक्त स्टूडियो, गंगटोक में 10 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, इटानगर में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, कलकत्ता में 10-10 किलोवाट के दो ट्रांसमीटर, जबलपुर में टाइप-I (आर) स्टूडियो, बम्बई में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, भोपाल में 10 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, पणजी में टाइप-III (आर) स्टूडियो, मद्रास में 50 किलोवाट का शार्टवेव ट्रांसमीटर, त्रिचूर में 100 किलोवाट का मीडियम वेव ट्रांसमीटर, बंगलौर में 500-500 किलोवाट के 4 शार्टवेव ट्रांसमीटर और त्रिचिरापल्ली तथा जलंधर के स्टूडियो को पुन: सज्जित करना, कुछ ऐसी परियोजनाएं हैं, जिनके मार्च 1994 तक तैयार होने की आशा है।

सूचना माध्यम

2.4.1. सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों से सम्बन्धित सूचना के प्रसार के लिए अपने ढांचे में सुधार करना पत्र सूचना कार्यालय का प्रमुख ध्येय रहा है। 1993-94 के दौरान क्षेत्रीय कार्यालयों में फैक्स मशीनों की स्थापना के जरिए समाचार-महत्व के प्रलेखों के त्वरित सम्प्रेषण की व्यवस्था की गई। जहां तक कम्प्यूटरीकरण का प्रश्न है, सभी क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ उपग्रह के माध्यम से कम्प्यूटर सम्पर्क स्थापित कर लिए गए हैं तथा संवादों के सम्प्रेषण/प्राप्ति के जरिए सफल परीक्षण किए जा चुके हैं। राज्यों की राजधानियों में स्थित शाखा कार्यालयों में कम्प्यूटर उपकरणों की स्थापना के प्रयास जारी हैं। आशा है कि मार्च 1994 तक लखनऊ, हैदराबाद और गुवाहाटी में स्थित पत्र सूचना कार्यालय के 3 क्षेत्रीय कार्यालय टेलीफोटो रिसीवर/उपकरणों से सज्जित हो जाएंगे। भुवनेश्वर में 2 अक्टूबर, 1993 से पत्र सूचना कार्यालय के शिविर कार्यालय ने काम शुरू कर दिया है। देश के दूरस्थ और पिछड़े इलाकों में पत्रकारिता को बढ़ावा देने की पत्र सूचना कार्यालय की नीति के तहत नांदेड़ में एक और कार्यालय के शीघ्र खुलने की आशा है।

2.4.2. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने मुख्यालय स्थित वर्तमान कम्प्यूटर प्रणाली को उन्नत बनाया है तथा ग्रामीण विकास सम्बन्धी प्रचार से जुड़े कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार कार्यों में सुधार किया है।

2.4.3. वर्ष 1993-94 के दौरान प्रकाशन विभाग ने उड़िया भाषा में 'योजना' के प्रकाशन का कार्य शुरू कर दिया है।

2.4.4. आशा है कि फोटो प्रभाग अपनी आधुनिकीकरण योजना के अंतर्गत जटिल उपकरण प्राप्त कर लेगा तथा तीन-चार टर्मिनलों सहित एक प्रमुख इकाई वाले कम्प्यूटरीकृत फोटो डाटा बैंक और बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और गुवाहाटी में चार क्षेत्रीय कार्यालयों में इस सुविधा के विस्तार का कार्य पूरा कर लेगा।

2.4.5. भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक ने अपने 3 क्षेत्रीय कार्यालयों को उन्नत कम्प्यूटरों के जरिए मुख्यालय से जोड़ने के लिए कदम उठाए हैं।

2.4.6. भारतीय जनसंचार संस्थान ने टाप पब्लिशिंग उपकरण तथा आफसेट छपाई मशीन प्राप्त कर ली हैं तथा इन्हें पूर्णतया परिचालन योग्य बना लिया है। संस्थान एपल मैकिनटोश यूनिट के अनुरूप हिन्दी और ग्राफिक साफ्टवेयर भी प्राप्त कर लेगा। संस्थान ने अगस्त 1993 को उड़ीसा में ढेंकानाल में अपनी पहली शाखा खोली।

2.4.7. गीत और नाटक प्रभाग ने वर्ष के दौरान संवेदनशील क्षेत्रों में अपनी गतिविधियां बढ़ाने के लिए ठोस उपाय किए। स्थानीय प्रतिभा, विशेषकर लोक एवं परंपरागत समूहों की प्रतिभा के उपयोग से स्थानीय बोलियों में प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए गए। गुवाहाटी क्षेत्रीय केन्द्र ने उत्तर-पूर्व के 7 राज्यों में एक भावनात्मक एकता अभियान का आयोजन किया जिसमें 4172 सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनके अलावा प्रभाग ने पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर आदि में राष्ट्रीय एकता पर कार्यक्रम आयोजित किए। कई राज्यों में सद्भावना समारोहों का आयोजन किया गया। राष्ट्रपति भवन के उद्यान में राष्ट्रपति की अंगरक्षक टुकड़ी के लिए तथा पुणे स्थित सैन्य इंजीनियरी कालेज के स्वर्ण जयंती समारोहों के अवसर पर तथा श्रवणबेलगोला में महामस्तकाभिषेक के अवसर पर ध्वनि एवं प्रकाश कार्यक्रमों का आयोजन किया।

2.4.8. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने अपने प्रचार अभियानों को सुदृढ़ करने के लिए एस.एस.बी. के लिए 12 वृत्तचित्रों के 186 प्रिंटों तथा 2 कथाचित्रों के 7.55 लाख रुपए मूल्य के 11 प्रिंटों का आर्डर दिया है। क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों को मुद्रित प्रचार सामग्री उपलब्ध कराने के लिए 10 लाख रुपए विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय को दिए गए हैं। इसके अलावा दस प्रादेशिक कार्यालयों को हार्डवेयर/साफ्टवेयर की आपूर्ति के लिए राष्ट्रीय सूचना केन्द्र को 15 लाख रुपए की राशि उपलब्ध कराई गई है।

फिल्म माध्यम

2.5.1. फिल्म प्रभाग ने तीन संक्षिप्त कथाचित्रों का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है। तेरह और संक्षिप्त कथाचित्रों का निर्माण कार्य जारी है। प्रभाग को बाहरी निर्माताओं से 160 कथाएं/पटकथाएं प्राप्त हुईं। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विषय पर प्रभाग ने 'मेहतरों की बस्ती में कर्ण-कुंती सम्वाद' शीर्षक से एक संक्षिप्त कथाचित्र का निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया है। बम्बई में फिल्म प्रभाग भवन के निर्माण के तीसरे चरण का कार्य प्रगति पर है। फिल्म प्रभाग के पास उपलब्ध फिल्मों की सूची तैयार करने का काम भी जारी है।

2.5.2. वर्ष के दौरान भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार को उसकी सात योजनाएं जारी रखने के लिए 52 लाख रुपये का बजट अनुदान दिया गया है। ये हैं: (1) वातानुकूलित फिल्म भंडार, सभागार व प्रशासनिक खंड वाला नया भवन, (2) नॉइट्रेट फिल्मों के विशिष्ट भंडारों का निर्माण और नाइट्रेट फिल्मों का सुरक्षित भंडार में स्थानांतरण (3) अभिलेखीय फिल्मों (भारतीय और विदेशी) को प्राप्त करना, (4) सहायक फिल्म सामग्री और पुस्तकें, पत्रिकाएं, चित्र आदि प्राप्त करना, (5)अभिलेखीय जानकारी का कम्प्यूटरीकरण करना, (6) सदस्यता के आधार पर अभिलेखीय प्रदर्शन, फिल्म समीक्षा पाठ्यक्रमों, व्याख्यानों, गोष्ठियों और फोटो प्रदर्शनियों का आयोजन करना और (7) भारतीय फिल्म कला की वार्षिक पुस्तिका और अन्य अनुसंधान पत्रों का प्रकाशन करना तथा भारतीय एवं विदेशी फिल्मों के संवाद अन्य भाषाओं में अनुवाद करना। ये सभी योजनाएं कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं।

2.5.3. भारतीय बाल व युवा फिल्म समिति ने 6 कथाचित्रों और एक टी.वी. धारावाहिक का निर्माण पूरा कर लिया है। भारतीय भाषाओं में तीन फिल्में डब कर ली हैं। समिति ने नवम्बर 1993 में उदयपुर (राजस्थान) में बाल एवं युवा फिल्म समारोह आयोजित किया तथा कई विदेशी फिल्म समारोहों में भाग लिया है।

2.5.4. फिल्म समारोह निदेशालय ने 42 से अधिक फिल्म समारोहों में भाग लिया, जिनमें एशियाई फिल्म समारोह और एशियाई सिनेमा पर केन्द्रित विभिन्न समारोह शामिल हैं। नीदरलैंड्स के रोटरडम अंतर्राष्ट्रीय समारोह और कनाडा के टोरंटो फिल्म समारोह में प्रतिनिधिमंडल भी गए। विभिन्न फिल्म समारोहों में भारतीय फिल्मों के कई सिंहावलोकन आयोजित किए गए। सत्यजीत राय की फिल्में स्विटजरलैंड के फ्रिबोर्ग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और सीरिया के दमिश्क अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शित की गईं। कलकत्ता में 10 से 20 जनवरी 1994 तक भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1994 आयोजित किया गया। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत हंगरी, ग्रीस, इंडोनेशिया, ब्राजील,

घाना, जर्मनी, कनाडा, बंगलादेश और श्रीलंका में भारतीय फिल्म सप्ताह आयोजित किए गए। भारत में आयरलैंड और पोलैंड के फिल्म सप्ताहों का दिल्ली, भोपाल और भुवनेश्वर में आयोजन किया गया।

2.5.5. आशा है कि राष्ट्रीय फिल्म वित्त निगम को नौ कथाचित्रों के निर्माण के लिए एक करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता दी जाएगी तथा निगम की एक करोड़ 60 लाख रुपए की लागत से स्व/सह-निर्माण श्रेणी के अंतर्गत 3 फिल्मों के निर्माण की योजना है। वर्ष के दौरान निगम द्वारा 135 फिल्मों को आयात करने और 100 के वीडियो अधिकार या टेलिविजन अधिकार प्राप्त किए जाने की आशा है। पांच थियेटरों के निर्माण के लिए ऋण प्रदान किए जाने की आशा है।

2.5.6. उपकरणों की खरीद के अलावा केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड की मुख्यालय बम्बई तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में गतिविधियां जारी रहीं। बोर्ड के बम्बई स्थित मुख्यालय के कम्प्यूटरीकरण के लिए राष्ट्रीय सूचना केन्द्र को सौंपी गई व्यापक योजना का काम प्रगति पर है तथा केन्द्र द्वारा हार्डवेयर खरीद लिया गया है। स्थल को तैयार करने, विद्युत-स्थापनाओं, तार बिछाने आदि का काम तेजी से चल रहा है तथा कम्प्यूटरों के शीघ्र स्थापित हो जाने की आशा है।

2.5.7. पुणे-स्थित भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान ने छायांकन व ध्वनि विभागों के लिए उपकरणों का आयात किया। जेनरेटर लगा एक स्वराज माज़दा ट्रक भी खरीदा गया है ताकि फिल्म संबंधी अभ्यासों के लिए सचल-जेनरेटर की छात्रों की मांग पूरी की जा सके।

2.5.8. कलकत्ता के सत्यजीत राय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान के लिए 1993-94 के संशोधित अनुमानों में 40 लाख रुपये के बजट अनुदान का आबंटन किया गया। भूमि का मृदा-परीक्षण पूरा कर लिया गया है। चारदीवारी के पहले चरण का निर्माण-कार्य प्रगति पर है।

लक्ष्य

दूरदर्शन

2.6.1. वर्ष 1994- 95 के लिए दूरदर्शन के लक्ष्यों में दिल्ली-स्थित दूरदर्शन भवन स्टूडियो काम्प्लेक्स के निर्माण कार्य, बम्बई में टेलीविजन के विस्तार, राजकोट टी.वी. स्टूडियो और गंगटोक में कार्यक्रम निर्माण सुविधा केन्द्र के निर्माण कार्य को जारी रखना शामिल है। दूरदर्शन द्वारा हिसार दूरदर्शन केन्द्र और सम्बलपुर में लघु निर्माण सुविधाओं से सम्बन्धित निर्माण कार्य, ई.एन.जी. उपकरणों (चरण-II) का आयात, आठवीं पंचवर्षीय योजना की स्वीकृत स्कीमों के लिए उपकरणों के आर्डर देने और लोकसभा व राज्यसभा में अंतरिम स्टूडियो के लिए शेष उपकरणों की प्राप्ति, विज्ञान भवन में स्थायी स्टूडियो की स्थापना, केन्द्रीय निर्माण केन्द्र में ग्राफिक्स संबंधी व्यवस्था को सुदृढ़ करने, मेट्रो केन्द्रों में कम्प्यूटर ग्राफिक्स की व्यवस्था करने तथा लांग हॉल माइक्रोवेव लिंक्स आदि से सम्बन्धित कामों को भी किया जाएगा।

2.6.2. दूरदर्शन द्वारा किए जाने वाले अन्य कार्य इस प्रकार हैं: रामेश्वरम और कुर्नूल में

उच्च शक्ति (10 किलोवाट) ट्रांसमीटर चालू करना और मऊ तथा नांदयाल में 5 किलोवाट के ट्रांसमीटर चालू करना, लेह, लुंगलेह, मोकोकचुंग तथा चूड़ाचांदपुर में 1-1 किलोवाट के ट्रांसमीटरों की स्थापना व उन्हें चालू करना, 61 कम शक्ति वाले और 11 अत्यंत कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर चालू करना, कालीकट और फाजिल्का के उच्च शक्ति ट्रांसमीटर के लिए भवन व टावर संबंधी निर्माण कार्य शुरू करना, बाड़मेर और भुज के उच्च शक्ति ट्रांसमीटरों के साथ 300 मी. ऊंचाई के टावरों का निर्माण, आठवीं पंचवर्षीय योजना की स्कीमों के उच्च शक्ति ट्रांसमीटरों के लिए अंतिम रूप से स्थल-चयन, अत्यंत कम शक्ति के ट्रांसमीटरों के लिए दूरस्थ अनुश्रवण प्रणाली (रिमोट मानीटरिंग सिस्टम) के कम शक्ति व उच्च शक्ति वाले ट्रांसमीटरों के लिए मापक उपकरण, उत्प्रेरकों औ्र ड्राइवर एम्पलीफायरों से सम्बन्धित शेष उपकरणों की प्राप्ति, मौजूदा केन्द्रों पर अतिरिक्त सुविधाओं के लिए उपकरणों का आर्डर देना तथा कम शक्ति के ट्रांसमीटरों को आकाशवाणी के एफ.एम.टावरों में स्थानांतरित करने और मास्ट की ऊंचाई को बढ़ाने के कार्य को पूरा करना।

2.6.3. दूरदर्शन द्वारा कुछ विविध कार्य भी पूरे किए जाएंगें जो इस प्रकार हैं: केरल, लक्षद्वीप द्वीपसमूह, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल क्षेत्रीय सेवा के लिए भू केन्द्र उपकरणों के आर्डर देना, मद्रास के भूकेन्द्र को चालू करना, उपग्रह के जरिए समाचार संकलन के उपकरणों की प्राप्ति, राजस्थान क्षेत्रीय सेवा के लिए पी.डी.ए. प्राप्त करना, नेटवर्क में कार्यालय के लिए अतिरिक्त स्थान के निर्माण का प्रावधान, दिल्ली में उपग्रह सेवा मानीटरिंग के लिए राष्ट्रीय उपग्रह भू केन्द्र के उपकरणों के लिए आर्डर देना तथा मद्रास, कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली के लिए 'ट्रैक्ट' के लिए आर्डर देना।

2.6.4. जालंधर (58 क्वार्टर), डाल्टनगंज, नैनीताल, सिलीगुड़ी, मोकोकचुंग, लुंगलेई, चूड़ाचांदपुर, रामेश्वरम और पोर्ट ब्लेयर में कर्मचारी आवासों के निर्माण को पूरा किया जाएगा। औरंगाबाद तथा पोर्ट ब्लेयर में (अतिरिक्त क्वार्टर) सिविल निर्माण कार्यों का काम प्रगति पर है।

आकाशवाणी

2.7. 1994-95 के दौरान प्रस्तावित लक्ष्यों में बारह पूर्ण रेडियो स्टेशन, तीन रिले स्टेशन, बारह नए मीडियम वेव ट्रांसमीटर, 22 नए एफ.एम. ट्रांसमीटर स्थापित करना शामिल है, जो 45 मीडियम वेव ट्रांसमीटरों और चार शार्टवेव ट्रांसमीटरों के उन्नयन के काम के अलावा हैं। एक स्थायी स्टूडियो के उन्नयन, दो स्थायी स्टूडियो को पुन: सज्जित करने तथा एक नए स्टूडियो की स्थापना के लिए भी प्रावधान किया गया है।

सूचना माध्यम

2.8.1. पत्र सूचना कार्यालय की संचार-प्रणाली के आधुनिकीकरण का प्रस्ताव है ताकि कार्यालय को 1994-95 के दौरान एक समन्वित सम्प्रेषण व्यवस्था उपलब्ध हो सके। कार्यालय के विभिन्न कार्यस्थलों के लिए जटिल उपकरण, कम्प्यूटर प्रणाली और साफ्टवेयर पैकेज खरीदने का भी प्रस्ताव है।

2.8.2. प्रकाशन विभाग का गुवाहाटी और भोपाल में बिक्री केन्द्र खोलने तथा भुवनेश्वर

और जयपुर में बिक्री काउंटर खोलने का प्रस्ताव है।

2.8.3. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय की बिलों के भुगतान और ग्रामीण विकासीय गतिविधियों के प्रचार के लिए ग्राहक सेवाओं के कम्प्यूटरीकरण की योजनाएं हैं।

2.8.4. फोटो प्रभाग इलैक्ट्रानिक स्टिल छायांकन के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी प्राप्त करेगा।

2.8.5. वर्ष 1994-95 के दौरान गीत एवं नाटक प्रभाग का ध्वनि एवं प्रकाश के 160 कार्यक्रमों के आयोजन का प्रस्ताव है। रांची कार्यालय द्वारा मध्यप्रदेश, बिहार और उड़ीसा के जनजातीय क्षेत्रों में मंडलियों के 450 कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। संवेदनशील और सीमावर्ती इलाकों में 480 विशेष प्रचार अभियान चलाने का भी प्रस्ताव है।

2.8.6. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि विषयों पर फिल्में/वृत्तचित्र खरीदने और जन नेताओं के लिए यात्राओं के प्रायोजन का विचार है। इसके अलावा निदेशालय का मुद्रित प्रचार सामग्री उपलब्ध करने का प्रस्ताव भी है। निदेशालय की पिछड़े और जनजातीय क्षेत्रों में 10 और नई इकाइयां खोलने का भी प्रस्ताव है।

2.8.7. सूचना भवन के निर्माण के चौथे चरण को प्रारंभ करने का प्रस्ताव है।

2.8.8. भारत के समाचार पत्र पंजीयक का अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए कम्प्यूटर नेटवर्क व्यवस्था करने का प्रस्ताव है।

2.8.9. मंत्रालय के मुख्य सचिवालय का वेतन एवं लेखा संगठन को मजबूत बनाने का प्रस्ताव है ताकि मंत्रालय की बढ़ी हुई गतिविधियों को संभाला जा सके। दूसरे राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल के परिचालन के लिए संयुक्त क्षेत्र की कम्पनी में पूंजी के अंशदान के लिए तथा 'मेकिंग आफ महात्मा' नामक फिल्म के लिए दक्षिण अफ्रीका में इस उद्देश्य से बनाई गई समिति के साथ सहयोग के लिए धन का भी प्रावधान रखा गया है।

2.8.10. भारतीय जनसंचार संस्थान का प्रथम चरण के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों के होस्टल के लिये निर्माण कार्य को पूरा करने, शिक्षण खंड आदि का निर्माण शुरू करने, डीटीपी प्रणाली को अद्यतन बनाने, एपल मैकिनटोश इकाई वाला हिन्दी और ग्राफिक साफ्टवेयर प्राप्त करने का प्रस्ताव है।

फिल्म माध्यम

2.9.1. फिल्म प्रभाग का विशेषकर ग्रामीण दर्शकों के लिए 16 मि. मी.के विशेष संक्षिप्त कथा चित्रों के निर्माण, छायांकन उपकरणों की स्थिति मजबूत करने व पुराने के स्थान पर नए उपकरण प्राप्त करने और बम्बई में भवन के निर्माण के तीसरे चरण का कार्य शुरू करने का प्रस्ताव है।

2.9.2. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का फिल्मों के लिए वातानुकूलित भंडारों, प्रयोगशाला और अभिलेखागार कार्यालय भवन, अनुषंगी फिल्म सामग्री प्राप्त करने, अभिलेखीय आकंड़ों के कम्प्यूटरीकरण आदि का प्रस्ताव है।

2.9.3. पुणे-स्थित भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान अपनी टीवी शाखा के आधुनिकीकरण पर बल देगा और अपने विभिन्न विभागों के लिए नई मशीनरी और

उपकरण जुटाएगा।

2.9.4. कलकत्ता में फिल्म और दूरदर्शन संस्थान के निर्माण कार्यों के लिए 568 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

2.9.5. राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र बच्चों के लिए कथाचित्र, संक्षिप्त कथाचित्र और लघु फिल्में बनाएगा। केन्द्र की सामान्य गतिविधियों के अंतर्गत फिल्मों की डबिंग और सबटाइटलिंग का काम जारी रहेगा। निर्माण सुविधाओं में बढ़ोतरी और आधुनिकीकरण के अलावा, विदेशी फिल्में भी खरीदी जाएंगी।

2.9.6. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का आधुनिकीकरण और परियोजना को बदलने, तथा स्वयं की या विदेशी निर्माताओं व दूरदर्शन के साथ सह-निर्माण के आधार पर अच्छी फिल्में बनाने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त, फिल्मों के निर्माण के लिए ऋण भी उपलब्ध कराए जाएंगे।

2.9.7. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड बम्बई और अपने क्षेत्रीय कार्यालयों में अपनी गतिविधियां जारी रखेगा। इसके अतिरिक्त कुछ और उपकरण भी खरीदे जाएंगें।

2.9.8. फिल्म सोसाइटियों को उनकी नियोजित गतिविधियों के लिए सहायता अनुदान प्रदान करने के लिए प्रावधान किया गया है।

2.9.9. फिल्म समारोह निदेशालय का भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत फिल्म समारोहों के आयोजन का प्रस्ताव है। निदेशालय द्वारा विदेशी फिल्म समारोहों में भी भाग लेने का कार्यक्रम है।

अध्याय 3

संगठन

मुख्य सचिवालय

3.1. मंत्रालय के सचिवालय का प्रमुख सचिव है। उसकी सहायता के लिए दो अपर सचिव और दो संयुक्त सचिव हैं। इसके अलावा मंत्रालय की विभिन्न शाखाओं में निदेशक/उप-सचिव स्तर के 11 अधिकारी, अवर सचिव श्रेणी के 16 अधिकारी, 45 अन्य राजपत्रित अधिकारी तथा 310 अराजपत्रित कर्मचारी भी कार्यरत हैं। मंत्रालय का संगठन संबंधी चार्ट परिशिष्ट 1 में दिया गया है।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति

3.2.1. अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों को मंत्रालय के अंतर्गत सेवाओं और पदों में उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए सरकार की नीति और आदेशों के अनुपालन का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। मंत्रालय ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि विभिन्न अधीनस्थ सेवाओं और पदों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षित स्थान तथा इन वर्गों के वास्तविक प्रतिनिधित्व के बीच अंतर को कम से कम किया जा सके। इन प्रयासों के जरिये मंत्रालय और इससे संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में 1 जनवरी, 1993 को कुल कर्मचारियों की तुलना में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कर्मचारियों का प्रतिशत बढ़कर इस प्रकार हो गया है:-

	वर्ग-क	वर्ग-ख	वर्ग-ग	वर्ग-घ
अनुसूचित जाति	10.64	14.85	16.17	33.06
अनुसूचित जनजाति	4.18	4.68	6.74	11.25

3.2.2. कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग के निर्देशों का अनुपालन करते हुए अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित पदों पर नियुक्ति करने के लिए इस वर्ष भी विशेष भर्ती अभियान चलाया गया। इसके तहत सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में इन वर्गों के लिए आरक्षित अधिकतम स्थान भरने का प्रयास किया गया।

3.2.3. आरक्षण संबंधी आदेशों को लागू करने के काम की देखरेख और इनमें तालमेल के लिए मंत्रालय में उपसचिव स्तर के सम्पर्क अधिकारी की निगरानी में एक सेल कार्य कर रहा है। मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत आने वाले संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों में आरक्षण के लिए रोस्टर बनाए गए हैं।

3.2.4. अनुसूचित जातियों और जनजातियों के अधिकारियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत देश में तथा विदेशों में प्रशिक्षण देने पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। मंत्रालय को सेवाओं में आरक्षण के बारे में जानकारी देने वाले पाठ्यक्रमों के महत्व की पूर्ण जानकारी है। जब भी सचिवालय द्वारा प्रशिक्षण और प्रबंध संस्थान द्वारा पाठ्यक्रम शुरू करने की सूचना दी जाती है, मंत्रालय कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए अवश्य वहां भेजता है।

3.2.5. मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाली स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में भी अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लिए आरक्षण नीति पर अमल हो रहा है। इन संस्थाओं/उपक्रमों में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, भारतीय जन संचार संस्थान, भारतीय प्रेस परिषद और राष्ट्रीय बाल युवा फिल्म केन्द्र शामिल हैं।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग

3.3.1. मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति, राजभाषा विभाग और केन्द्रीय हिन्दी समिति द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुसार हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सलाह देती है। इस वर्ष समिति की दो बैठकें हुईं। समिति के सदस्यों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए।

3.3.2. मंत्रालय और इसके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियां भी काम कर रहीं हैं। इन समितियों ने समय-समय पर अपनी बैठकों में अपने-अपने कार्यालयों में सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए किये जा रहे कार्य की समीक्षा की। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) तथा राजभाषा नियम, 1976 के नियम-5 के तहत किये गये वैधानिक प्रावधानों का अनुपालन किया जा रहा है। अधीनस्थ कार्यालयों से मंत्रालय में प्राप्त रिपोर्टों की जांच/समीक्षा की गई और सुधार के लिए आवश्यक निर्देश दिये गये। इस वर्ष मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें हुईं।

3.3.3. संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने दिल्ली से बाहर 6 कार्यालयों का निरीक्षण किया। वर्ष के दौरान संसदीय राजभाषा समिति ने मंत्रालय के मुख्यालय और 9 मीडिया इकाइयों से मौखिक साक्ष्य भी एकत्र किए। समिति ने राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की। मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने निरीक्षण बैठकों में हिस्सा लिया। समिति की टिप्पणियों के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की गई।

3.3.4. सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रचलन को बढ़ावा देने के लिए 14 से 20 सितम्बर, 1993 तक मंत्रालय में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस दौरान हिन्दी टंकण, निबंध लेखन, टिप्पण तथा प्रारूप लेखन और अनुवाद की प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वालों को प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

3.3.5. राजभाषा नियम (संघ के कार्य में राजभाषा का इस्तेमाल) 1976 के नियम 10(4) के अनुसार मंत्रालय के मुख्य सचिवालय सहित अधिसूचित कार्यालयों की संख्या अब 364 हो गई है। इन अधिसूचित कार्यालयों में 80 प्रतिशत या इससे अधिक कर्मचारी हिन्दी की कामचलाऊ जानकारी हासिल कर चुके हैं।

3.3.6. सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के इस्तेमाल में प्रगति का जायजा लेने के लिए विभिन्न मीडिया इकाइयों के कई कार्यालयों का मुआयना किया गया। इन कार्यालयों से निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को दूर करने का आग्रह किया गया। हिन्दी प्रयोग और हिन्दी टिप्पण तथा आशुलिपि में प्रशिक्षण की गति बढ़ाने के लिए माध्यम इकाइयों के पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए कर्मचारियों को नामित करने का आग्रह किया गया, ताकि निश्चित अवधि के दौरान सभी अप्रशिक्षित कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा सके।

3.3.7. हिन्दी में टिप्पण और प्रारूपण का प्रशिक्षण देने के लिए मंत्रालय के मुख्यालय सहित विभिन्न मीडिया इकाइयों द्वारा कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया।

आंतरिक कार्य अध्ययन दल

3.4. आन्तरिक कार्य अध्ययन दल ने कार्य-क्षमता बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका जारी रखी। वर्ष के दौरान (31 दिसम्बर, 1993 तक) चलायी गई महत्वपूर्ण गतिविधियां इस प्रकार रहीं:

1. चार कार्य-मूल्यांकन अध्ययन किये गए। इससे सार्वजनिक राजस्व की लगभग 3.55 लाख रुपये की प्रत्यक्ष/एतिहाती बचत की जा सकी।

2. कार्यालय प्रक्रिया की नियमावली में निर्धारित संगठन तथा कार्यविधि (ओ.एण्ड एम.) प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए एक कार्य-योजना तैयार की गई। इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि मुख्यालय और लगभग सभी मीडिया इकाइयों द्वारा शुरू की गई गतिविधियों के संदर्भ में रिकार्ड प्रतिधारण अनुसूची को अंतिम रूप दिया गया। मामलों के प्रस्तुतिकरण के माध्यमों और उन्हें अंतिम रूप से निपटाए जाने की स्थिति की समीक्षा की जा रही है।

3. दिसम्बर, 1993 तक रिकार्ड प्रबन्ध संबंधी 3 विशेष अभियान चलाए गए, जिनके तहत 25,071 फाइलों के रिकार्ड तैयार किये गए, 25,611 फाइलों की जांच की गई तथा 10,582 फाइलें नष्ट की गयीं।

4. संगठन व कार्यविधि के दृष्टिकोण से मुख्य सचिवालय के 30 अनुभागों का निरीक्षण किया गया।

5. सूचना और प्रसारण मंत्रालय के मुख्य सचिवालय तथा सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में इस्तेमाल होने वाले प्रपत्रों की समीक्षा, प्रक्रियाओं के सरलीकरण, जबाव देही तय करने तथा लोक शिकायतों के समाधान की दिशा में एक कार्यदल द्वारा किये जा रहे प्रयास जारी रहे।

विभागीय लेखा

3.5.1. सरकारी लेखों (सिविल) के विभागीकरण की योजना लागू किए जाने के फलस्वरूप पहली अक्तूबर, 1976 से सूचना और प्रसारण मंत्रालय के मुख्य लेखा अधिकारी का कार्यालय अस्तित्व में आया। इस योजना के अंतर्गत अन्य बातों के अलावा मंत्रालय का सचिव मुख्य लेखा अधिकारी होता है और अतिरिक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार) वित्तीय परामर्श तथा लेखा संबंधी कामकाज देखता है। मुख्य लेखा नियंत्रक मंत्रालय के लेखा संगठन का प्रशासनिक तथा लेखा संबंधी मुखिया होता है, जिसके दायित्व इस प्रकार है:-

(क) मंत्रालय के लेखे का महालेखा नियंत्रक द्वारा निर्धारित विधि से संकलन करना।

(ख) सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा नियंत्रित अनुदान मांगों के वार्षिक विनियोजन लेखे तैयार करना, केन्द्र सरकार के वित्त लेखों (सिविल) से

संबंधित लेन देन और सामग्री का ब्यौरा महालेखा नियंत्रक का भेजना।

(ग) स्वायत्त संस्थाओं, समाचार एजेंसियों और निगमों को ऋण और अनुदान देना।

(घ) वेतन और लेखा अधिकारियों और मीडिया अधिकारियों को लेखा नियंत्रण के बारे में तकनीकी सलाह देना।

(ड) देश भर में मंत्रालय के 567 आहरण और भुगतान अधिकारियों के वित्तीय लेन देन की निगरानी करना।

3.5.2. मुख्य लेखा नियंत्रक इन कार्यों को एक उप लेखा नियंत्रकों और 18 वेतन और लेखा अधिकारियों के माध्यम से पूरा कराता है जिनके कार्यालय दिल्ली (7), कलकत्ता (3), बम्बई (3), मद्रास (3), लखनऊ (1), और गुवाहाटी (1) में है।

3.5.3. इस संगठन की एक विशेषता यह है कि मंत्रालय और इससे संबद्ध अधीनस्थ कार्यालयों के करीब 5000 राजपत्रित अधिकारियों के वेतन और भत्ते का भुगतान इसी संगठन के माध्यम से किया जाता है। यह कार्य राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र की सहायता से कम्प्यूटरों द्वारा किया जाता है। यह काम इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली स्थित ए.जी.सी.आर. भवन में उप लेखा नियंत्रक (इर्ला) द्वारा किया जा रहा है।

3.5.4. इस वर्ष (दिसम्बर, 1993 तक) सभी वेतन और लेखा अधिकारियों ने 2,14,873 बिलों को निपटाया (इनमें वेतन और लेखा अधिकारी इर्ला द्वारा निपटाए गए 49,095 राजपत्रित अधिकारियों के बिल शामिल हैं)। इसके अलावा सेवा निवृत सरकारी कर्मचारियों के पेंशन के 753 और भविष्य निधि के अंतिम भुगतान के 595 मामले भी निपटाए गये। वेतन और लेखा कार्यालय ने सदस्य कर्मचारियों को भविष्य निधि से खातों से संबंधित 39,440 वार्षिक विवरण भी भेजे।

3.5.5. मंत्रालय द्वारा हाल ही में किए गए दायित्वों के पुनर्निर्धारण के तहत मंत्रालय के बजट और लेखा तथा संगठन और कार्यविधि (ओ एंड एम) अनुभागों को मुख्य लेखा नियंत्रक के अधीन रखा गया है।

3.5.6. मुख्य लेखा नियंत्रक के अधीन एक आंतरिक लेखा-परीक्षा संगठन भी काम करता है। यह संगठन कार्यपालक कार्यालयों में रखे गए प्रारंभिक खातों की जांच के लिए उत्तरदायी है, ताकि सभी कार्यालयों में लेखों और वित्तीय मामलों से संबंधित नियमों विनियमों, प्रणालियों और प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन किया जा सके। यह संगठन वार्षिक और द्विवार्षिक लेखा-परीक्षण के अलावा मीडिया इकाइयों में विशेष लेखा-परीक्षण व्यवस्था भी चलाता है। गंभीर अनियमितताओं के उन मामलों की जांच के लिए आंतरिक (विशेष) लेखा-परीक्षा सैल है जिन्हें साधारण जांच के दौरान निपटाना संभव नहीं होता। ऐसे दो लेखा-परीक्षा कार्यक्रम हाल ही में प्रकाशन विभाग और सी.पी.सी. इकाइयों में आयोजित किये गये।

सतर्कता

3.6.1. मंत्रालय का सतर्कता तंत्र मंत्रालय के सचिव की देखरेख में कार्य करता है। इस काम में एक संयुक्त सचिव, मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक अपर सचिव और अन्य अधीनस्थ कर्मचारी उनकी सहायता करते हैं। मंत्रालय के अधीनस्थ एवं सम्बद्ध कार्यालयों

की सतर्कता इकाइयों के मुखिया सतर्कता अधिकारी होते हैं, किन्तु, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों और पंजीकृत समितियों में इस दायित्व का निर्वाह उनके सम्बद्ध अधिकारियों द्वारा किया जाता है। मंत्रालय का मुख्य सतर्कता अधिकारी सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों और पंजीकृत समितियों की सतर्कता गतिविधियों के बीच समन्वय स्थापित करता है।

3.6.2. मंत्रालय में एक विशेष शिकायत समाधान तंत्र काम कर रहा है। संयुक्त सचिव (पी एण्ड एफ) को शिकायत निदेशक बनाया गया है। माध्यम इकाइयों में भी कर्मचारी शिकायत अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। निर्धारित समय पर कर्मचारी तथा आम लोग इन अधिकारियों से मिल कर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। ऐसे मामले निपटाए जाने की प्रगति पर बराबर नजर रखी जाती है।

3.6.3. प्रक्रियाओं को सरल बनाने के प्रयास जारी रहे ताकि भ्रष्टाचार की गुंजाइश न रहे। संदिग्ध-निष्ठा वाले लोगों पर कड़ी नजर रखी गई। गड़बड़ी की आशंका वाले पदों से कर्मचारियों का समय-समय पर स्थानान्तरण किया जाता रहा। नियमों और प्रक्रियाओं का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किए गए। वर्ष के दौरान 58 नियमित और 23 अकस्मात निरीक्षण किए गए तथा 20 ऐसे लोगों का पता लगाया गया जिन पर निगरानी रखने की जरूरत है।

3.6.4. अप्रैल से दिसम्बर, 1993 के दौरान, विभिन्न स्रोतों से मंत्रालय में 280 शिकायतें प्राप्त हुई। इन पर विचार किया गया और 118 मामलों में प्रारंभिक जांच के आदेश दिये गये, इनमें से 4 मामलों की जांच का काम सी.बी.आई. को सौंपा गया। वर्ष के दौरान 41 मामलों के संदर्भ में प्रारंभिक जांच रिपोर्ट प्राप्त हुई। 30 मामलों में बड़ी सजा देने और 5 मामलों में छोटी सजा देने के लिए नियमित विभागीय कार्रवाई शुरू की गई। एक मामले में बड़ी सजा दी गई। एक अन्य मामले में छोटी सजा दी गई। तीन मामलों में पेंशन में कटौती की सजा दी गई, क्योंकि इनका निपटारा सम्बद्ध अधिकारियों की सेवा निवृति के बाद हुआ था। 15 अधिकारियों को निलम्बित किया गया और 30 अधिकारियों को प्रशासनिक चेतावनी दी गई। एक अधिकारी को एफ आर-56(जे) के तहत समय से पहले सेवा निवृत कर दिया गया। वर्ष के दौरान निलम्बित किये गये अधिकारियों में आठ मुख्य सचिवालय और सात मीडिया इकाई से थे। पांच मामलों में बड़ी सजा देने के लिए नियमित विभागीय कार्रवाई शुरू करने का प्रस्ताव किया गया है।

अध्याय 4

आकाशवाणी

4.1.1. आकाशवाणी ने विशेष अवसरों पर विशिष्ट वर्ग के श्रोताओं के लिए प्रसारण की अपनी श्रृंखला के अंतर्गत केंद्रीय शिक्षा आयोजना इकाई के जरिए एक और धारावाहिक शुरू किया है। ''दहलीज'' नाम का नवीनतम धारावाहिक परिवार नियोजन प्रतिष्ठान के सहयोग से भारत के किशोर-किशोरियों के लिए बनाया गया है। इसका उद्देश्य उन्हें जनसंख्या संबंधी मुद्दे के बारे में जागरूक बनाना है। अब तक तैयार की गई 26 कड़ियों का प्रसारण देश के हिंदी भाषी इलाकों में स्थित आकाशवाणी के 30 केंद्रों से किया जा रहा है।

4.1.2. आकाशवाणी ने राष्ट्रीय एकता, आपसी सदभाव, भाइचारे और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण जारी रखा। सांप्रदायिक सदभाव और अहिंसा का उपदेश देने वाले सूफियों और संतों के जीवन और उपदेशों पर आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण पर विशेष जोर दिया गया।

4.1.3. सरकार ने देश के चार महानगरों— बंबई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास में आकाशवाणी के एफ एम चैनलों पर निजी कार्यक्रम निर्माताओं को टाइम स्लाट यानी प्रसारण समय उपलब्ध कराने का फैसला किया है। समय का आवंटन ''पहले आओ, पहले पाओ'' आधार पर किया जाता है। प्रत्येक चैनल पर प्रति घंटे प्रसारण समय के लिए 6,000 रूपये लाइसेंस शुल्क के रूप में लिए जाते हैं। कोई भी आवेदनकर्ता हर रोज के प्रत्येक प्रसारण में अधिकतम तीन टाइम स्लाट प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक एफ एम चैनल पर एक एक घंटे के प्रत्येक टाइम स्लाट में दस मिनट का समय विज्ञापनों के प्रसारण के लिए उपलब्ध रहेगा जिसमें से एक मिनट समय अनिवार्य सामाजिक विज्ञापनों के लिए निर्धारित होगा।

4.1.4. निजी पार्टियों को प्रसारण समय उपलब्ध कराने की योजना आकाशवाणी के बंबई और दिल्ली केंद्रों में 15 अगस्त 1993 से सफलतापूर्वक चल रही है। आकाशवाणी के मद्रास केंद्र ने भी 1 सितंबर 1993 से एफ एम चैनल पर शुल्क पर प्रसारण समय खरीदने वालों के कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया है।

4.1.5. आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र ने 10 जनवरी 1993 से टेलीफोन और रेडियो की सहायता से सवाल जवाब के 'फोन-इन कार्यक्रम' का प्रसारण शुरू किया। आकाशवाणी दिल्ली इस तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करने वाला देश का पहला केंद्र है। इसके अंतर्गत स्वास्थ्य, व्यावसायिक परामर्श, उपभोगता संरक्षण, संपत्ति संबंधी अधिकार, लघु उद्योग और बीमारियों की रोकथाम के उपाय जैसे विषयों पर जो कार्यक्रम प्रसारित किए गए हैं, श्रोताओं ने उनका बड़ा स्वागत किया है। 'फोन-इन कार्यक्रम' सप्ताह में एक बार प्रसारित किया जा रहा है और इसमें महिलाओं तथा युवा वर्ग की रुचियों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है।

4.1.6. आकाशवाणी की एक अन्य उल्लेखनीय गतिविधि ''वायस मेल सर्विस'' कार्यक्रम है जिसमें श्रोता दो टेलीफोन नंबरों 3761144 और 3761166 पर टेलीफोन कर अपने

मनपसंद कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वे कार्यक्रमों और उनके प्रस्तुतीकरण के तरीके के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएं भी इन टेलीफोन नंबरों पर रिकार्ड करा सकते हैं।

4.1.7. आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग की इस वर्ष की महत्वपूर्ण गतिविधियां इस प्रकार रहीं। हिंदी समाचार पूल की शुरूआत, आकाशवाणी कटक से उड़िया में 5 मिनट के एक और बुलेटिन की शुरूआत, आकाशवाणी दरभंगा से सप्ताह में तीन दिन मैथिली में समाचार सारांश बुलेटिन का प्रसारण, प्रभाग के मुख्यालय में सामान्य समाचार कक्ष तथा क्षेत्रीय समाचार एकांशों के कम्प्यूटरीकरण में तेजी तथा समाचारों की दृष्टि से महत्वपूर्ण अवसरों पर विशेष प्रसारण।

4.1.8. अर्थव्यवस्था को उदार बनाने के लिए सरकार द्वारा किए गए नए आर्थिक उपायों को समाचार बुलेटिनों तथा समाचारों से संबंधित कार्यक्रमों में व्यापक महत्व देकर प्रसारित किया गया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा ''आजाद हिंद'' की घोषणा की स्वर्ण जयंती, शिकागो में विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद के भाषण की जयंती तथा भारत छोड़ो आंदोलन की जयंती के समापन के सिलसिले में आयोजित समारोहों को समाचार बुलेटिनों में विशेष महत्व दिया गया। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में विधानसभा चुनावों में नामांकन पत्र दाखिल करने से लेकर मतदान और चुनाव परिणामों की घोषणा तक के समाचारों का बड़े कारगर तरीके से प्रसारण किया गया।

4.1.9. आकाशवाणी से इस समय हर रोज 290 समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं, जिनकी कुल प्रसारण अवधि 39 घंटा 10 मिनट है। इनमें से कुल 12 घंटा 10 मिनट अवधि के 89 बुलेटिन घरेलु सेवा के अंतर्गत प्रसारित होते हैं जबकि कुल 18 घंटा 1 मिनट अवधि के 136 समाचार बुलेटिन 41 क्षेत्रीय समाचार एकांशों से प्रसारित होते हैं।

विदेश प्रसारण सेवा के अंतर्गत हर रोज दुनिया के विभिन्न देशों के लिए 65 बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं। इनकी कुल अवधि 8 घंटा 59 मिनट है।

प्रसारण तंत्र

4.2.1. देश भर में आकाशवाणी के 162 प्रसारण केंद्र हैं जिनमें से 154 सभी सुविधाओं से युक्त पूर्ण केंद्र हैं। इसके अलावा 3 रिले केंद्र, 2 उप-केंद्र तथा 3 विशेष विविध भारती/विज्ञापन प्रसारण सेवा केन्द्र भी हैं। देश में मीडियम वेव ट्रांसमीटरों की संख्या 142, शार्टवेव ट्रांसमीटरों की 43 और एफ एम ट्रांसमीटरों की संख्या 74 है। इस समय क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का 87 प्रतिशत इलाका तथा जनसंख्या की दृष्टि से 96 प्रतिशत आबादी आकाशवाणी केंद्रों के प्रसारण के दायरे में आती है।

4.2.2. आकाशवाणी ने कार्यक्रमों को रिले करने के लिए इनसेट-1 डी के जरिए रेडियो नेटवर्किंग यानी रेडियो संपर्क की शुरूआत की है। सिकंदराबाद स्थित दूरसंचार विभाग के भू-केंद्र के जरिए दिल्ली से छः चैनलों के साथ प्रसारण संपर्क (अपलिंक) सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा बंबई, कलकत्ता और मद्रास में भी इनसेट-1 डी के जरिए क्षेत्रीय कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए दिल्ली के साथ एक चैनल की प्रसारण-संपर्क सुविधा है।

आकाशवाणी के केंद्रों में दिल्ली से प्रसारित कार्यक्रमों को प्राप्त करने के लिए छः चैनल वाले रिसीवर टर्मिनल उपलब्ध हैं।

4.2.3. इसके अलावा आकाशवाणी के दिल्ली केंद्र में प्रसारण भवन में इनसेट-2-ए के जरिए चार चैनलों वाली प्रसारण संपर्क (अपलिंक) सुविधा उपलब्ध है। दिल्ली सहित आकाशवाणी के 17 केंद्रों में इस सेवा के तहत कार्यक्रमों को प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध है।

4.2.4. छठी पंचवर्षीय योजना में परीक्षण के तौर पर छः स्थानीय रेडियो स्टेशन स्थापित करने की परियोजना बनाई गई थी इनमें से पांच ने प्रसारण शुरू किया। सातवीं योजना में स्थानीय रेडियो स्टेशन की धारणा को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के 73 आकाशवाणी केंद्र खोलने की योजना बनाई गई थी। इनमें से 53 ने प्रसारण शुरू कर दिया है और 6 प्रसारण के लिए तैयार हैं। 4 केंद्रों के मार्च 1994 तक प्रसारण शुरू करने की संभावना है। बाकी केंद्र निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। आठवीं योजना में चार और स्थानीय आकाशवाणी केंद्र खोलने की योजना है। वित्तीय समिति से अभी इस योजना को मंजूरी मिलनी बाकी है। स्थानीय आकाशवाणी केंद्र स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खोले जा रहे हैं और इनका उद्देश्य क्षेत्र के लोगों की जरूरतों तथा रूचियों के अनुसार कार्यक्रमों को प्रसारित करना हैं।

समाचार सेवा प्रभाग

4.3.1. 15 अगस्त 1993 को समाचार सेवा प्रभाग ने एक बड़ी उपलब्धि प्राप्त की। इस दिन हिंदी समाचार पूल की शुरूआत हुई। इससे कई सांसदों तथा विभिन्न वर्गों के कुछ प्रमुख व्यक्तियों की लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी हुई है जो भारत की राजभाषा में समाचार पूल शुरू करने की मांग कर रहे थे।

4.3.2. उड़ीसा से क्षेत्रीय तथा स्थानीय घटनाओं के और अधिक समाचार देने के लिए आकाशवाणी नेटवर्क से उड़िया में पांच मिनट के समाचार बुलेटिन का प्रसारण शुरू किया गया। बिहार के मैथिली भाषी व्यापक जनसमुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आकाशवाणी दरभंगा से मैथिली में साप्ताहिक समाचार सारांश बुलेटिन शुरू किया गया। श्रोताओं की मांग पर पटना के क्षेत्रीय समाचार एकांश द्वारा प्रसारित किए जाने वाले समाचार सारांश बुलेटिन का प्रसारण सप्ताह में तीन बार कर दिया गया। समाचार सेवा प्रभाग की इस वर्ष की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि समाचार बुलेटिनों में बड़ी संख्या में आकाशवाणी संवाददाताओं की आवाज में भेजी गई रिपोर्टों का इस्तेमाल किया गया।

4.3.3. महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक में विनाशकारी भूकंप का समाचार सबसे पहले समाचार सेवा प्रभाग ने 30 सितंबर 1993 को अपने सवेरे 3 बजकर 5 मिनट के बुलेटिन में दिया। दुनिया भर के प्रसारण संगठनों ने आकाशवाणी द्वारा प्रसारित समाचार के हवाले से इस बारे में प्रारंभिक खबरें दीं। आकाशवाणी के बाद के बुलेटिनों में आकाशवाणी के संवाददाताओं द्वारा घटनास्थल से भेजी गई रिपोर्टों के आधार पर विस्तृत समाचार दिए गये। आकाशवाणी के संवाददाता भूंकप की खबर मिलते ही इसके लिए विशेष रूप से वहां पहुंच गए थे। बंबई, पुणे, नागपुर, औरंगाबाद, हैदराबाद, विजयवाड़ा, बंगलौर और धारवाड़ के

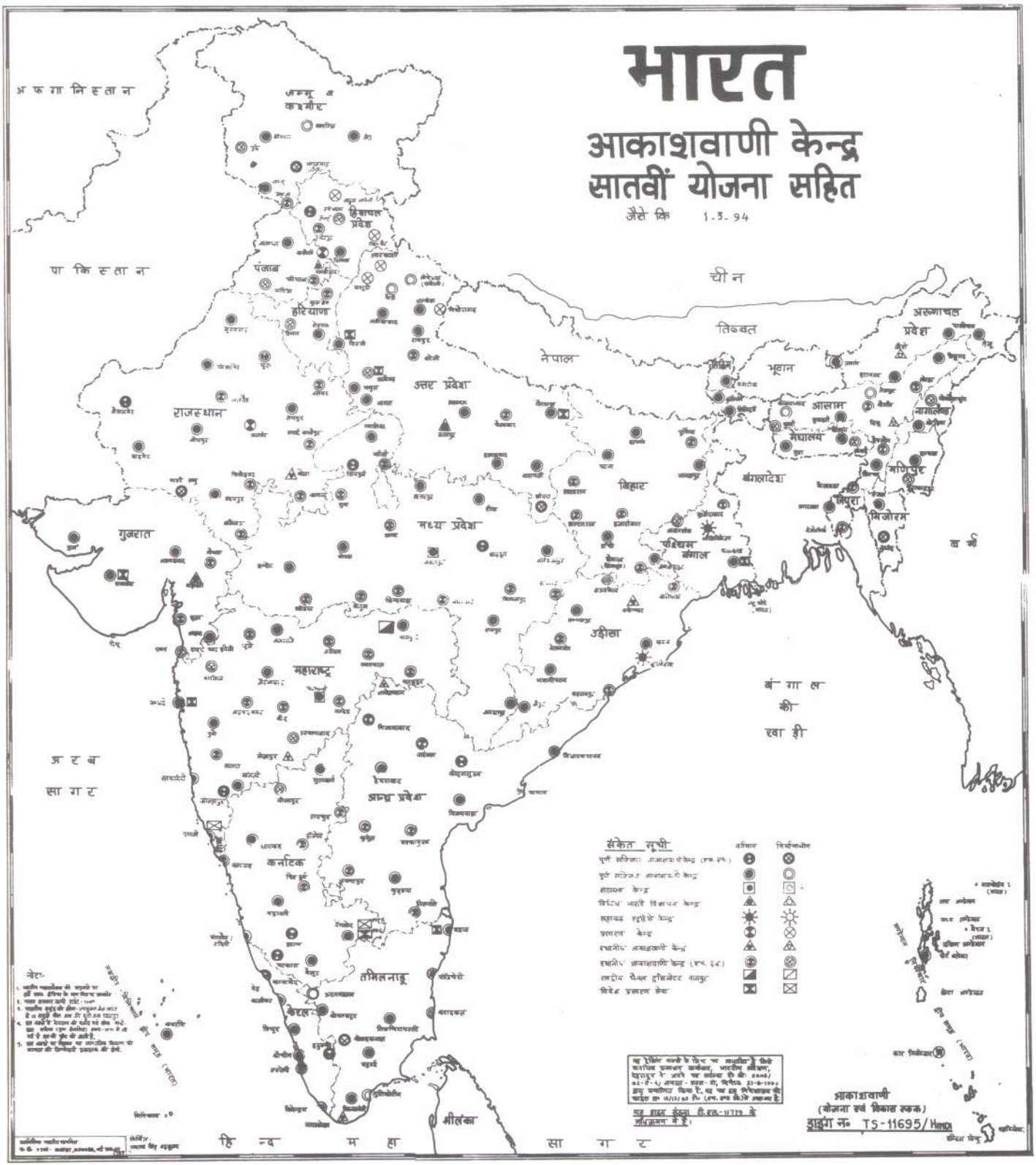

भारत
आकाशवाणी केन्द्र
सातवीं योजना सहित
जैसे कि 1.3.94
अफगानिस्तान
पाकिस्तान
चीन
तिब्बत
नेपाल
भूटान
बंगलादेश
बर्मा
जम्मू व कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
हरियाणा
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
अरुणाचल प्रदेश
आसाम
मेघालय
नागालैंड
मणिपुर
त्रिपुरा
मिजोरम
बिहार
पश्चिम बंगाल
गुजरात
मध्य प्रदेश
उड़ीसा
महाराष्ट्र
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
तमिलनाडु
केरल
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
हिन्द महासागर
श्रीलंका
संकेत सूची
आकाशवाणी
(योजना एवं विकास एकक)
ड्राइंग नं॰ TS-11695/HINDI

क्षेत्रीय समाचार एकांश इस प्राकृतिक आपदा के बारे में नवीनतम समाचार प्रसारित करते रहे। भूकंप के बारे में ''न्यूजरील'' और ''समाचार दर्शन'' कार्यक्रमों के चार विशेष अंक प्रसारित किए गए।

4.3.4. श्रीनगर में हजरतबल दरगाह के महीने भर के संकट के शांतिपूर्वक समाप्त हो जाने तथा वहां घुसे उग्रवादियों द्वारा सुरक्षा बलों के समक्ष बिना शर्त आत्म-समर्पण करने पर समूचे राष्ट्र ने राहत की सांस ली। इसका समाचार भी सबसे पहले आकाशवाणी के सुबह 0600 बजे के हिंदी और 0605 बजे के अंग्रेजी समाचार बुलेटिन में प्रसारित किया गया। आकाशवाणी के श्रीनगर संवाददाता ने उग्रवादियों के आत्मसमर्पण के बारे में समाचार-एजेंसियों से काफी पहले अपनी रिपोर्ट भेज दी थी।

4.3.5. प्रधानमंत्री के निर्देश पर, दिल्ली से कार्य कर रहे रेडियो कश्मीर, श्रीनगर के क्षेत्रीय समाचार एकांश को और प्रभावी करने के लिए श्रीनगर केंद्र में वापस भेज दिया गया। हालांकि इसमें स्टाफ को काफी कठिनाइयां पेश आईं।

4.3.6. क्षेत्रीय समाचार एकांशों से दिल्ली के सामान्य समाचार कक्ष तथा सामान्य समाचार कक्ष से क्षेत्रीय एकांशों को अधिक शीघ्रता से समाचार भेजने के लिए 31 क्षेत्रीय समाचार एकांशों को फैक्स तथा कम्प्यूटर प्रणालियों से आपस में जोड़ दिया गया है। समाचार बुलेटिन बनाने के कार्य का कम्प्यूटरीकरण चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है

4.3.7. राष्ट्रपति डाक्टर शंकर दयाल शर्मा की उक्रेन, तुर्की, हंगरी और ब्रिटेन यात्रा, उप-राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन की लंदन, वियतनाम और मोरक्को यात्रा तथा प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव की ढाका (सातवें सार्क शिखर सम्मेलन में भाग लेने), थाईलैंड, मध्य एशियाई गणराज्य (उजबेकिस्तान और कजाकिस्तान), चीन, दक्षिण कोरिया, ईरान, ओमान और भूटान यात्रा के समाचारों का प्रसारण काफी कारगर रहा। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं में आकाशवाणी के विशेष संवाददाता उनके साथ गए।

4.3.8. मारीशस के राष्ट्रपति श्री कासम उतीम, नेपाल के महाराजाधिराज वीरेंद्र, तंजानिया के राष्ट्रपति श्री अली हसन म्विन्यी, बेलारूस के प्रधानमंत्री श्री वी.बी. केबिच, नौरू के राष्ट्रपति श्री बरनार्ड डावियेगो, श्रीलंका के प्रधानमंत्री श्री रणरिल विक्रमसिंघे, स्वीडन नरेश गुस्ताफ और महारानी सिल्विया, इस्राइल के उप-प्रधानमंत्री श्री शिमोन पेरेज और दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्री श्री पिक बोथा की भारत यात्रा के समाचारों को भी पर्याप्त महत्व दिया गया।

4.3.9. इसके अलावा जिन अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं को समाचारों में विशेष महत्व दिया गया उनमें सीमा तथा वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अमन-चैन बनाए रखने के लिए चीन के साथ ऐतिहासिक समझौता, देश के बाढ़ और सूखे से प्रभावित क्षेत्रों में नुकसान, निर्वाचन आयोग में दो और आयुक्तों की नियुक्ति, त्रिपुरा में विधानसभा चुनाव तथा वहां नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह, लोकसभा में उच्चतम्-न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री वी. रामास्वामी के खिलाफ महाअभियोग की कार्रवाई, नरसिम्हा राव सरकार के दो वर्ष, प्रतिभूति घोटाले से संबंधित घटनाक्रम, मदर टैरेसा को पहला राजीव गांधी सदभावना पुरस्कार, मणिपुर में जनजातीय कबीलों के बीच विवाद, उड़ीसा में आकाशवाणी के जैपुर केंद्र के 100 किलोवाट क्षमता के ट्रांसमीटर का उदघाटन, ट्रक मालिकों की हड़ताल तथा इसे सदभावपूर्वक सुलझाने के सरकार के प्रयास, दिल्ली में युवक कांग्रेस (आई) मुख्यालय

में बम विस्फोट तथा राष्ट्रीय मोर्चा और वाम मोर्चा के आहवान पर आयोजित भारत बंद प्रमुख हैं।

4.3.10. फील्डमार्शल के.एम. करियप्पा, समाजवादी नेता श्री एन.जी. गोरे, वरिष्ठ पत्रकार श्री एस. मुलगांवकर, श्री गिरिलाल जैन और श्री मोहन राम, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल प्रो. नूरूल हसन, कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री आर गुंडुराव, पूर्व दिल्ली राज्य के पहले मुख्य मंत्री चौधरी ब्रह्मप्रकाश, गुजरात के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री हितेंद्र देसाई और श्रीमती ललिता शास्त्री के निधन के समाचार तथा उनके प्रति श्रद्धांजलि वार्ताएं प्रसारित की गईं। स्वामी चिन्मयानंद, वरिष्ठ कलाकार उत्पल दत्त, अभिभटटाचार्य, असित सेन और फिल्म निर्माता विजय भटट, भूतपूर्व नौ सेनाध्यक्ष एडमिरल आर.एल. परेरा, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सुप्रसिद्ध कलाकार नैना देवी, जाने माने हिंदी साहित्यकार तथा शिक्षा शास्त्री डा. नरेंन्द्र भण्डावत और भारतीय क्रिकेट के पितामह प्रोफेसर देवधर के निधन के समाचार भी बुलेटिनों में लिए गए।

4.3.11. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जिन घटनाओं को समाचारों में विशेष महत्व दिया गया उनमें श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री रणसिंघे प्रेमदास तथा एक अन्य नेता ललित अतुलतमुदली की हत्या, गाजा पटटी तथा जेरीको में इस्राइल तथा फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के बीच फिलिस्तीनी स्वायत्ता के लिए ऐतिहासिक समझौता, पाकिस्तान में नेशनल असेंबली तथा प्रांतीय असेंबली के चुनाव तथा श्रीमती भुटटो के नेतृत्व वाली नई सरकार द्वारा शपथ ग्रहण, रूस में राजनीतिक संकट, साइप्रस में 29वां राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन, टोकियो में जी-7 देशों का शिखर सम्मेलन, कंबोडिया में नरेश के रूप में राजकुमार नरोदम सिंहानुक का गददी पर बैठना, श्रीलंका में हिंसा, श्रीलंका की सेना पर एल.टी.टी.ई. के हमले में 100 सैनिकों की मृत्यु, हैती में राजनीतिक संकट, यूनान में चुनाव, दक्षिण अफ्रीका नेता क्रिस हानी की हत्या और अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के नेता श्री ओलीवर ताम्बो के देहांत के समाचार प्रमुख हैं।

4.3.12. खेलकूद से संबंधित कुछ प्रमुख राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के समाचारों को भी उचित महत्व दिया गया। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं: विम्बलडन टेनिस प्रतियोगिता, विश्व बैडमिंटन चैम्पियनशिप, विश्व टेबल टेनिस चैम्पियनशिप, विश्व शतरंज प्रतियोगिता, विश्व कप हाकी टूर्नामेंट, विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप, राष्ट्रमंडल कुश्ती चैम्पियनशिप, पेइचिंग अंतराष्ट्रीय मैराथन, सार्क फुटबाल प्रतियोगिता, माउंट एवरेस्ट पर भारतीय महिला अभियान, भारत और श्रीलंका के बीच क्रिकेट श्रृंखला, भारत और आस्ट्रेलिया/इंग्लैंड के बीच क्रिकेट श्रृंखला, क्रिकेट एसोसिएशन आफ बंगाल द्वारा आयोजित 5 देशों की हीरो कप हीरक जयंती प्रतियोगिता।

4.3.13. समाचारों पर आधारित कार्यक्रमों जैसे 'करेंट अफेयर्स', 'चर्चा का विषय', 'स्पाट लाइट', 'सामयिकी', 'तब्सरा' तथा समाचार प्रभात और मार्निंग न्यूज के साथ प्रसारित होने वाली समीक्षाओं और 'न्यूजरील' एवं 'समाचार दर्शन' में जिन विषयों को उठाया गया उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: डंकल प्रस्ताव, मुद्रा स्फीति में गिरावट, उर्वरक सब्सिडी, प्रधानमंत्री की रोजगार योजना, अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उपाय, नरसिम्हा राव सरकार के दो वर्ष, सफाई कर्मचारी आयोग, बीड़ी और खान मजदूरों के कल्याण के नए उपाय, हथकरघा बुनकरों की स्थिति में सुधार के प्रयास, जनजातीय महिलाओं की शिक्षा

सुविधाओं में सुधार, बच्चों से मजदूरी कराने पर रोक, राष्ट्रीय पोषाहार नीति, पर्यावरण संरक्षण, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय, करों की चोरी के खिलाफ अभियान, पुरी की रथ यात्रा, उपभोक्ता संरक्षण, बंद तथा हड़ताल के नुकसान, महाराष्ट्र में भूकंप, विधान सभा चुनाव, मदर टेरेसा को सद्भावना पुरस्कार, भारत छोड़ो आन्दोलन की स्वर्ण जयंती, भारत में खेलकूद गतिविधियां, श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री प्रेमदास की हत्या, पाकिस्तान की घटनाएं, रूस का घटनाचक्र, ढाका शिखर सम्मेलन, जी-7 शिखर सम्मेलन और अराफात-राबीन बैठक।

4.3.14. संसद के दोनों सदनों में रोज की कार्रवाई तथा महत्वपूर्ण चर्चाओं के समाचारों को बुलेटिनों में प्रमुखता से स्थान दिया गया। संसद के अधिवेशनों के दौरान टुडे इन पार्लियामेंट/संसद समीक्षा (दैनिक) और दिस वीक इन पार्लियामेंट/इस सप्ताह संसद में (साप्ताहिक) कार्यक्रमों में सदनों की कार्यवाही तथा सांसदों द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण मुद्दों का हिंदी और अंग्रेजी में ब्यौरा दिया गया। राज्यों की राजधानियों में स्थित आकाशवाणी क्षेत्रीय समाचार एकांशों से विधान सभा की कार्रवाई की समीक्षा भी प्रसारित की गई।

4.3.15. दिल्ली से हर रविवार को हिंदी में लोक रुचि समाचारों का एक बुलेटिन प्रसारित किया जाता है। 13 क्षेत्रीय समाचार एकांश भी अपने क्षेत्र की भाषा में लोक रुचि समाचार बुलेटिन प्रसारित करते हैं।

4.3.16. हज के दौरान हज-यात्रियों के लिए उर्दू में हर रोज पांच मिनट का एक बुलेटिन प्रसारित किया जाता है।

4.3.17. इस समय आकाशवाणी के नियमित संवाददाताओं की संख्या देशभर में 101 और विदेशों में 7 है। इसके अलावा 246 अंशकालिक संवाददाता भी समाचार सेवा प्रभाग और इसके क्षेत्रीय समाचार एकांशों के लिए समाचार उपलब्ध कराते हैं।

घरेलू सेवाएं

4.4.1. आकाशवाणी के राष्ट्रीय चैनल ने 18 मई 1988 से काम करना शुरू किया। इस समय देश की 64 प्रतिशत आबादी इसके कार्यक्रम सुन सकती है। कलकत्ता के पास मोग्रा में एक मेगावाट क्षमता का ट्रांसमीटर लग जाने से पूर्वी और पूर्वोत्तर राज्यों में राष्ट्रीय चैनल का दायरा काफी बढ़ गया है। इसके अलावा इस चैनल के कार्यक्रम नागपुर स्थित एक मेगावाट क्षमता के ट्रांसमीटर और दिल्ली के दस मेगावाट के ट्रांसमीटर से भी प्रसारित किए जाते हैं। देश के विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय चैनल के रिले ट्रांसमीटर लगाने का उद्देश्य यह है कि देश की अधिक से अधिक जनसंख्या तथा दूर-दराज के लोग भी इसके कार्यक्रम सुन सकें। राष्ट्रीय चैनल के कार्यक्रमों में उत्कृष्ट हिंदुस्तानी, कर्नाटक और पाश्चात्य संगीत, खोजबीन पर आधारित रिपोर्टें, पत्रिका कार्यक्रम, नाटक, फीचर, हिंदी में एक घंटे का खेल कार्यक्रम, साप्ताहिक वित्तीय समीक्षा, अंग्रेजी में खेलकूद गतिविधियों के ब्यौरे पर आधारित कार्यक्रम, दैनिक उर्दू कार्यक्रम "मंजर" शामिल हैं। इसके अलावा विभिन्न व्यक्तियों, विषयों, स्थानों, वस्तुओं और संगीत आदि के बारे में विविधा नाम का एक कार्यक्रम भी प्रसारित किया जाता है। राष्ट्रीय चैनल के अन्य प्रमुख कार्यक्रमों में प्राचीन भारतीय साहित्य पर आधारित 'प्रतिबिंब', 'संस्कृति के स्वर', 'चलो गांव की ओर' और हास्य-व्यंग्य का कार्यक्रम 'हंसते-हंसते' शामिल हैं।

4.4.2. आकाशवाणी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, जनजातीय और लोक संगीत तथा पाश्चात्य संगीत के बारे में श्रोताओं की समझ बढ़ाने के लिए काफी अच्छा कार्य किया है। कुल प्रसारण समय का 40 प्रतिशत संगीत के लिए निर्धारित है। संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम हर शनिवार को प्रसारित किया जाता है। आकाशवाणी संगीत सम्मेलन के कार्यक्रमों में चोटी के संगीतकारों के साथ-साथ प्रतिभाशाली नए संगीतकारों को भी अवसर प्रदान किया जाता है। हर रविवार को क्षेत्रीय हुक अप पर प्रसारित होने वाली संगीत सभाओं में नवोदित संगीतकारों को भाग लेने का मौका मिलता है।

4.4.3. इस साल का आकाशवाणी संगीत सम्मेलन इस वार्षिक शृंखला की 39वीं कड़ी था। इसके अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में हिंदुस्तानी संगीत की 31 और कर्नाटक संगीत की 23 सभाएं आयोजित की गईं। इनमें चोटी के 171 जानेमाने संगीतकारों ने हिस्सा लिया। इन संगीत सम्मेलनों की विशेषता यह है कि देश के एक भाग के कलाकारों को दूसरे भाग के श्रोताओं के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त होता है।

4.4.4. संगीत के क्षेत्र में कम उम्र के प्रतिभाशाली कलाकारों का पता लगाने के लिए आकाशवाणी हर साल संगीत प्रतियोगिताएं आयोजित करता है। इस वर्ष 28 कलाकारों का चुनाव किया गया और उन्हें पुरस्कार दिए गए।

4.4.5. 'आकाशवाणी वाद्यवृंद' नाम से दिल्ली और मद्रास में दो राष्ट्रीय संगीत मंडलियां काम कर रही हैं। इन वाद्यवृंद संगीत मंडलियों ने परंपरागत रागों, लोक धुनों और लोक गाथाओं पर आधारित जो बेजोड़ संगीत रचनाएं तैयार की हैं उनकी बड़ी प्रशंसा हुई है।

4.4.6. आकाशवाणी के संग्रहालय को विभिन्न केंद्रों से शास्त्रीय, लोक और जनजातीय संगीत रचनाएं नियमित रूप से प्राप्त होती रहती हैं जिससे यह संग्रहालय लगातार समृद्ध होता जा रहा है। ये संगीत कार्यक्रम अन्य केंद्रों को भी भेजे जाते हैं।

4.4.7. आकाशवाणी के राष्ट्रीय प्रसारणों में क्षेत्रीय, लोक और उप-शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है ताकि देश के कोने-कोने के लोग भी सुदूर क्षेत्रों के संगीत को समझ सकें।

4.4.8. 1993 की राष्ट्रमंडल संगीत प्रतियोगिता में आकाशवाणी की 'कामनवैल्थ हैज ब्राट अस टुगैदर' नाम की संगीत रचना को पहला स्थान मिला।

4.4.9. आकाशवाणी का समूह गान एकांश राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से देश भर में समूह गानों के प्रसारण का समन्वय करता है। यह एकांश विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में समूह गानों के निर्माण की भी व्यवस्था करता है।

खेल प्रसारण

4.5.1. आकाशवाणी के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में खेलों से संबंधित कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इनके श्रोताओं की संख्या काफी अधिक है। आकाशवाणी के खेल प्रसारणों से विभिन्न खेल गतिविधियों के बारे में जानकारी देने तथा श्रोताओं, विशेष रूप से समाज के खेल प्रेमी युवा वर्ग में, खेलकूद के प्रति जागरूकता बढ़ाने में बड़ी मदद मिली है।

4.5.2. विभिन्न खेलों तथा खेल प्रतियोगिताओं के बारे में श्रोताओं को लगातार सूचनाएं

मिलती रहे, इसके लिए आकाशवाणी ने खेल कार्यक्रमों के नियमित प्रसारण की पक्की व्यवस्था की है। इसके लिए प्रसारण समय निर्धारित कर दिया गया है। हिंदी और अंग्रेजी में हर रोज पांच-पांच मिनट के खेलकूद समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं। अंग्रेजी में दस मिनट का साप्ताहिक न्यूजरील कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा हर महीने हिंदी और अंग्रेजी में तीस-तीस मिनट के 'खेल पत्रिका' कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। इनसे देश में खेलकूद को लोकप्रिय बनाने में काफी मदद मिली है।

4.5.3. अप्रैल-दिसम्बर 1993 में आकाशवाणी ने राष्ट्रीय प्रसारण में विम्बलडन टेनिस, डेविस कप टेनिस, भारत-श्रीलंका क्रिकेट श्रृंखला, विश्व कप बैडमिंटन प्रतियोगिता, अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक मीट और अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी चैम्पियनशिप की कवरेज के लिए कारगर प्रयास किए। सभी महत्वपूर्ण खेल स्पर्धाओं, राष्ट्रीय चैम्पियनशिप और विभिन्न खेल टूर्नामेंटों का आंखों-देखा हाल, महत्वपूर्ण अंशों का सार, वायस-कास्ट और भेंटवार्ताओं के प्रसारण की व्यवस्था की गई।

4.5.4. ओलंपिक, एशियाई खेल, दक्षिण एशियाई परिसंघ खेल, विश्व कप हाकी, विश्व कप क्रिकेट जैसी राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं के साथ-साथ आकाशवाणी ने खो-खो और कबड्डी जैसे परंपरागत खेलों को देश के युवाओं में लोकप्रिय बनाने के लिए कार्यक्रम प्रसारित किए।

4.5.5. आकाशवाणी के 80 केंद्र विभिन्न भाषाओं में नाटक प्रसारित करते हैं। कई केंद्र नियमित रूप से पारिवारिक ड्रामा धारावाहिकों का प्रसारण करते हैं। ये समसामयिक सामाजिक-आर्थिक मुद्दों जैसे बेरोजगारी, निरक्षरता, पर्यावरण प्रदूषण, बालिकाओं की समस्या जैसे विषयों पर आधारित होते हैं।

4.5.6. नाटकों का राष्ट्रीय कार्यक्रम हर महीने के तीसरे बृहस्पतिवार को हिंदी में प्रसारित किया जाता है। क्षेत्रीय भाषाओं में इसका रूपांतरण संबंधित आकाशवाणी केंद्र से साथ-साथ प्रसारित होता है। इसके अलावा दिल्ली स्थित केंद्रीय नाटक एकांश 30 मिनट की अवधि के विशेष माडल नाटक भी बनाता है, जिन्हें हिंदी भाषी क्षेत्रों के 30 आकाशवाणी केंद्रों में बारी-बारी से भेजा जाता है। इसके लिए पटकथाओं का चुनाव आमतौर पर विभिन्न केंद्रों से प्राप्त क्षेत्रीय भाषाओं के श्रेष्ठ मूल नाटकों में से किया जाता है।

4.5.7. रेडियो कार्यक्रमों में हास्य-व्यंग्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हर साल 'हास्य तरंग' नाम का हास्य नाटकों का कार्यक्रम सूत्रधार के मंचसंचालन में आयोजित किया जाता है। इस अत्यंत लोकप्रिय कार्यक्रम में आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों की नाटक मंडलियां भाग लेती हैं। यह कार्यक्रम होली के आसपास राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रसारित किया जाता है।

4.5.8. आकाशवाणी के प्रमुख केंद्र हर महीने करीब 15 से 20 नाटक, नाटिका, प्रहसन, धारावाहिक आदि प्रसारित करते हैं। इस तरह आकाशवाणी को हर साल करीब 4 हजार पटकथाओं की आवश्यकता होती है। रेडियो नाटकों में नई जान फूंकने के लिए रेडियो नाटककारों के लिए भारत की 19 प्रमुख भाषाओं में 1987 से अखिल भारतीय प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इस साल इस प्रतियोगिता के लिए 5 हजार पटकथाएं प्राप्त हुई हैं।

4.5.9. आकाशवाणी का कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान महानिदेशालय के सहयोग से नाटक निर्माण से जुड़े कार्यक्रम अधिकारियों के लिए सेमिनार, कार्यशालाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। डोइचे विले रेडियो प्रशिक्षण केंद्र के सहयोग से 16 नवंबर से 10 दिसंबर 1993 तक दिल्ली में एक महत्वपूर्ण कार्यशाला की आयोजन किया गया।

परिवार कल्याण

4.6. आकाशवाणी के केंद्र हर महीने 8,500 से अधिक परिवार कल्याण आधारित कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। ये कार्यक्रम लगभग सभी केंद्रों से सभी भाषाओं, बोलियों और सभी विधाओं में होते हैं। इनमें छोटे और सुखी परिवार के आदर्श पर जोर दिया जाता है। इसके अलावा एड्स, क्षयरोग, रतिज रोग, पानी से फैलने वाली बीमारियों, मलेरिया उन्मूलन आदि के बारे में भी राष्ट्रीय महत्व के स्वास्थ्य कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। आकाशवाणी का प्रत्येक केंद्र हर सप्ताह 15 मिनट का 'हैल्थ फोरम' (स्वास्थ्य मंच) कार्यक्रम प्रसारित करता है। यूनीसेफ के सहयोग से माता और शिशु की स्वास्थ्य रक्षा के बारे में कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। इसके अलावा बालिकाओं के महत्व पर भी कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है। परिवार कल्याण पर सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम के लिए हर वर्ष आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार प्रदान किया जाता है। आकाशवाणी के 22 केंद्रों की परिवार कल्याण इकाइयों के अंतर्गत परिवार कल्याण सलाहकार समितियां गठित की गई हैं जो समय-समय पर कार्यक्रमों के बारे में दिशा-निर्देश देती हैं।

युववाणी सेवा

4.7.1. युवाओं के लिए युववाणी कार्यक्रम दिल्ली, जम्मू, श्रीनगर, कलकत्ता और हैदराबाद केंद्रों से प्रसारित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम 15 से 30 वर्ष तक के लोगों को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जिसके माध्यम से वे युवाओं और देश की समस्याओं से घनिष्ठ रूप से जुड़े विषयों पर खुलकर अपनी बात कह सकते हैं। युववाणी कार्यक्रम के जरिए युवाओं को देश के विभिन्न भागों के लोगों तथा उनकी संस्कृति और रीति-रिवाजों से परिचित कराने का प्रयास किया जाता है।

4.7.2. राज्यों की राजधानी वाले 17 आकाशवाणी केंद्रों से बुजुर्गों के लिए हर सप्ताह 30 मिनट के कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। इनमें वृद्धावस्था में स्वास्थ्य की देखभाल, पेंशन मिलने में परेशानियां, टैक्स संबंधी समस्याएं, कानूनी सलाह, प्राचीन ग्रंथों का पाठ, सामयिक विषय, वृद्ध-गृह, पुराने लोकप्रिय गीत, प्रहसन, पुराने जमाने के किस्से और इसी तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

4.7.3. आकाशवाणी के कई केंद्र अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में औद्योगिक मजदूरों के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। ये कार्यक्रम 20 से 30 मिनट तक के हैं और सप्ताह में दो से चार दिन तक प्रसारित किए जाते हैं। कुछ केंद्र अपनी आवश्यकतानुसार हर रोज इस तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। इन कार्यक्रमों में जिन विषयों को शामिल किया जाता है उनमें लघु-उद्योग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में श्रमिक कल्याण गतिविधियां, श्रम कानून, मजदूर संघ, न्यूनतम मजदूरी, प्रदूषण नियंत्रण तथा औद्योगिक कचरे का निपटान और देश में औद्योगिक इकाइयों की समस्याएं व संभावनाएं आदि शामिल हैं। इसके अलावा श्रमिकों/मजदूरों के लिए मनोरंजन संबंधी कार्यक्रम, विभिन्न उद्योगों के बारे में

डाक्यूमेंटरी, औद्योगिक समाचार, नए और परंपरागत उद्योगों के संबंध में कार्यक्रम भी आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित किए गए।

4.7.4. आकाशवाणी के विभिन्न केंद्र अपने आप तथा विशिष्ट श्रोताओं के कार्यक्रमों में सरकार की नयी आर्थिक नीति के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं।

कृषि एवं गृह

4.8.1. कृषि एवं गृह कार्यक्रम आकाशवाणी के सभी स्थानीय केंद्रों सहित कुल 92 केंद्रों से प्रसारित किए जाते हैं। कृषि एवं गृह इकाई में एक फार्म रेडियो अधिकारी, जो कृषि सूचना संचार का विशेषज्ञ होता है, एक ट्रांसमिशन एक्जीक्यूटिव (आलेख) और एक या दो फार्म रेडियो रिपोर्टर होते हैं। फार्म रेडियो रिपोर्टर को अब ट्रांसमिशन एक्जीक्यूटिव (कृषि और गृह) कहा जाने लगा है। कृषि एवं गृह कार्यक्रमों की अवधि 50-60 मिनट तक की होती है और ये हर रोज प्रसारित किए जाते हैं। इनका प्रसारण सुबह, दोपहर या शाम की सभाओं में होता है।

4.8.2. सुबह की सभाओं में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को 'किसान बुलेटिन' के नाम से जाना जाता है। इसमें उस दिन के लिए खेती-बाड़ी संबंधी जानकारी के बाद मौसम का हाल और बाजार भाव बताए जाते हैं। दोपहर और शाम की सभाओं में प्रसारित होने वाले कार्यक्रम ग्रामीण विकास से जुड़े सभी संगठनों जैसे बैंक और ग्रामीण उद्योग को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं।

4.8.3. इन कार्यक्रमों की रूपरेखा ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति के परामर्श से प्रसारण से काफी पहले बना ली जाती है। इसके लिए समिति की तिमाही बैठक आयोजित की जाती है। कार्यक्रम संबंधी मामलों में आकाशवाणी केंद्रों की कृषि एवं गृह इकाइयों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रखा जाता है। ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्य केंद्र के प्रसारण क्षेत्र के दायरे में आने वाले कृषक समुदाय के लोग होते हैं जिनका चयन राज्य सरकार की मदद से किया जाता है।

4.8.4. कृषि एवं गृह कार्यक्रमों के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं और ग्रामीण बच्चों के लिए भी कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। ग्रमीण महिलाओं के कार्यक्रमों में घर की देखभाल, सामाजिक घटनाएं, ग्रामीण रोजगार, ग्रामीण श्रमिक, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, मातृ तथा शिशु कल्याण मंत्रालय आदि विषय शामिल रहते हैं। समाज कल्याण मंत्रालय और यूनिसेफ भी ग्रामीण महिलाओं के कार्यक्रमों में सहयोग कर रहे हैं।

4.8.5. पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों पर भी काफी जोर दिया जा रहा है। आकाशवाणी का प्रत्येक केंद्र पर्यावरण पर हर रोज कोई-न-कोई कार्यक्रम अवश्य प्रसारित करता है। इसी तरह पंचायती राज पर भी सप्ताह में एक कार्यक्रम अवश्य प्रसारित होता है। कृषि एवं गृह कार्यक्रमों में से 40 प्रतिशत की रिकार्डिंग आमतौर पर खेतों, खलिहानों और घरों में की जाती है। इन कार्यक्रमों में 'खेतीबाड़ी' की स्थानीय समस्याओं के बारे में किसान और विशेषज्ञ सलाह देते हैं।

4.8.6. प्रत्येक आकाशवाणी केंद्र से सप्ताह में एक बार किसानों के पत्रों के उत्तर दिए जाते

हैं। कृषि विशेषज्ञ या रेडियो का कोई कर्मचारी विशेषज्ञ से परामर्श लेकर पत्रों का उत्तर देता है।

4.8.7. आकाशवाणी के 15 केंद्रों से किसानो को कृषि के बारे में जानकारी देने के लिए फार्म स्कूल कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है। चालू वर्ष से साल के सर्वोत्कृष्ट कृषि एवं गृह कार्यक्रम को आकाशवाणी पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

शैक्षिक कार्यक्रम

4.9.1. इस समय आकाशवाणी के 40 केंद्र स्कूलों के लिए प्रसारण करते हैं तथा 29 केंद्र इनको रिले करते हैं। यह कार्यक्रम पूरी तरह क्षेत्रीय आधार पर चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम की औसत अवधि प्रतिदिन 40 मिनट है। इन्हें आमतौर पर पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार किया जाता है लेकिन कुछ केंद्र पाठ्यक्रम से हटकर ज्ञान बढ़ाने वाले शैक्षिक कार्यक्रम भी प्रसारित करते हैं। आकाशवाणी अपने 40 केंद्रों से 'प्रौढ़ शिक्षा' पर और 21 केंद्रों से 'विज्ञान और टेक्नोलॉजी' पर कार्यक्रम प्रसारित करता है।

4.9.2. भारतीय विश्वविद्यालयों में पत्राचार शिक्षा की शुरूआत के बाद यह महसूस किया गया कि इसे और अधिक कारगर बनाने के लिए रेडियो का सहयोग बहुत जरूरी है। इस समय पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, डा. बी.आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय हैदराबाद, मदुरई कामराज मुक्त विश्वविद्यालय मदुरई और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली रेडियो की मदद ले रहे हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम बम्बई और हैदराबाद केंद्रों से परीक्षण के तौर पर प्रसारित किए जा रहे हैं और इनका प्रसारण दिसंबर, 1994 तक जारी रहेगा।

4.9.3. केंद्रीय शिक्षा योजना एकांश सातवीं योजना के दौरान गठित किया गया था। आकाशवाणी के कुल मौखिक-शब्द-प्रसारण में स्कूल-प्रसारण का हिस्सा 7.5 प्रतिशत है। एकांश अखिल भारतीय स्तर पर कई नए कार्यक्रम शुरू करने की योजना बना रहा है।

4.9.4. समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लोगों के बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए 'चीयर' नाम के कार्यक्रम की अवधि हरियाणा में एक साल के लिए और बढ़ा दी गयी है। इसके लिए राज्य सरकार ने अनुरोध किया था तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद तथा महिला और बाल विकास विभाग की ओर से भी जोरदार मांग की गयी थी। ये दोनों संस्थाएं भी इस संयुक्त कार्यक्रम में सहयोग कर रही हैं। यह प्रसारण आंगनबाड़ियों के बच्चों के लिए है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया है तथा इस परियोजना के लिए सहायक सामग्री भी प्रकाशित की है।

4.9.5. आकाशवाणी के 'मनुष्य का विकास' नाम के लम्बे धारावाहिक की देशभर के विद्यार्थियों तथा विज्ञान के अध्यापकों ने बड़ी सराहना की है। इसका निर्माण राष्ट्रीय विज्ञान और टेक्नोलॉजी संचार परिषद और केंद्रीय विज्ञान और टेक्नोलॉजी विभाग ने किया। इस धारावाहिक के जरिए दो साल में उपलब्ध कराई गयी विशुद्ध वैज्ञानिक सूचनाओं को बच्चों ने कितना याद रखा है इसकी जांच के लिए एक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 11,000 बच्चों ने प्रतियोगिता जीती। इन बच्चों को आकाशवाणी के विभिन्न

क्षेत्रीय केंद्रों में पुरस्कार दिए जाएंगे। विज्ञान-दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद एक विशेष समारोह आयोजित करेगी, जिसमें आकाशवाणी के इस प्रयोग की विशेषताओं और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जाएगा।

विज्ञापन प्रसारण सेवा

4.10.1. आकाशवाणी की लोकप्रिय विविध भारती सेवा श्रोताओं को सप्ताह के दिनों में हर रोज 13 घंटे 15 मिनट तथा रविवार और छुट्टी के दिनों में 13 घंटे 45 मिनट के मनोरंजक कार्यक्रम उपलब्ध कराती है। विविध भारती के कार्यक्रम बम्बई, मद्रास और दिल्ली के तीन शार्टवेव ट्रांसमीटरों सहित कुल 34 केंद्रों पर उपलब्ध रहते हैं। हालांकि विविध भारती का मुख्य आकर्षण अब भी फिल्मी और गैर-फिल्मी सुगम संगीत है, लेकिन इसके अंतर्गत प्रसारित होने वाले प्रहसन, नाटिकाएं, फीचर और वार्ताएं भी काफी लोकप्रिय हैं।

4.10.2. विविध भारती से विज्ञापनों का प्रसारण नवम्बर, 1967 से शुरू हुआ था। पिछले सालों में विविध भारती पर प्रसारित विज्ञापनों से होने वाली आय में बढ़ोत्तरी हुई है। 1992-93 में सिर्फ विविध भारती ने 37.66 करोड़ रुपये कमाये। आमदनी में और बढ़ोत्तरी के लिए मुख्य चैनल पर कुछ खास तरह के कार्यक्रमों के साथ चरणबद्ध तरीके से विज्ञापनों का प्रसारण प्रारंभ किया गया। 1991-92 में छः और आकाशवाणी केंद्रों ने अपने मुख्य चैनल पर विज्ञापनों का प्रसारण शुरू किया। इस समय आकाशवाणी के कुल 60 केंद्रों और 30 विविध भारती केंद्रों से विज्ञापनों का प्रसारण होता है। 1992-93 में विविध भारती तथा मुख्य चैनलों पर विज्ञापनों से 58.91 करोड़ रुपये की आय हुई, जो इससे पहले वर्ष की आय से 6.18 करोड़ रुपये अधिक है (परिशिष्ट-4)।

विदेश प्रसारण सेवा

4.11.1. आकाशवाणी का विदेश सेवा प्रभाग भारत तथा विश्व को जोड़ने वाले सम्पर्क माध्यम की तरह कार्य करता है। यह भारत राष्ट्र के इलेक्ट्रानिक राजदूत के रूप में दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के साथ महत्वपूर्ण संपर्क स्थापित करता है। जिन देशों में बड़ी संख्या में भारतीय लोग निवास करते हैं और जिनके साथ हमारे हित जुड़े हुए हैं उनसे सम्पर्क बनाने में विदेश सेवा प्रभाग की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हैं। इसके प्रसारणों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर भारतीय दृष्टिकोण झलकता है। विदेश सेवा प्रभाग हर रोज 24 भाषाओं में कुल 71 घंटे के कार्यक्रम प्रसारित करता है। इनमें से 16 भाषाएं विदेशी तथा 8 भारतीय हैं।

4.11.2. विदेश सेवा प्रभाग के प्रसारणों का स्वरूप एक मिश्रित पद्धति पर होता है। जिसमें आमतौर पर समाचार बुलेटिन, सामयिक विषयों पर वार्ता, तथा भारतीय समाचार पत्रों की समीक्षा शामिल रहती है। इसके अलावा समाचार-दर्शन, खेल और साहित्य पर पत्रिका कार्यक्रम, सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों पर वार्ता तथा परिचर्चा, विकास संबंधी गतिविधियों, महत्वपूर्ण घटनाओं और संस्थाओं पर फीचर, भारत के विभिन्न क्षेत्रों का शास्त्रीय, लोक और आधुनिक संगीत भी इन कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।

4.11.3. उर्दू सेवा एक ऐसे आधुनिक प्रगतिशील और उदीयमान भारत का चित्र प्रस्तुत करती आ रही है जो लोकतंत्र, समाजवाद, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सह अस्तित्व जैसे आदर्शों के प्रति समर्पित है। पाकिस्तान के साथ भारत के तनावपूर्ण संबंधों को ध्यान में रखते हुए यह प्रयास किया जाता है कि पाकिस्तानी इलेक्ट्रानिक मीडिया के झूठे और आधारहीन दुष्प्रचार, विशेष रूप से कश्मीर में विद्रोह के बारे में उसकी मनगढंत बातों का मुकाबला किया जाए। उर्दू, पंजाबी और सिंधी प्रसारणों में ऐसे विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए गए जिनमें पाकिस्तान में मानवाधिकारों के उल्लंघन की पुष्टि होती थी। सिंध की स्थिति, जम्मू-कश्मीर और पंजाब में आतंकवाद को बढ़ावा देने में पाकिस्तान की भूमिका के संदर्भ में भारत-पाक संबंध तथा मादक पदार्थों और नशीली दवाओं के तस्करों को पाकिस्तान की सहायता की ओर भी दुनिया का ध्यान आकृष्ट कराया गया। इसके अलावा नयी आर्थिक नीति के व्यापक प्रचार के लिए सामान्य विदेश प्रसारण सेवा (अंग्रेजी और हिन्दी) को और सशक्त बनाया गया।

4.11.4. 14 अप्रैल, 1993 से सार्क देशों, पश्चिम एशिया, खाड़ी और दक्षिण पूर्व एशिया की ओर प्रसारण करने वाले ट्रांसमीटरों से घरेलू सेवा के समाचारों का प्रसारण किया जा रहा है। रात नौ बजे का राष्ट्रीय प्रसारण में प्रसारित होने वाला अंग्रेजी बुलेटिन अब विदेश सेवा प्रभाग के ट्रांसमीटर से भी विदेशों को रिले किया जा रहा है।

4.11.5. विदेश सेवा प्रभाग सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत करीब 100 देशों और विदेशी प्रसारण संगठनों को संगीत, मौखिक-शब्द कार्यक्रम तथा अन्य कार्यक्रमों की रिकार्डिंग उपलब्ध कराता है। यह हर शनिवार को संयुक्त राष्ट्र के समाचार दुनिया के विभिन्न भागों को रिले करता है।

4.11.6. प्रभाग कार्यक्रमों संबंधी सूचनाएं देने के लिए स्वतंत्र रूप से 'इंडिया कालिंग' नाम की एक अंग्रेजी पत्रिका हर महीने प्रकाशित करता है। इसमें विदेश सेवा के अंतर्गत प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की पूर्व सूचना दी जाती है। यह पत्रिका विदेशी श्रोताओं को मुफ्त बांटी जाती है। इसमें कुछ चुनी हुई वार्ताएं, श्रोताओं के पत्र तथा अन्य सूचनाएं भी रहती हैं। इसके अलावा प्रमुख विदेशी भाषाओं में त्रैमासिक फोल्डर भी प्रकाशित किए जाते हैं।

आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार

4.12. विभिन्न विषयों पर विभिन्न प्रकार के उत्कृष्ट कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए आकाशवाणी की एक पुरस्कार योजना है। ये पुरस्कार परिवार कल्याण पर आधारित कार्यक्रमों, युववाणी कार्यक्रम तथा नई तरह के कार्यक्रमों के निर्माण के लिए दिए जाते हैं। इसी तरह राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों के लिए लासा कौल पुरस्कार दिया जाता है। समाचार भेजने में उत्कृष्ट कार्य के लिए 'वर्ष का संवाददाता' पुरस्कार दिया जाता है। किसी खास समसामयिक विषय पर डाक्यूमेंटरी के लिए भी विशेष पुरस्कार की व्यवस्था है। इस साल का विषय है- एड्स। बच्चों के लिए समूह गान प्रतियोगिता विभिन्न आकाशवाणी केंद्रों पर आयोजित की जाती है। सर्वश्रेष्ठ समूह गायन मंडली को राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्रदान किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ विविध भारती सेवा केंद्र के लिए भी पुरस्कार की व्यवस्था है। इसके अलावा अनुसंधान और विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी श्रेष्ठता पुरस्कार और आकाशवाणी केंद्रों के रखरखाव तथा सज्जा के लिए भी पुरस्कार दिया जाता

है। इस साल से सर्वश्रेष्ठ 'कृषि एवं गृह' कार्यक्रम के लिए भी पुरस्कार शुरू किया जा रहा है।

आकाशवाणी ध्वनि संग्रहालय

4.13. आकाशवाणी के ध्वनि संग्रहालय में वर्ष 1993 में विभिन्न प्रकार के कुल 210 घंटे के कार्यक्रम शामिल किए गए। इनमें शास्त्रीय और लोक संगीत, फीचर, नाटक, सुगम-संगीत, पुरस्कृत कार्यक्रम, स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण, रेडियो आत्मकथा योजना के अंतर्गत साहित्यकारों के साथ भेंटवार्ताएं आदि शामिल हैं। आकाशवाणी के अभिलेखागार में कुल 17,800 घंटे की रिकार्डिंग जमा है। इसमें से 95 प्रतिशत को सूचीबद्ध किया जा चुका है। इस कार्य में कंप्यूटरों का इस्तेमाल किया जा रहा है। कई जाने माने संगीतकारों के एल.पी./कैसेट रिकार्ड जारी किए गए हैं। इनमें कृष्ण शंकर राव पंडित, उस्ताद रजब अली खान, श्रीमती हीराबाई बड़ोदकर, सरस्वती राणे, पं. अनोखेलाल मिश्र (तबला), उस्ताद अहमद जान थिरकवा (तबला), अमर नाथ मिश्र (गायन), बेगम अख्तर, श्रीमती मालिनी राजूरकर (गायन), शरदचंद्र अरोलकर (गायन), उस्ताद अल्ताफ हुसैन खां, विनायक राव पटवर्धन (गायन), श्रीमती शारदाबाई कराडगेकर (गायन), रसिकलाल अंधारिया (गायन) और पंडित नारायण राव व्यास एवं विनायक राव पटवर्धन (युगल गायन) शामिल हैं। श्री विश्वंभर नाथ पांडे की रेडियो आत्मकथा की रिकार्डिंग भी आकाशवाणी संग्रहालय में शामिल की गयी है। इसके अलावा श्री वी.वी. सुब्रह्मण्यम, अंगमातिक के.जे. जोस, डा. टी.के. मूर्ति, शेख महबूब सबानी और कालिशा बी महबूब तथा टी.वी. शंकरनारायण के संगीत की रिकार्डिंग, श्री एन.ए. पालकीवाला के सरदार पटेल व्याख्यानमाला के अंतर्गत भाषण और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद व्याख्यानमाला के अंतर्गत श्री अटल बिहारी बाजपेयी का भाषण भी इस दौरान संग्रहालय में जमा कराये गये हैं।

ट्रांसक्रिप्शन एकांश

4.14. इस एकांश ने अप्रैल 1993 से दिसंबर 1993 तक राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के भाषणों की 140 घंटे की रिकार्डिंग को लिपिबद्ध किया। इस सामग्री को आकाशवाणी संग्रहालय में जिल्दबंद खंडों में स्थायी रूप से सुरक्षित रखा जाता है। रिकार्डिंग तथा लिपिबद्ध सामग्री राष्ट्रपति-सचिवालय और प्रधानमंत्री कार्यालय में भी नियमित रूप से भेजी जाती है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय की विभिन्न मीडिया इकाइयों से अनुरोध प्राप्त होने पर यह सामग्री उन्हें भी उपलब्ध करायी जाती है। विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत यह एकांश आकाशवाणी केंद्रों को विदेशों से प्राप्त पत्रिका जैसे 'वर्ल्ड ऑफ साइंस', 'वूमेन', 'अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका' आदि उपलब्ध कराता है। अप्रैल से दिसम्बर 1993 तक आकाशवाणी के 380 पश्चिमी संगीत की 1371 डिस्कें विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों को उपलब्ध कराई गई।

कार्यक्रम विनिमय एकांश

4.15. कार्यक्रम विनिमय एकांश के संग्रहालय में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों से संबंधित रिकार्डेड सामग्री जैसे नाटक, भाषाओं के पाठ, समूह गान, भक्ति संगीत, सुगम संगीत और लोक संगीत, भारत की सांस्कृतिक विरासत के बारे में कार्यक्रम उपलब्ध रहते हैं। इन्हें विभिन्न आकाशवाणी केंद्रों को इनसैट-1डी उपग्रह के आर.एन.-1 चैनल के जरिए भेजा

जाता है। अप्रैल 1993 से दिसम्बर 1993 तक 140 घंटे के कार्यक्रम उपग्रह के माध्यम से आकाशवाणी केंद्रों को भेजे गये। नये और निर्माणाधीन केंद्रों से परीक्षण-प्रसारण के लिए सामग्री तथा किसी जाने माने व्यक्ति के निधन पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम भी इस एकांश ने उपलब्ध कराए। एकांश के पुस्तकालय तथा संग्रहालय में उपलब्ध कार्यक्रमों के बारे में एक द्विमासिक बुलेटिन भी प्रकाशित किया जाता है जिसे सभी आकाशवाणी केंद्रों में भेजा जाता है।

कर्मचारी प्रशिक्षण

4.16. कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम) की स्थापना 1948 में दिल्ली में की गयी। यह संस्थान विभिन्न संवर्गों के कार्यक्रम कर्मचारियों और प्रशासनिक कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके अलावा आकाशवाणी के हैदराबाद, शिलांग, अहमदाबाद, कटक, तिरुअनन्तपुरम और लखनऊ स्थित क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र संबंधित क्षेत्र की आवश्यकता पूरी कर रहे हैं। संस्थान हर साल औसतन 40 प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है जिनमें 800 कार्यक्रम अधिकारियों के प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध रहती है। अप्रैल से दिसम्बर 1993 तक 25 प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाये गये। जनवरी 1994 से मार्च 1994 तक 15 और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने की योजना है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम परियोजना

4.17. प्रशिक्षण सुविधाओं में विस्तार के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से एक परियोजना चलायी जा रही है जिसकी लागत 6 लाख 34 हजार डालर है। इस परियोजना के लिए सभी उपकरण प्राप्त हो गए हैं। केंद्र सरकार ने दिल्ली के कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान में वर्तमान प्रशिक्षण सुविधाओं के विस्तार के लिए 3.14 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। भुवनेश्वर में एक और संस्थान खोलने की स्वीकृति सरकार ने दे दी है।

श्रोता अनुसंधान एकांश

4.18. श्रोता अनुसंधान एकांश आकाशवाणी के सभी प्रभागों और इकाइयों (जिनमें विविध भारती और विदेश सेवा प्रभाग भी शामिल हैं) की अनुसंधान और फीडबैक संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह श्रोताओं की संख्या तथा स्वरूप, कार्यक्रम की गुणवत्ता के बारे में श्रोताओं की प्रतिक्रिया तथा कार्यक्रमों के लक्ष्य-श्रोताओं पर इसके असर का भी मूल्यांकन कर आंकड़े उपलब्ध कराता है। इन आंकड़ों के आधार पर कार्यक्रम निर्माण तथा प्रसारण संबंधी सुधार किए जाते हैं। आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों में 43 श्रोता अनुसंधान एकांश कार्य कर रहे हैं। इनके अलावा आंचलिक केंद्रों यानि दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, शिलांग, इलाहाबाद और मद्रास में 6 सचल इकाइयां भी कार्य कर रही हैं। विज्ञापन प्रसारण सेवा की एक अलग श्रोता अनुसंधान इकाई बम्बई में कार्य कर रही है। इस वर्ष श्रोता अनुसंधान एकांश ने 16 बड़े सर्वेक्षण कार्य पूरे किए। वर्ष की शेष अवधि में 14 और सर्वेक्षणों की योजना है।

अनुसंधान तथा विकास गतिविधियां— सारांश

4.19.1. आकाशवाणी का अनुसंधान एकांश प्रसारण उपकरण प्रणालियों के बारे में व्यावहारिक अनुसंधान और विकास कार्यों से रेडियो और टेलीविजन जैसे महत्वपूर्ण प्रसारण

संगठनों को तकनीकी विशेषज्ञता उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एकांश आधुनिकतम तकनीकों का इस्तेमाल कर रहा है। ये सब गतिविधियां देश की प्रसारण प्रणाली में गुणात्मक सुधार लाने तथा प्रसारण इंजीनियरी के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों के विकास और उपयोग के अनुसंधान विभाग के बुनियादी लक्ष्यों के अनुरूप हैं।

4.19.2. इस विभाग को कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां हुई हैं। विभाग ने सुबह और शाम के समाचारों के प्रसारण के लिए कंप्यूटर पर आधारित एक प्ले बैक प्रणाली तैयार की है और पुणे के एफ.एम. ट्रांसमीटर के लिए टेलीमीट्री प्रणाली विकसित की है। रेडियो टैक्स्ट ट्रांसमिशन के जरिए शिक्षा और सूचना सेवा शुरू की गयी है। इसके अलावा विभाग ने डायनामिक कैरियर कंट्रोलर, दूरदर्शन लोगो जेनरेटर, फोन-इन-प्रोग्राम सिस्टम, घोस्ट कैंसेलेशन एंटेना, सी/एस बैंड टी.वी.आर.ओ. जेनरेटर, टी.वी. ट्रांसमीटरों के लिए अल्ट्रा इाई फ्रीक्वेंसी एंटीना, मौसम की जानकारी देने के लिए ग्राफिक प्रणाली तथा रेडियो और टेलीविजन कवरेज मैप विकसित किये हैं।

4.19.3. अनुसंधान विभाग प्रसारण प्रणाली के लिए विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध करा रहा है ताकि परीक्षणों के जरिए नयी टेक्नोलाजी इस्तेमाल की जा सके। विभाग प्रसारण प्रणाली में इस टेक्नोलाजी के प्रयोग के तौर-तरीकों का भी पता लगा रहा है।

4.19.4 संयुक्तराष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से देश में कार्यक्रम-III (1986-90) के अन्तर्गत विभाग में प्रसारण सम्बन्धी डिजिटल तकनीक केन्द्र की स्थापना की गई है। यह केन्द्र डिजिटल तकनीकों के जरिए अति आधुनिक उपकरण और सिस्टम विकसित करने के काम में लगा है।

4.19.5. अनुसंधान विभाग ने कई प्रणालियां विकसित की हैं: (1) अति उच्च आवृत्ति (वी.एच.एफ.)- एम.एम. ट्रांसमीटर पर श्रृव्य कार्यक्रमों के साथ-साथ आंकड़े भेजने में काम आने वाली रेडियो आंकड़ा प्रणाली; (2) देश के दूर-दराज के इलाकों में स्थित बिना किसी चालक के काम करने वाले कम शक्ति के टेलीविजन ट्रांसमीटरों और एफ.एम. ट्रांसमीटरों पर नियंत्रण तथा निगरानी के लिए उपग्रह पर आधारित टेलीमीट्री प्रणाली; (3) बम्बई से विज्ञापन प्रसारण सेवा के कार्यक्रमों को देश के सभी विज्ञापन प्रसारण सेवा केंद्रों से सीधा जोड़ने तथा इसके साथ-साथ स्थानीय विज्ञापनों को भी कार्यक्रम में शामिल करने की सुविधा उपलब्ध कराने वाली कंप्यूटर पर आधारित प्रणाली; (4) विभाग ने विभिन्न प्रकार के शार्ट वेव ट्रांसमीटरों को सिंक्रोनाइज करने के लिए प्रयोग किए हैं। सामान्य कोड रिसीवर से अत्यंत स्पष्ट सी.डी. गुणवत्ता वाली ध्वनि उपग्रह या भू-ट्रांसमीटर से प्राप्त की जा सकती है; (5) प्रस्तावित 'डिजिटल वीडियो संग्रहालय' में दूरदर्शन के बहुमूल्य कार्यक्रम सामग्री को सुरक्षित रखा जा सकेगा। इसमें पुरातात्विक महत्व के कार्यक्रमों में मैगनेटिक वीडियो टेपों से आधुनिकतम वीडियो कम्प्रैशन तकनीक के जरिए आप्टिकल डिस्क में बदला जा सकेगा।

अन्य गतिविधियां

4.20.1. सितम्बर 1993 में महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में आया भूकम्प काफी विनाशकारी था। आकाशवाणी ने अपने श्रोताओं को मृतकों के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा चलाए गए राहत और बचाव कार्यों की जानकारी

देने के लिए व्यापक प्रबंध किए। राष्ट्रीय हुक-अप पर प्रसारित समाचारों तथा अन्य कार्यक्रमों के अलावा संबंधित राज्यों के आकाशवाणी केंद्रों ने इनके क्षेत्रीय भाषाओं में प्रसारण के लिए जोरदार प्रयास किए ताकि इस दैवी आपदा के बारे में लोगों को जल्द-से-जल्द और पूरे विस्तार से जानकारी मिल सके।

4.20.2. आकाशवाणी ने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम और दिल्ली में नवम्बर, 1993 में हुए विधान सभा चुनावों के बारे में समाचार देने की पूरी व्यवस्था की।

4.20.3. इस वर्ष का सरदार पटेल स्मारक व्याख्यान भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष श्री वसंत साठे ने 30 अक्तूबर, 1993 को नागपुर में दिया। इसका विषय था— राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए खतरा। इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता जाने-माने विचारक और लेखक श्री राजमोहन गांधी ने की। 1993 का डा. राजेन्द्र प्रसाद व्याख्यान डाक्टर कर्ण सिंह ने दिल्ली में 25 और 26 नवंबर को दिया। ये दोनों व्याख्यान राष्ट्रीय हुक-अप पर 2 और 3 दिसंबर को प्रसारित किए गए।

4.20.4. गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आकाशवाणी से सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। विभिन्न भाषाओं की कविताओं का हिन्दी अनुवाद राष्ट्रीय नेटवर्क पर तथा क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद क्षेत्रीय/आंचलिक आकाशवाणी केंद्र से प्रसारित किया जाता है। संबंधित क्षेत्र के अन्य आकाशवाणी केंद्र इसे रिले करते हैं। इस साल का सर्वभाषा कवि सम्मेलन लखनऊ में आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष आयोजित किया गया। इसमें भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के 15 सुप्रसिद्ध कवियों ने हिस्सा लिया।

4.20.5. सरकार विभिन्न सेवाओं में सीधी भर्ती से भरे जाने वाले अनुसूचित जातियों/जनजातियों के खाली पदों को भरने के लिए 1990 से विशष भर्ती अभियान चला रही है। चौथा विशेष भर्ती अभियान इस साल शुरू किया गया है।

4.20.6. आकाशवाणी के अधिकारियों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लेने विदेशों में भेजा जाता है। उन्हें प्रसारण के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों/विकास गतिविधियों के बारे में अवगत कराने के लिए ए.आई.बी.डी., ए.बी.यू., सी.सी.आई.आर., ई.बी.यू., सी.बी.ए., ए.एम.आई.सी., बी.ओ.एन.ए.सी. जैसे प्रशिक्षण तथा प्रसारण संगठनों द्वारा आयोजित विचार गोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं, बैठकों में भेजा जाता है। चालू वर्ष में 12 अधिकारी विदेशों में भेजे जा चुके हैं। इस वित्त वर्ष में विदेशों में भेजे गए अधिकारियों की संख्या करीब 18 होने की संभावना है।

4.20.7. आठवीं योजना (1992-97) में साफ्टवेयर विकास कार्यक्रम को भारी बढ़ावा मिला है और इसके अंतर्गत आठ नई योजनाएं मंजूर की गयी है। योजनाएं इस प्रकार हैं: (1) किशोरावस्था की समस्या, (2) डिस्क की खरीद, (3) 'चित्रलेखा' का नाट्य शैली में वाचन, (4) अलाई ओसाइ का नाट्य वाचन, (5) 'सूरज मुखीर स्वप्न' का नाट्य वाचन, (6) 'नंगरनी' का नाट्य वाचन, (7) 'गणदेवता' का नाट्य वाचन और (8) आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग में हिन्दी समाचार पूल।

अध्याय 5

दूरदर्शन

नेटवर्क

5.1.1. दूरदर्शन अपने 31 कार्यक्रम निर्माण केंद्रों और अलग-अलग शक्ति के 562 ट्रान्समीटरों की सहायता से देश के लगभग 84 प्रतिशत लोगों तक अपने कार्यक्रम पहुंचा रहा है और यह विश्व के प्रमुख टेलीविजन संगठनों में गिना जाने लगा है। दूरदर्शन के ट्रान्समीटरों का ब्यौरा इस प्रकार है:-

1. उच्च शक्ति के ट्रान्समीटर: 69
2. कम शक्ति के ट्रान्समीटर: 388
3. बहुत कम शक्ति के ट्रान्समीटर: 82
4. ट्रान्सपोजर: 23

5.1.2. 15 अगस्त 1993 से 5 उपग्रह चैनल चालू होना 1993-94 के दौरान दूरदर्शन की एक प्रमुख उपलब्धि रही। मनोरंजन चैनल के अलावा अन्य चैनल हैं- संगीत, खेल, ज्ञान तथा व्यापार और सामयिक विषय। इसके लिए दिल्ली में उपग्रह अपलिंकिंग तथा प्लेबैक सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। केरल और उत्तर प्रदेश में उपग्रह आधारित क्षेत्रीय सेवाएं शुरू की गई हैं तथा जयपुर और भोपाल में उपग्रह अपलिंक चालू हो गए हैं। 2 अक्तूबर 1993 से इन चैनलों पर राज्य स्तर की क्षेत्रीय सेवाओं के कार्यक्रम प्रसारित होने लगे हैं। संसदीय कार्यवाही के दूरदर्शन पर दिखाने के लिए संसद भवन में कार्यक्रम निर्माण सुविधाओं (आंतरिक) की व्यवस्था कर दी गई है।

5.1.3. नवंबर 1993 में राज्य विधानसभाओं के चुनाव परिणामों के प्रसारण के लिए दूरदर्शन ने व्यापक प्रबंध किए। संचार संबंधी आवश्यकताएं पूरी करने के उद्देश्य से हॉट लाइनों तथा एक्सचेंज टेलीफोनों के व्यापक संचार तंत्र की स्थापना की गई।

5.1.4. पहली अप्रैल 1993 से 6 जनवरी, 1994 के बीच डिब्रूगढ़, सिलचर, इम्फाल, शिलांग और तुरा में स्टूडियो केंद्र, जम्मू में कार्यक्रम निर्माण सुविधा केंद्र और गुवाहाटी में कार्यक्रम निर्माण एवं फीड केंद्र की स्थापना की गई। दूरदर्शन के प्रसारण क्षेत्र के विस्तार के लिए बूंदी और भुज में (1 कि.वा. अंतरिम व्यवस्था) उच्च शक्ति के 2 ट्रांसमीटर तथा कम शक्ति के 18 ट्रांसमीटर झारग्राम, पुरुलिया, गडवाल, जगतियाल, गोलाघाट, रसरा, खामगांव, गिदालुर, ढेंकनाल, बगलकोट, सिद्धपेट, कामाख्यानगर, देवगढ़, नौरंगपुर, पदमपुरम, पदमपुर, विलियमनगर और अत्माकुर में लगाए गए। बहुत कम शक्ति के दो ट्रांसमीटर झालदा तथा एगरा में चालू किए गए। जबलपुर केंद्र की क्षमता 1 कि.वा. से बढ़ाकर 10 कि.वा. कर दी गई है। उपग्रह चैनल कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए 4 ट्रांसमीटर दिल्ली में तथा मैट्रो चैनल के कार्यक्रम रिले करने के लिए एक-एक ट्रांसमीटर लखनऊ तथा हैदराबाद में लगाया गया है। इसके अलावा गंगतोक (11 कि.वा.), जैसलमेर (10 कि.वा.), शिमला (1 कि.वा.) तथा कालीकट (1 कि.वा. अंतरिम) में उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर लगाने का काम पूरा कर लिया गया है और कम शक्ति के 26 ट्रांसमीटर तकनीकी दृष्टि से चालू होने के लिए तैयार हैं, जो श्रीडूंगरगढ़, गंगापुर, रियासी, बोंगईगांव, उत्तर-

लखीमपुर, गोड्डा, पावागडा, राजापलयम, हाफलांग, हज़ारीबाग़, लोहारडागा, सुजानगढ़, हिन्दुपुर, अल्लागड्डा, गंगावटी, मांड्या, कुप्पम, तंदुर, चंपावत, मोहम्मदाबाद, सिकन्दरपुर, भीमावरम, अर्काट, औरंगाबाद, खम्बात और हिंगनघाट में लगाए गए हैं। देवगढ़ तथा कुम्बलगढ़ में भी कम शक्ति का एक-एक ट्रांसमीटर चालू करने के लिए तैयार है।

5.1.5. 1994-95 के लिए निर्धारित लक्ष्यों में उच्च शक्ति के 8 ट्रांसमीटर रामेश्वरम, नांदयाल, कुरनूल, मऊ, लेह, मोकोकचुंग, चूड़ाचांदपुर और लुंगलेई में तथा देश के विभिन्न भागों में बड़ी संख्या में कम शक्ति/बहुत कम शक्ति के ट्रांसमीटर लगाना, कलकत्ता में दूसरे चैनल का स्टूडियो खोलना, पटना में स्टूडियो की स्थायी व्यवस्था, शिमला में स्टूडियो केंद्र खोलना तथा सिलिगुड़ी में कार्यक्रम निर्माण सुविधा स्थापित करना शामिल है।

उपग्रह चैनल

5.2.1. दूरदर्शन ने 26 जनवरी 1993 को प्रायोगिक आधार पर मैट्रोआवर का शुभारम्भ किया। इसके अंतर्गत चारों महानगरों के दूसरे चैनल पर निजी कंपनियों द्वारा मनोरंजक कार्यक्रमों (अपने निर्माण/प्राप्त कार्यकम) के प्रसारण के लिए समय निर्धारित किया गया। यह समय रात 8.00 बजे से 10.00 बजे तक था और इस समय के दौरान प्रसारित कार्यक्रमों को 'इनसेट 2 ए' से अपलिंक किया गया ताकि सारे देश में 'डिश एंटीना' की मदद से इन्हें देखा जा सके। इनसेट 2 बी के सफल प्रक्षेपण के बाद अब घरेलू उपग्रह की सहायता से और अधिक टी.वी. कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा सकेगा। मनोरंजन चैनल के कार्यक्रम काफी पसंद किए गए हैं और इन्हें देश के अन्य भागों में भी ट्रांसमीटरों के जरिए प्रसारित करने की मांग की जा रही है ताकि इन्हें डिश एंटीना की मदद के बिना देखा जा सके। एक अतिरिक्त ट्रांसमीटर लखनऊ में पहले ही लगाया जा चुका है। एक फरवरी, 1994 से पांच चैनलों के कार्यक्रमों में परिवर्तन किया गया है। इस समय प्राथमिक चैनल (डी-1) के अलावा दूरदर्शन के निम्नलिखित चैनल हैं:-

डी-2 : मनोरंजन/मैट्रो चैनल

डी-3 : मनोरंजन निश्चित दर्शक वर्ग चैनल

डी-4 : क्षेत्रीय भाषा चैनल (कन्नड़, मलयामम, तमिल, तेलुगू)

डी-5 : तदैव (असमिया/बंगला/उड़िया)

डी-6 : तदैव (पंजाबी/मराठी/गुजराती/कश्मीरी)

5.2.2. उपग्रह क्षेत्रीय भाषा सेवाएं एक अक्तूबर, 1993 को प्रायोगिक आधार पर 10 भाषाओं में शुरू हुई, जिनके अंतर्गत चार उपग्रह चैनलों पर सोमवार से शुक्रवार तक मुख्यतया दिन के समय प्रत्येक भाषा में ढाई घंटे के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। प्रारंभ में इसके अंतर्गत असमिया तथा अन्य पूर्वोत्तर भाषाओं— बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, तमिल और तेलुगू को लिया गया है। इन उपग्रह चैनलों पर इन भाषाओं के कार्यक्रम, संबंधित केंद्रों द्वारा कैप्सूल रूप में तैयार किए जाते हैं, जिन्हें दिल्ली में उपग्रह से अपलिंक किया जाता है। प्रमुख क्षेत्रीय केंद्रों और रिले केंद्रों से कहा गया है कि वे अपने खाली समय में क्षेत्रीय भाषा सेवा के कार्यक्रम प्रसारित करें। इस सेवा के कार्यक्रम दिल्ली में ट्रांसमीटरों के माध्यम से प्रसारित किए जाते हैं। एक फरवरी, 1994 से तीन उपग्रह चैनलों (डी-4, डी-5, डी-6) पर सवेरे 7.00 बजे से रात 11.00 बजे

भारत
दूरदर्शन केन्द्र [प्रेषित्र सहित]
[31 जनवरी, 1994 तक]
पाकिस्तान
जम्मू और कश्मीर
श्रीनगर
जम्मू
शिमला
जालंधर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
चंडीगढ़
पटियाला
हरियाणा
हिसार
दिल्ली
बरेली
नेपाल
उत्तर प्रदेश
राजस्थान
जयपुर
लखनऊ
गोरखपुर
ग्वालियर
मथुरा
मऊ
मुज्जफरपुर
उदयपुर
इलाहाबाद
पटना
वाराणसी
बिहार
डालटनगंज
गुजरात
अहमदाबाद
भोपाल
मध्यप्रदेश
रांची
पश्चिम बंगाल
कलकत्ता
राजकोट
नागपुर
रायपुर
सम्बलपुर
उड़ीसा
कटक
भुवनेश्वर
दमन और द्वीप
महाराष्ट्र
बम्बई
पुणे
दादर और नगर हवेली
जगदलपुर
वारंगल
हैदराबाद
गुलबर्गा
विजयवाड़ा
पणजी
गोवा
कर्नाटक
आंध्रप्रदेश
बंगलौर
मद्रास
तमिलनाडु
पांडिचेरी
केरल
त्रिचूर
लक्षद्वीप [भारत]
त्रिवेन्द्रम
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
सिक्किम
गंगटोक
ईटानगर
डिब्रूगढ़
सिलीगुड़ी
गुवाहाटी
असम
नागालैंड
कोहिमा
शिलांग
मेघालय
इम्फाल
मणिपुर
शांतिनिकेतन
अगरतला
त्रिपुरा
मिजोरम
बंगला देश
पोर्टब्लेयर
अंडमान निकोबार द्वीप समूह [भारत]
श्रीलंका
संकेत :
विद्यमान कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
प्रस्तावित कार्यक्रम निर्माण केन्द्र
राज्य में विद्यमान दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
राज्य में प्रस्तावित/कार्यान्वयनाधीन दूरदर्शन प्रेषित्रों की संख्या
भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र पर आधारित

तक विभिन्न भाषाओं के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। दोपहर 12.00 बजे से 12.30 बजे तक और फिर दोपहर बाद 3.30 बजे से 5.00 बजे तक दो बार विराम रहता है।

राष्ट्रीय कार्यक्रम

5.3. 15 अगस्त 1982 से शुरू हुआ राष्ट्रीय कार्यक्रम रात 8.30 बजे से 11.30 बजे तक प्रसारित होता है। हर बुधवार को पुरस्कार प्राप्त/पुरानी श्रेष्ठ फिल्मों तथा हर शुक्रवार को देर रात/कला फिल्मों को प्रसारित करने के लिए प्रसारण का समय रात 11.30 से आगे बढ़ा दिया जाता है। रात 9.00 बजे से 10.00 बजे तक एक घंटे का मनोरंजन समय रहता है। मुख्य समय यानी प्राइम टाइम पर धारावाहिक प्रसारणों के अलावा राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारित किए जाने वाले अन्य कार्यक्रमों में हिन्दी और अंग्रेजी में सामयिक विषयों पर कार्यक्रम, संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम और क्षेत्रीय सुगम तथा लोकसंगीत के कार्यक्रम, नृत्य/बैले/ अंग्रेजी के धारावाहिक, वृत्त चित्र, नयी आर्थिक नीति, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, परिवार कल्याण, पर्यावरण, विकास कार्यक्रम, क्विज, टैली-फिल्म, कवि-सम्मेलन और मुशायरे तथा टी.वी. शो आदि कार्यक्रम शामिल हैं। हिन्दी और अंग्रेजी के प्रमुख समाचार बुलेटिन आधे-आधे घंटे के होते हैं। हिंदी समाचार रात 8.30 बजे तथा अंग्रेजी समाचार 10.00 बजे प्रसारित होते हैं। जब संसद का अधिवेशन चल रहा होता है तो संसद-समाचार और टुडे इन पार्लियामेंट प्रसारित होता है और इन दोनों की अवधि अब 15-15 मिनट हो गई है। एक फरवरी, 1994 से संसद समाचार तथा 'टुडे इन पार्लियामेंट' को क्रमश: 8.30 बजे तथा 10.00 बजे के बुलेटिन के साथ प्रसारित किया जा रहा है।

प्रात: प्रसारण

5.4. प्रात:-प्रसारण 23 फरवरी 1987 को शुरू हुआ। यह सवेरे 6.55 पर प्रारम्भ होता है और सामान्यतया 9.00 बजे तक चलता है। इसमें आम तौर पर हल्के-फुल्के कार्यक्रम, कम अवधि वाले धारावाहिक, भेटवार्ताएं, लघु वृत्तचित्र, स्वास्थ्य चर्चा, संगीत, कार्टून, फिल्मी गीत, आर्थिक पत्रिका तथा सामयिक विषयों के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। सवेरे 7.00 बजे हिन्दी में तथा 8.10 पर अंग्रेजी समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। इसके अलावा 8.20 बजे 'वर्ल्ड न्यूज़' प्रसारित किए जाते हैं। जिन दिनों संसद की बैठक होती है, 7.15 से पिछले दिन के 'प्रश्नकाल' की रिकार्डिंग 'यस्टर्डे इन पार्लियामेंट' के अंतर्गत प्रसारित की जाती है। सवेरे 9.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक नेटवर्क कार्यक्रम के अंतर्गत धारावाहिक, कार्टून कार्यक्रम, खेल कार्यक्रम तथा संगीत/नृत्य कार्यक्रम दिखाए जाते हैं।

अपराह्न प्रसारण

5.5. अपराह्न प्रसारण 26 जनवरी 1989 से प्रारम्भ हुआ। रविवार, मंगलवार तथा शनिवार को छोड़कर अन्य दिनों इसका समय दोपहर बाद 2.00 बजे से 4.00 बजे तक रहता है। रविवार को यह 1.00 बजे बच्चों के कार्यक्रम के साथ प्रारंभ होता है। प्रसारण मुख्यतया बच्चों, महिलाओं तथा वृद्धजनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है जो ऐसे समय पर घरों में मौजूद रहते हैं। मंगलवार को 2.10 पर हिन्दी फिल्म दिखाई जाती है जो आमतौर पर 5.00 बजे तक चलती है। शनिवार को प्रसारण 5.15 बजे तक चलता है और प्रयोजित कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। प्रतिदिन 2.00 बजे हिंदी में तथा 3.00 बजे अंग्रेजी में समाचार प्रसारित किए जाते हैं। हर रविवार को 1.15 बजे मूक एवं बधिरों

के लिए साप्ताहिक 'समाचार पत्रिका' प्रसारित की जाती है।

सांध्य प्रसारण

5.6. शाम 8.30 बजे का समय प्रादेशिक केन्द्रों के लिए निर्धारित किया गया है, जिसमें वे सम्बद्ध प्रादेशिक भाषाओं में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

सीधा प्रसारण

5.7. वर्ष के दौरान दूरदर्शन ने प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की।

कमीशंड कार्यक्रम

5.8.1. दूरदर्शन विशेष साफ्टवेयर योजनाओं के अंतर्गत बाहरी कार्यक्रम निर्माताओं को कार्यक्रम बनाने का दायित्व सौंपता है और उन्हें धनराशि उपलब्ध कराता है। इसका मुख्य उद्देश्य अच्छे कार्यक्रम बनाने के लिए प्रोड्यूसरों को प्रोत्साहित करना तथा उनकी सूची बनाना है।

5.8.2. इस श्रेणी में समाचार और सामयिक विषय, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, समाज कल्याण, लोकतंत्र व धर्मनिरपेक्षता, महिलाओं, बच्चों, युवकों व वृद्धजनों से संबंधित विषय, विज्ञान तथा टेक्नोलाजी, खेल-कूद, संगीत एवं नृत्य, समाज में सांस्कृतिक प्रवृत्तियां, जनजातियों व पिछड़े वर्गों का कल्याण, स्वास्थ्य, स्वच्छता व परिवार कल्याण, जयंतियां, त्यौहार, शताब्दियां तथा विशेष अभियान शामिल है। ये कार्यक्रम टेलिफिल्म, धारावाहिक, कथाचित्र, वृत्तचित्र, समाचार कार्यक्रम, भेंटवार्ता, क्षेत्र आधारित कार्यक्रम आदि विधाओं में प्रसारित किए जाते हैं।

5.8.3. सरकार ने केन्द्र तथा क्षेत्रीय स्तर पर बाहरी प्रोड्यूसरों के कार्यक्रमों के प्रस्ताव स्वीकार करने और उन पर विचार करने के संबंध में नए दिशा-निर्देश तैयार किए हैं। केन्द्रों में प्राप्त होने वाले कार्यक्रमों की मंजूरी देने की प्रक्रिया को तय करने के उद्देश्य से 14 प्रमुख केन्द्रों के निदेशकों के वित्तीय अधिकार बढ़ा दिए गए हैं।

प्रायोजित कार्यक्रम

5.9.1. प्रयोजित कार्यक्रम योजना के अंतर्गत प्रोड्यूसर को कार्यक्रमों की उत्पादन-लागत को वहन करना पड़ता है। इसके अलावा उसे समय-समय पर तैयार किए गए स्वीकृत रेट कार्ड के अनुसार दूरदर्शन को शुल्क अदा करना पड़ता है। उसके बदले में प्रोड्यूसर/प्रायोजक को कर-मुक्त विज्ञापन समय प्राप्त होता है।

5.9.2. नई प्रायोजित योजना के अंतर्गत अक्तूबर 1990 में बाहरी निर्माताओं तथा प्रोफेशनल लोगों की ओर से विभिन्न श्रेणियों के कार्यक्रमों के 3544 प्रस्ताव प्राप्त हुए। दूरदर्शन से बाहर के विशेषज्ञों ने इन प्रस्तावों की पांडुलिपियों की जांच करके उनके ए+, ए, बी+, आदि स्तर निर्धारित किए। ए+स्तर वाले प्रस्तावों को प्राथमिकता दी गई और कंप्यूटर की मदद से लाटरी निकाल कर 120 निर्माताओं का चयन पायलट तैयार करने के लिए किया गया। इनमें से दो निर्माता ऐसे थे, जिनके दो धारावाहिक निर्माण-प्रक्रिया में शामिल कर लिए गए थे। अत: 118 निर्माताओं से पायलट तैयार करने को कहा गया। लगभग 100 पायलट प्राप्त हो गए हैं और उनकी समीक्षा की जा रही है। इस योजना के अंतर्गत अनुमोदित कुछ धारावाहिकों को आवंटित किए जाने की प्रक्रिया चल रही है।

5.9.3. सप्ताह भर में प्रसारित होने वाले प्रायोजित कार्यक्रमों के विषयों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है। इनमें राष्ट्रीय एकता, विकास, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा

सांस्कृतिक विषय, हास्य-प्रधान जासूसी कार्यक्रम, कालातीत रचनाएं आदि शामिल हैं। कुछ क्षेत्रीय केन्द्र भी, अपने क्षेत्रीय प्रसारण में अपनी-अपनी भाषाओं में प्रायोजित धारावाहिक प्रसारित करते हैं।

फिल्म आधारित कार्यक्रम

5.10. दूरदर्शन के प्रारम्भिक समय से ही मनोरंजक कार्यकमों में कथा—चित्रों का प्रमुख स्थान रहा है। राष्ट्रीय नेटवर्क पर हिन्दी फिल्में शनिवार (5.15 बजे) तथा मंगलवार (2.10 को), पुरस्कृत फिल्म/पुरानी प्रसिद्ध/ अंग्रेजी फिल्म बुधवार को (रात 10.30 बजे), वयस्क फिल्म शुक्रवार को (रात 10.30 बजे) और क्षेत्रीय भाषा फिल्म शनिवार को (दोपहर बाद 1.30 बजे) दिखाई जाती हैं। हर चौथे मंगलवार को दोपहर बाद (2.10 बजे) बाल फिल्म प्रसारित की जाती है। दिल्ली और रिले केन्द्रों से रविवार शाम को भी हिन्दी फिल्म प्रसारित की जाती है। क्षेत्रीय केन्द्र रविवार को शाम 5.30 बजे अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषा में फिल्म प्रसारित करते हैं। राष्ट्रीय नेटवर्क पर हिन्दी फिल्मों के गीत और संगीत के कार्यक्रम 'चित्रहार' तथा 'रंगोली' और क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों के गीतों का कार्यक्रम 'चित्रमाला' प्रस्तुत किया जाता है। इसके अलावा क्षेत्रीय केन्द्र भी अपने क्षेत्र की भाषाओं के फिल्मी गीत-संगीत के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। वर्ष के दौरान राष्ट्रीय नेटवर्क पर कथाचित्र के प्रसारण को प्रायोजित करने की पद्धति लागू की गई।

विज्ञापन सेवा

5.11.1. दूरदर्शन पर विज्ञापन सेवा 1976 में शुरू की गयी। राष्ट्रीय नेटवर्क के अलावा विज्ञापन और प्रायोजित कार्यक्रम 14 केन्द्रों से प्रसारित किए जाते हैं। ये हैं (1) दिल्ली चैनल I और II, (2) कलकत्ता चैनल I और II, (3) मद्रास चैनल I और II, (4) बम्बई चैनल I और II, (5) हैदराबाद, (6) बंगलौर, (7) जालंधर, (8) लखनऊ, (9) श्रीनगर, (10) तिरुअनन्तपुरम, (11) अहमदाबाद, (12) जयपुर, (13) भोपाल, और (14) मेट्रो-एंटरटेनमेंट सहित उपग्रह चैनल। दिल्ली में दूरदर्शन विज्ञापन सेवा में राष्ट्रीय नेटवर्क, उपग्रह चैनलों तथा सभी केन्द्रों के लिए विज्ञापनों की बुकिंग की जाती है। क्षेत्रीय केन्द्रों के लिए दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रायोजन का काम भी दूरदर्शन विज्ञापन सेवा द्वारा देखा जाता है।

5.11.2. दूरदर्शन वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए विज्ञापन प्रसारित करता है। विज्ञापनों को व्यापारिक विज्ञापन आचार संहिता के अनुसार ही स्वीकार किया जाता है। सिगरेटों, तंबाकू से तैयार चीजों, मादक पदार्थों, शराब तथा अन्य नशीले पदार्थों, गहनों और पान मसालों के विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते।

5.11.3. विज्ञापनों से दूरदर्शन की आय में निरन्तर वृद्धि होती गई है। पिछले दो वर्षों में हुई कुल आमदनी इस प्रकार है:-

वर्ष		आय में निरन्तर वृद्धि (करोड़ों में)
1990-91	:	253.85
1991-92	:	300.61
1992-93	:	360.23
1993-94	:	380.00 (अनुमानित)
1994-95	:	400.00

विशेष अभियान

5.12.1. दूरदर्शन ने वर्ष के दौरान परिवार कल्याण, टीकाकरण, स्वास्थ्य और एड्स, महिलाओं की स्थिति, मद्य-निषेध, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, उपभोक्ता संरक्षण, अस्पृश्यता निवारण, लघु-बचत, ऊर्जा संरक्षण, अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए 15-सूत्री कार्यक्रम, नए आर्थिक उपायों, सार्वजनिक वितरण प्रणाली आदि से सम्बद्ध कार्यक्रमों का नियमित रूप से प्रसारण किया।

5.12.2. दूरदर्शन ने असम, जम्मू-कश्मीर और पंजाब के बारे में विशेष सूचना अभियान चलाया, ताकि इन इलाकों की विकास गतिविधियों को पेश किया जा सके और साम्प्रदायिक सद्भाव तथा राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को प्रस्तुत किया जा सके।

टेलीटेक्स्ट सेवा

5.13. दिल्ली में चल रही टेलीटेक्स्ट सेवा से दर्शकों तक विमान कंपनियों, रेलवे, परिवहन, शेयर बाजार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पर्यटन से संबंधित जानकारी, नवीनतम अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय समाचार और मौसम संबंधी सूचना पहुंचाई जाती रही।

शैक्षिक कार्यक्रम

5.14.1. प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के लिए शैक्षिक टेलीविजन सेवा के अंतर्गत प्रसारण पूर्ववत जारी रहा। शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम केवल निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित नहीं होते, इनमें विभिन्न प्राकर की सूचनाओं के साथ सामान्य दिलचस्पी वाले सभी विषय शामिल किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य प्रत्यक्ष शिक्षण पर जोर देने, केवल पाठ्यक्रमों तक सीमित रहने वाले दृष्टिकोण से अलग हटाने और कक्षा में पुस्तकों के भार को कम करने का है। प्रत्येक कार्यक्रम का समय 45 मिनट से बढ़ाकर 60 मिनट कर दिया गया है।

5.14.2. स्कूल टेलीविजन कार्यक्रम निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार किए जाते हैं। उन्हें केन्द्रों पर सम्बद्ध राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के शिक्षा अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करके तैयार किया जाता है। विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए दूरदर्शन उच्च शिक्षा से सम्बद्ध ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम एक घंटे के लिए प्रसारित करता है जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तैयार करता है। राष्ट्रीय नेटवर्क पर सप्ताह में पांच दिन यह दिन में एक बजे से 2 बजे तक प्रसारित किया जाता है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के सहायक शिक्षा कार्यक्रम प्रायोगिक आधार पर हर सप्ताह सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को प्रात: 6.20 से 6.55 बजे तक प्रसारित किए जाते हैं।

विज्ञान कार्यक्रम

5.15. विज्ञान पत्रिका 'टर्निंग प्वाएंट' प्रत्येक सप्ताह प्रसारित की जा रही है, जिसे बहुत सराहा गया है। दूरदर्शन के दर्शक अनुसंधान सर्वेक्षण ने इसे अब तक के सबसे लोकप्रिय विकासात्मक कार्यक्रमों में से एक माना है। इसमें पर्यावरण विज्ञान/टेक्नालाजी के क्षेत्र में नई उपलब्धियों तथा रोजमर्रा के जीवन में टेक्नोलाजी के उपयोग जैसे विषय लिए जाते हैं। कलकत्ता दूरदर्शन केन्द्र द्वारा तैयार किया गया 'क्विज़' कार्यक्रम महीने में एक बार प्रसारित किया जाता है, जिसमें विज्ञान संबंधी प्रश्न व उत्तर शामिल होते हैं। अब दूरदर्शन को 'टर्निंग प्वाएंट' के हिन्दी के साथ-साथ 10 क्षेत्रीय भाषाओं के रूपांतर प्राप्त हो रहे हैं। यह कार्यक्रम

1994 तक बढ़ा दिया गया है।

महिला कार्यक्रम

5.16. महिलाओं के प्रति भेदभाव, पुरुषों पर उनकी निर्भरता, बाल विवाह की समस्या, बेरोजगारी तथा आजीविका उपार्जन, यौन शोषण और अत्याचार जैसी समस्याओं के समाधान के बारे में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से दूरदर्शन अनेक कार्यक्रम प्रसारित करता है जिनमें धारावाहिक, वृत्त चित्र, टेली फिल्में, लघु विज्ञापन, लघु फिल्में आदि शामिल हैं। 1993 के दौरान महिलाओं के बारे में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कुछ सार्थक तथा शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को काफी सराहा गया। ये हैं:- तीसरी बेटी, गंगू बाई, उम्मीदें, उन गृह-स्वामिनियों के नाम, आखिरी पड़ाव, चकोरी, देवी, त्रासदी आदि।

बाल कार्यक्रम

5.16.1. बाल कार्यक्रम बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके स्वस्थ मानसिक तथा शारीरिक विकास के लिए उनमें उच्च मूल्य विकसित करने की शिक्षा व ज्ञान देने की दृष्टि से तैयार किए जाते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि उन्हें ऐसा कुछ न दिखाया जाए जिससे उनके बाल मन पर प्रतिकूल असर पड़े। बच्चों के देखने के समय पर विशेषकर शनिवार व रविवार को धारावाहिक, कार्टून फिल्में, टेलीफिल्में, लघु चित्र आदि प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन से प्रसारित कुछ उल्लेखनीय कार्यक्रम हैं : 'प्रिया', 'चिन्ता', 'एहसास', 'ईनाम', 'अभिलाषा' आदि।

5.16.2. दूरदर्शन ऐसे भी कुछ कार्यक्रम प्रसारित करता है जो विशेष रूप से बालिकाओं के संबंध में होते हैं। इनमें मुख्य तौर पर परंपरागत भारतीय समाज में लड़कियों की दशा को चित्रित किया जाता है। लड़कियों के सही विकास तथा उनकी सफलताओं और लड़कों व लड़कियों में समानता का संदेश देने वाले विडम्बना, बहारों को आने दो, खानदान का चिराग, गौरी, मंजिलों का सफर आदि कार्यक्रम मनोरंजक भी थे और शिक्षाप्रद भी।

युवा कार्यक्रम

5.17. युवकों से संबंधित विषयों पर कार्यक्रमों का नियमित आधार पर निर्माण एवं प्रसारण किया जाता है। इनमें युवकों की समस्याएं, अहिंसा के सिद्धांत, व्यवसाय संबंधी मार्गदर्शन, राष्ट्रीय तथा देशभक्ति के भावों का चित्रण, नशीले पदार्थों के सेवन तथा मद्यपान से बचाव के उपाय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, सामान्य जागरूकता आदि विषय शामिल हैं। इस वर्ष में प्रसारित कुछ उल्लेखनीय कार्यक्रमों में मुठ्ठीभर सितारे, क्रास रोड्स क्रासफायर, पार्लियामेंटरी क्विज़ आदि शामिल हैं।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

5.18. दूरदर्शन स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण के बारे में राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्राइम टाइम पर लघु विज्ञापन यानी स्पाट का प्रसारण करता है। ये विज्ञापन सामान्यतया एक मिनट के होते हैं। क्षेत्रीय केन्द्र भी क्षेत्रीय परिवार कल्याण इकाइयों के सहयोग से इस तरह के विज्ञापन स्थानीय भाषाओं में तैयार करते हैं और लगभग प्रतिदिन उनका प्रसारण करते हैं। सभी केन्द्र, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण का संदेश देने वाले कार्यक्रमों का नियमित रूप से निर्माण एवं प्रसारण करते हैं। ये कार्यक्रम प्रति सप्ताह 20 से 25 मिनट की अवधि तक प्रसारित किए जाते हैं।

ग्रामीण कार्यक्रम

5.19.1. दूरदर्शन के सभी केन्द्र अपने सामान्य कार्यक्रमों में, गांव में रहने वाले श्रोताओं के लाभ के लिए अपने सेवा क्षेत्र में नियमित रूप से कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इन कार्यक्रमों में ग्रामीण रुचि के अनुसार मनोरंजक बातों को शामिल करने के अलावा विकास के कई अन्य पहलुओं को भी सम्मिलित किया जाता है, जैसे- परिवार कल्याण परियोजनाएं, सामुदायिक विकास, पशु-पालन, व्यावहारिक साक्षरता आदि। लेकिन मुख्य जोर कृषि पर दिया जाता है।

5.19.2. दूरदर्शन के प्रत्येक केन्द्र की एक ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति होती है। इस समिति में राज्यों के सम्बद्ध विभागों के कर्मचारी, कृषि विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं के विशेषज्ञ तथा प्रगतिशील किसान, सदस्य के रूप में शामिल होते हैं। समिति ग्रामीण कार्यक्रमों और अन्य सम्बद्ध मामलों की तिमाही सूची को अंतिम रूप देने में केन्द्र को सलाह देती है।

खेल

5.20.1. दूरदर्शन ने खेलों के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हासिल की है। देश में खेल-प्रेमियों की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए एक स्वतंत्र चैनल खेलों के लिए निर्धारित किया गया है। रविवार को 'स्पोर्ट्स मैगजीन' तथा 'वर्ल्ड आफ स्पोर्ट्स' साप्ताहिक खेल कार्यक्रम और शनिवार तथा रविवार को दोपहर बाद 30 मिनट का खेल कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रमों के अलावा खेल संगठनों और स्कूलों/कालेजों एवं विश्वविद्यालयों के लाभ के लिए प्रत्येक क्षेत्रीय केन्द्र से मेट्रो स्पोर्ट्स आवर कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं।

5.20.2. वर्ष के दौरान दूरदर्शन ने दिल्ली/कलकत्ता और बम्बई में खेले गए विश्व ग्रुप के डेविस कप टेनिस जैसी अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का प्रसारण किया। दूरदर्शन ने फ्रांस से विश्व कप बैडमिण्टन प्रतियोगिता, दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता, दिल्ली/बंगलौर/मद्रास/बम्बई में बिलियर्ड्स और स्नूकर प्रतियोगिता तथा भारत-इंग्लैण्ड और भारत-जिम्बाब्वे क्रिकेट श्रृंखलाओं के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की। इंग्लैंड में हुए महिला विश्व क्रिकेट कप तथा पोलैंड में खेले गए इंटर कांटीनेंटल हॉकी के सभी मैचों की पूरी रिकार्डिंग मुख्य अंशों के रूप में दिखाई गई। पुणे में हुए राष्ट्रीय खेलों का भी प्रमुखता के साथ प्रसारण किया गया।

5.20.3. स्वदेशी खेलों को प्राथमिकता दी जाती है और उनकी कवरेज की गई तथा प्रसारण किया गया। क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा अपने क्षेत्र में होने वाले ग्रामीण खेलों की नियमित रूप से कवरेज की जाती है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

5.21. भारत ने अनेक देशों के साथ कार्यक्रमों के आदान-प्रदान के बारे में सांस्कृतिक समझौतों, सहमति-पत्रों तथा संधियों पर हस्ताक्षर किए हैं। इन करारों के अंतर्गत प्राप्त कार्यक्रमों का दूरदर्शन प्रसारण करता है और इसी प्रकार अन्य देशों को प्रसारण के लिए कार्यक्रम भेजता है। विभिन्न देशों के राष्ट्रीय दिवसों के उपलक्ष्य में उनके राजदूतों/उच्चायुक्तों के संदेश द्विपक्षीय आधार पर अथवा उनके अनुरोध पर प्रसारित किए जाते हैं। उजबेकिस्तान को नियमित रूप से प्रसारित करने के लिए दूरदर्शन के बहुत से कार्यक्रम उपलब्ध कराए गए हैं।

विदेश प्रचार

5.22. दृश्य-श्रव्य माध्यम से विदेश प्रचार के लिए 'इंडिया दिस वीक' नाम से 30 मिनट का साप्ताहिक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। यह कार्यक्रम अमरीका तथा ब्रिटेन में लगभग 20 केबल नेटवर्क संस्थाओं को प्रसारण के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

समारोहों में हिस्सेदारी

5.23. दूरदर्शन ने अनेक समारोहों तथा प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिनमें दूरदर्शन कार्यक्रम 'टर्निंग प्वाइण्ट' की सराहना हुई।

सार्क दृश्य-श्रृव्य आदान-प्रदान

5.24. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन 'सार्क' के सदस्य देशों के बीच सहयोग व सद्भाव बढ़ाने के उद्देश्य से सार्क दृश्य-श्रृव्य आदान-प्रदान कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत बारी-बारी से सार्क देशों द्वारा तैयार किए टेलीविजन कार्यक्रम हर महीने की पहली तारीख को प्रसारित किए जाते हैं। श्रीलंका में रिकार्ड किए गए 'सार्क क्विज़' कार्यक्रम में भारत ने भी भाग लिया। सातों सार्क देशों से प्राप्त सामग्री के आधार पर दूरदर्शन ने नेपाल टी.वी. के साथ मिलकर 'विकलांगों के लिए सार्क वर्ष' कार्यक्रम तैयार किया।

विपणन

5.25. दूरदर्शन ने वर्ष के पहले नौ महीनों में 50,000 डालर मूल्य के कार्यक्रमों की बिक्री की तथा कुछ और कार्यक्रमों की बिक्री के बारे में बातचीत चल रही है।

कार्यक्रम सलाहकार समितियां

5.26. कार्यक्रम सलाहकार समितियां केन्द्रों को उनके क्षेत्र के लिए कार्यक्रमों की आवश्यकता के संबंध में उपयोगी परामर्श देती हैं। इनमें नृत्य, लोककलाएं व संस्कृति, महिला एवं बाल कल्याण, युवा कल्याण, समाज कल्याण, विज्ञान, हास्य-विनोद, फिल्म, रंगमंच, खेल, साहित्य, अनुसूचित जातियों/जनजातियों तथा अल्पसंख्यकों आदि विषयों व वर्गों के विशेषज्ञ रख जाते हैं। अभी तक दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, बंगलौर, तिरुअनंतपुरम, श्रीनगर, जालंधर, कटक, जयपुर, गुवाहाटी, लखनऊ, अहमदाबाद और हैदराबाद केन्द्रों के लिए समितियां गठित की जा चुकी हैं। राज्य में विभिन्न मीडिया इकाइयों के साथ कार्यक्रमों के बारे में तालमेल बनाए रखने और उनकी प्रगति पर नज़र रखने के लिए दूरदर्शन केन्द्रों को माध्यम प्रचार समन्वय समितियों से भी सम्बद्ध किया जाता है।

दर्शक अनुसंधान

5.27.1. दर्शक अनुसंधान इकाई समूचे दूरदर्शन नेटवर्क की फीडबैक संबंधी आवश्यकताएं पूरी करती हैं । इस समय विभिन्न केन्द्रों पर 19 दर्शक अनुसंधान इकाइयां काम कर रही हैं। आलोच्य वर्ष में ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन स्वामित्व तथा कार्यक्रम देखने के बारे में अध्ययन किया गया जिसमें 12 हजार टी.वी. मालिकों से सम्पर्क किया गया। इस सर्वेक्षण से ग्रामीण क्षेत्रों में टी.वी. देखने की उनकी आदतों के बारे में उपयोगी सूचनाएं प्राप्त हुई। ग्रामीण क्षेत्रों में इतने व्यापक स्तर पर इस तरह का यह पहला प्रयास है।

5.27.2. दर्शक अनुसंधान इकाइयों ने दर्शकों से प्राप्त पत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं में छपी टिप्पणियों आदि के रूप में प्राप्त फीड बैक का अपनी ओर से भी विश्लेषण किया। कुछ केन्द्रों में एक महीने में 20,000 तक पत्र प्राप्त हुए।

लोक सेवा संचार परिषद

5.28. लोक सेवा संचार परिषद लाभ न कमाने वाली स्वयंसेवी संस्था है जिसका अपना कोई कोष नहीं है। यह परिषद राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण उपभोक्ता संरक्षण, नशीले पदार्थों की रोकथाम जैसे विषयों पर लोकहित की फिल्में/संदेश/विज्ञापन आदि तैयार करने के लिए बनाई गई है।

केन्द्रीय निर्माण केन्द्र

5.29.1. उच्च स्तर के कार्यक्रम तैयार करने के उद्देश्य से दूरदर्शन ने नई दिल्ली में एशियाड गांव परिसर में केन्द्रीय निर्माण केन्द्र (सी.पी.सी.) की स्थापना की है।

5.29.2. सी.पी.सी. द्वारा निर्मित तथा दूरदर्शन से प्रसारित अनेक कार्यक्रमों को दर्शकों ने काफी पंसद किया है। इनमें एक उल्लेखनीय कार्यक्रम है: ''दीवारें'' जो जेलों में रह रही महिलाओं के बारे में है। इसे तीन भागों में प्रसारित किया गया। सी.पी.सी. राष्ट्रीय नेटवर्क पर प्रसारण के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम ''किड शो'' भी बना रहा है जो हर रविवार को प्रसारित किया जाता है। मेट्रो टी.वी. पर फिल्मी पार्श्वगायकों द्वारा प्रस्तुत संगीत कार्यक्रम ''अलबेला सुर-मेला'' दर्शकों द्वारा बहुत सराहा गया। इसकी सराहना के बारे में हर सप्ताह एक लाख से भी अधिक पत्र प्राप्त हुए। सी.पी.सी. ने दूरदर्शन से नववर्ष की पूर्व संध्या पर प्रसारित होने वाला विशेष वार्षिक कार्यक्रम भी तैयार किया। सी.पी.सी. ने उपग्रह संगीत चैनल के लिए 30 घंटे की नई संगीत रिकार्डिंग भी उपलब्ध कराई। राष्ट्रीय नेटवर्क पर वर्ष के दौरान सुगम संगीत के आधे घण्टे के 50 कार्यक्रम पेश किए गए।

समाचार तथा सामयिक विषय

5.30.1. अप्रैल 1993 से अब तक दूरदर्शन समाचार विभाग ने जिन प्रमुख घटनाओं के समाचार दिये, उनमें महाराष्ट्र के कुछ भागों में आया भूकम्प, पांच राज्यों तथा एक केन्द्रशासित प्रदेश में विधानसभा चुनाव और हजरत बल मस्जिद का संकट शामिल हैं। दूरदर्शन के समाचारों में कवर किये गए अन्य विषय हैं: राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अन्य विशिष्ट लोगों की विदेश यात्राएं और विदेशी विशिष्ट मेहमानों की भारत यात्रा। इन्सेट-2 बी उपग्रह का प्रक्षेपण, मुख्य युद्धक टैंक तथा पृथ्वी मिसाइल का सेना में शामिल होना, दूरदर्शन के पांच चैनलों का शुभारम्भ आदि मुख्य घटनाओं को भी कवर किया गया। पंजाब और असम में बाढ़ का प्रकोप और तमिलनाडु में भीषण रूप से दिखए गए। राहत और बचाव कार्यों तथा तूफान के बारे में लोगों को पूर्व चेतावनी देने पर भी समुचित ध्यान दिया गया। बम्बई में बम विस्फोट की घटनाओं को भी पर्याप्त रूप से कवर किया गया। संसद, उच्चतम न्यायालय तथा अन्य न्यायिक निकायों जैसी लोकतांत्रिक संस्थाओं को समाचारों में समुचित महत्व दिया गया। इसके अलावा बोडोलैंड, झारखण्ड तथा नर्मदा जैसी समस्याओं के बारे में व्यापक रूप से समाचार दिए गए। दूरदर्शन समाचार विभाग दर्शकों को ताजा खबरों की तुरंत जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से देश-विदेश में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का व्यापक तथा निष्पक्ष कवरेज करता है।

5.30.2. दूरदर्शन का समाचार और सामयिक विषय विभाग लोगों तक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की प्रामाणिक व नवीनतम जानकारी पहुंचाने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से सामग्री प्राप्त करता है और रेडियो पूल का भी इस्तेमाल करता है।

5.30.3. दिल्ली दूरदर्शन से प्रतिदिन 10 समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं। इनमें से पांच हिन्दी (चार राष्ट्रीय और एक प्रादेशिक) और चार अंग्रजी में (तीन राष्ट्रीय और एक विश्व समाचार) तथा एक बुलेटिन उर्दू में होता है।

5.30.4. जुलाई 1993 से श्रीनगर केन्द्र से कश्मीरी बुलेटिन का फिर से शुरू होना वर्ष की उल्लेखनीय उपलब्धि रही। इस बुलेटिन का उद्देश्य क्षेत्र के लोगों को देश की मुख्य घटनाओं से जोड़े रखना तथा राज्य की घटनाओं को संतुलित रूप से प्रस्तुत करना है। पहली अगस्त, 1993 से प्रतिदिन विश्व समाचारों का प्रसारण एक अन्य उपलब्धि है।

5.30.5. पहले से प्रसारित हो रही लोकप्रिय साप्ताहिक समाचार पत्रिका ''वर्ल्ड दिस वीक'' तथा परख के अलावा दूरदर्शन ने न्यूज प्लस नाम का नया साप्ताहिक समाचार पत्रिका-धारावाहिक प्रारम्भ किया है जिसमें राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाती है। एक नया आर्थिक पत्रिका कार्यक्रम ''बिजनेस बातें'' भी प्रसारित किया जाने लगा है। इनके अलावा साप्ताहिक, सांस्कृतिक पत्रिका कार्यक्रम ''सुरभि'' लगातार प्रसारित किया जा रहा है।

अध्याय 6

फिल्में

फिल्म प्रभाग

6.1.1. फिल्म प्रभाग का इतिहास देश के स्वाधीनता के बाद के इतिहास की तरह ही घटनापूर्ण रहा है। पिछले 45 वर्षों में प्रभाग राष्ट्र निर्माण में देशवासियों को सक्रिय सहयोग के लिए प्रेरित करता रहा है। इस दौरान प्रभाग ने देश में वृत्तचित्र आन्दोलन के विकास और प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

6.1.2. प्रभाग देशभर के 13,300 से अधिक सिनेमाघरों और क्षेत्रीय प्रचार, राज्य सरकारों की चलती-फिरती यूनिटों, दूरदर्शन, परिवार कल्याण विभाग की क्षेत्रीय इकाइयों, शिक्षण संस्थानों और स्वैच्छिक संगठनों की फिल्म संबंधी आवश्यकताएं पूरी करता है। राज्य सरकारों के वृत्तचित्र और समाचार पत्रिकाएं (न्यूजरीलें) भी प्रभाग द्वारा जारी की जाती हैं। देश में और विदेशों में भी वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों के प्रिंट, स्टॉक शाट्स, वीडियो कैसेट और वितरण अधिकार बेचने का काम भी फिल्म प्रभाग करता है। वीडियो कंपनियों को स्वीकृत कैसेट फिल्मों की सप्लाई करने की दृष्टि से भी प्रभाग तैयारी कर रहा है।

6.1.3. देश में वृत्तचित्र और लघु चित्र आंदोलनों में फिल्म प्रभाग ने संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टियों से उल्लेखनीय योगदान किया है। उसके लिए प्रभाग ने अपने विभागीय निर्माण के साथ-साथ बाहरी प्रतिभाओं को भी निरन्तर प्रोत्साहन दिया है।

6.1.4. बम्बई में मार्च, 1990 में और फिर फरवरी, 1992 में वृत्तचित्रों और लघु चित्रों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करने के बाद तो प्रभाग विश्व में वृत्तचित्र आन्दोलन की बड़ी शक्ति के रूप में उभरा है। इसी शृंखला का तीसरा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह फरवरी, 1994 में बम्बई में ही आयोजित किया गया था।

6.1.5. फिल्म प्रभाग का उद्देश्य और लक्ष्य लोगों को फिल्म जैसे सशक्त माध्यम के जरिए शिक्षित और प्रेरित करना है, जिससे राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रम को लागू करने में उन्हें सक्रिय रूप से भागीदार बनाया जा सके। प्रभाग देश-विदेश के लोगों के सामने भारत और यहां के लोगों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की छवि प्रस्तुत करता है। देश में वृत्तचित्र आंदोलन के विकास को बढ़ावा देने में भी प्रभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निर्माण

6.2.1. फिल्म प्रभाग के बम्बई मुख्यालय के अलावा बंगलौर, कलकत्ता और दिल्ली में तीन फिल्म निर्माण केन्द्र हैं। प्रभाग के निर्माण खंड के चार प्रमुख अनुभाग हैं: (1) वृत्तचित्र, (2) समाचार पत्रिका, (3) ग्रामीण दर्शकों के लिए विशेष रूप से बनाई गई छोटी फीचर फिल्में, और (4) एनीमेंशन फिल्में।

6.2.2. प्रभाग अपने वार्षिक फिल्म निर्माण कार्यक्रम के तहत बनने वाली 60 प्रतिशत फिल्में अपने निर्माताओं और निदेशकों के जरिए बनाता है। प्रभाग विविध विषयों पर वृत्तचित्र बनाता है। वृत्तचित्रों में कृषि, कला, वास्तुशिल्प, उद्योग, अंतर्राष्ट्रीय मामले, खाद्य

सामग्री, उत्सव समारोह, स्वास्थ्य की देखभाल, आवास, विज्ञान और टैक्नोलाजी, खेल, व्यापार और वाणिज्य, परिवहन, जनजाति कल्याण, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता जैसे विविध विषय शामिल हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रभाग मानव जीवन की समग्र गतिविधियों और पहलुओं को कवर करता है।

6.2.3. वृत्तचित्र के क्षेत्र में व्यक्तिगत प्रतिभाओं को बढ़ावा देने और देश में वृत्तचित्र आंदोलन को सशक्त बनाने के लिए फिल्म प्रभाग अपने निर्माण कार्यक्रम के तहत बनने वाली चालीस प्रतिशत फिल्में अपने विभिन्न केन्द्रों के जरिए स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं से बनवाता है। प्रभाग अपने सामान्य निर्माण कार्यक्रम के साथ ही भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को भी वृत्तचित्र बनाने में मदद देता है।

6.2.4. प्रभाग के समाचार दर्शन एकांश के दायरे में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की राजधानियों सहित सभी प्रमुख नगर और शहर शामिल हैं। प्रभाग हर पखवाड़े एक समाचार पत्रिका तैयार करता है और संग्रहणीय सामग्री का संकलन करता है। कमेण्टरी अनुभाग अंग्रेजी और हिन्दी में बनी फिल्मों का 14 भारतीय भाषाओं में रूपांतरण करता है। जब भी जरूरत होती है, फिल्मों का विदेशी भाषाओं में भी रूपांतरण किया जाता है।

6.2.5. प्रभाग का कार्टून फिल्म एकांश 1987 में शुरू हुआ था और यह वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिकाओं के लिए एनीमेशन चित्र तैयार करता है। अब उसके पास कठपुतली फिल्म बनाने की सुविधा भी उपलब्ध है। प्रभाग ने एनीमेशन फिल्म बनाने के क्षेत्र में समूचे विश्व में मान्यता प्राप्त की है।

6.2.6. फिल्म प्रभाग का दिल्ली एकांश कृषि और रक्षा मंत्रालयों तथा परिवार कल्याण विभाग के लिए शिक्षाप्रद और प्रेरक फिल्में बनाने का दायित्व निभाता है।

क्षेत्रीय केन्द्र

6.3.1. फिल्म प्रभाग के कलकत्ता और बंगलौर स्थित क्षेत्रीय केंद्र गांवों से संबंधित विषयों पर करीब एक-एक घंटे की 16 एम.एम. की छोटी फिल्में बनाता है। यह फिल्में किसी ऐसे कथानक पर आधारित होती हैं जिनका उद्देश्य परिवार कल्याण और सांप्रदायिकता जैसे राष्ट्रीय महत्व के पहलुओं पर संदेश प्रसारित करना या दहेज, बंधुआ मजदूरी और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों पर लोगों का ध्यान केंद्रित करना है।

6.3.2. तमिल, तेलुगू, कन्नड़, बंगला, असमिया, उड़िया और पूर्वोत्तर और दक्षिण क्षेत्र की कई भाषाओं और बोलियों में बनने वाली इन फिल्मों की क्षेत्रीय और भाषायी विशिष्टता बनाए रखने के उद्देश्य से लेखन और अभिनय में स्थानीय प्रतिभाओं का उपयोग किया जाता है। ऐसी फिल्मों के जरिये ग्रामीण लोगों को उन कार्यक्रमों और योजनाओं की विस्तृत जानकारी मिल पाती है जो सामाजिक-आर्थिक न्याय के लिए बनाई गई हैं। अब इस योजना के तहत उत्तरी और पश्चिमी भाषाओं और बोलियों में भी फिल्में बनाना शुरू किया गया है।

वितरण खण्ड

6.4.1. सिनेमाघरों और चलते-फिरते सिनेमाघरों की संख्या में लगातार वृद्धि से फिल्म प्रभाग के वितरण खण्ड का भी विस्तार हुआ है। अब इसके दस शाखा कार्यालय हैं। ये बंबई, नागपुर, लखनऊ, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, विजयवाड़ा, बंगलौर, मदुरई और तिरुअनंतपुरम में स्थित हैं। फिल्म प्रभाग की फिल्में प्रदर्शित करने वाले सिनेमाघरों में कितनी वृद्धि हुई है, इसका अनुमान उनकी संख्या में हुई वृद्धि से लगाया जा सकता है। 1952 में सिनेमाघरों और चलते-फिरते सिनेमाघरों की संख्या 3,348 थी जो 1993 में बढ़कर 13,391 हो गई है।

6.4.2. सिनेमाटोग्राफ अधिनियम, 1952 के अंतर्गत सिनेमाघरों को लाइसेंस इस शर्त पर दिए जाते हैं कि इनमें प्रत्येक फिल्म शो में अधिकतम 609.60 मीटर लम्बाई की प्रमाणित डाक्यूमेंट्री/समाचार पत्रिका फिल्म प्रदर्शित की जाएगी। इसके लिए फिल्म प्रभाग देश के सभी सिनेमाघरों में प्रदर्शन के लिए हर सप्ताह वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिका फिल्मों के 400 प्रिन्ट 15 भाषाओं में जारी कर रहा है। इन फिल्मों को एक-एक सप्ताह के लिए हर सिनेमाघर में बदल-बदल कर प्रदर्शित किया जाता है और यह प्रदर्शन तब तक जारी रहता है, जब तक देश के सभी 13,391 सिनेमाघरों में ये दिखा नहीं लिए जाते। अनुमान है कि हर सप्ताह करीब 9-10 करोड़ दर्शक इन सिनेमाघरों में इन फिल्मों को देखते हैं। इनमें सीमांत क्षेत्रों और केन्द्र शासित क्षेत्र अण्डमान निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप जैसे सुदूर इलाकों के लगभग पांच से छः लाख तक दर्शक प्रति सप्ताह इन फिल्मों को देखते हैं।

6.4.3. फिल्म प्रभाग अपनी फिल्मों (16 मिलीमीटर) के प्रिन्ट क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय तथा केन्द्र और राज्य सरकारों के विभागों की चलती-फिरती इकाइयों को देता है। ये इकाइयां हर सप्ताह करीब चार से पांच करोड़ दर्शकों को ये फिल्में दिखाती हैं।

6.4.4. उपर्युक्त माध्यमों के अलावा फिल्म प्रभाग के वृत्तचित्र दूरदर्शन के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत भी प्रदर्शित किए जा रहे हैं। अप्रैल और नवम्बर 1993 की अवधि में प्रभाग ने अपनी 38 फिल्में दूरदर्शन को प्रदर्शन के लिए दी हैं।

6.4.5. देश भर में कई शैक्षिक संस्थाएं तथा सामाजिक संगठन प्रभाग के दस वितरण शाखा कार्यालयों की फिल्म लाइब्रेरी से डाक्यूमेंटरी फिल्में उधार लेते हैं।

6.4.6. फिल्म प्रभाग की फिल्मों के वीडियो कैसेट तथा फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित फिल्में, गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए रेलवे, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, केंद्र और राज्य सरकारों के विभागों, शैक्षिक संस्थाओं और आम लोगों को बेचे जाते हैं। अप्रैल से नवम्बर, 1993 के दौरान प्रभाग को गैर-व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए फिल्मों के 2,299 कैसेटों की बिक्री से 2.76 लाख रुपये की आमदनी हुई।

6.4.7. विदेश मंत्रालय का विदेश प्रचार-विभाग फिल्म प्रभाग के वृत्तचित्रों का चुनाव करता है तथा इनके प्रिन्ट विदेशों में भारतीय दूतावासों को भेजता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और कुछ निजी एजेंसियां भी विदेशों में ऐसी फिल्मों के वितरण की व्यवस्था करती हैं। प्रभाग की फिल्मों को रायल्टी अदा करने पर विदेशों में टेलीविजन और वीडियो नेटवर्क पर भी व्यावसायिक तौर पर दिखाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र एवं लघुचित्र समारोह

6.5. प्रभाग को वृत्तचित्र, लघुचित्र और एनीमेशन फिल्मों का बम्बई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करने का दायित्व सौंपा गया है। यह समारोह दो वर्ष में एक बार होता है। पहला समारोह 1 मार्च, 1990 से 7 मार्च, 1990 तक, दूसरा समारोह 1 मार्च, 1992 से 7 मार्च 1992 तक और तीसरा समारोह 1 फरवरी, 1994 से 7 फरवरी 1994 तक हुआ था। यह समारोह एशिया का महत्वपूर्ण आयोजन माना जाता है। यह समारोह प्रतियोगी किस्म का था और इसमें विभिन्न प्रतियोगिता वर्गों में 12 लाख रुपये के नकद पुरस्कार वितरित किए गए थे। नए वीडियो-वर्ग में देश में वीडियो पर प्रदर्शन के लिए बने सर्वश्रेष्ठ भारतीय वृत्तचित्रों का प्रदर्शन किया गया।

कार्य प्रगति

6.6.1. अप्रैल से नवम्बर, 1993 के दौरान प्रभाग ने 17 समाचार पत्रिकाएं और 21 वृत्तचित्र/लघुचित्र/फीचर फिल्में (75 रीलों की) बनाईं। इनमें से 13 फिल्में (34 रीलें) प्रभाग ने बनाईं और 8 फिल्में (41 रीलें) स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं से बनवाई गईं।

6.6.2. प्रभाग ने अपने वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिकाओं के माध्यम से सांप्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, छुआछूत उन्मूलन और परिवार कल्याण जैसे राष्ट्रीय अभियानों के प्रचार-प्रसार की सुविधा उपलब्ध कराई। इन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियानों के लिए प्रभाग ने जो फिल्में बनाईं उनमें (1) आतंक क्यों? (राष्ट्रीय एकता पर), (2) यात्रा (सरकार की नई आर्थिक नीति पर) और (3) 'पैट्रोल बचाओ' शामिल हैं।

6.6.3. प्रभाग ने मॉरीशस सरकार को स्वामी कृष्णानन्द महाराज की जन्मशताब्दी पर 'हामेज टू स्वामी कृष्णानन्द महाराज' शीर्षक से वृत्तचित्र के निर्माण के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराई थीं।

6.6.4. इस अवधि में प्रभाग ने जीवनियों पर आधारित फिल्में तैयार कीं, जिनके नाम हैं: (1) लोकप्रिय गोपीनाथ बार्दोलोई (2) डा. गुलाम रसूल और (3) द आर्टिस्ट-कोमल वर्दन। अन्य मई महान व्यक्तियों के जीवन पर फिल्में निर्माणाधीन हैं।

6.6.5. प्रभाग विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेता रहा है। नवम्बर, 1993 तक की अवधि में प्रभाग ने 23 समारोहों में भाग लिया।

पुरस्कार और मान्यता

6.7.1. इस वर्ष के दौरान नवम्बर, 1993 तक फिल्म प्रभाग ने निम्नलिखित पुरस्कार जीते:

	फिल्म का नाम	पुरस्कार
1.	पंडित भीमसेन जोशी	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और दस-दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार।
2.	चूड़ियां	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और दस-दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार।
3.	अगर आप चाहें	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और दस-दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार।

Special arrangements for the Result of Assembly Elections at Doordarshan Studio.

Seminar on New Mass Communication organised jointly by Press Information Bureau and I.C.C.R., under the aegis of the Indo-US Sub Commission for Education and Culture.

Dr. Radhakrishnan, Project Leader, NACO Shri G.D. Beliya, Chief of Media, Shri Gautam Basu, Secretary to Government of Karnataka, H&FW, Shri H.T. Khuma, Director Field Publicity and Dr. M.T. Hemareddy, Director, H&FW, Government of Karnataka are sitting on the dias.

Performance by Song & Drama Division artistes during Sadbhavna Samaroh, Nainital, U.P.

Shri K.P. Singh Deo , Minister of State for Information & Broadcasting with Shri M.F. Hussain after inaugurating the Painting Exhibition in Victoria Memorial, January 11, 1994.

Dinner hosted by Shri K.P. Singh Deo, Minister of State for Information & Broadcasting. Also seen in the picture are film legend, Shri Mechelangelo Antionioni and Mrs. Antionioni , January 19, 1994.

A Mobile Exhibition van showing their display during Sadbhavna Samaroh in U.P.

Rural sports organised as part of Sadbhavna Samaroh at Indira Nagar Village. The Joint Secretary, Ministry of Information & Broadcasting, is also seen in the picture.

	फिल्म का नाम	पुरस्कार
4.	समाचार पत्रिका 231 (एंटार्कटिका-ए साइंटिस्ट्स पैराडाइज़)	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और दस-दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार।
5.	द् थ्रैड्स (सम्मिलित पुरस्कार)	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और पांच-पांच हजार रुपये का नकद पुरस्कार।
6.	बेर	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और दस-दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार।
7.	सुनो बहुरानी	निर्माता और निर्देशक, दोनों को 'रजत कमल' और दस-दस हजार रुपये का नकद पुरस्कार।

6.7.2. प्रभाग द्वारा निर्मित 'फ्रीडम' और 'बाजार सीताराम' फिल्मों को भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1994 में भारतीय पैनोरमा वर्ग में प्रदर्शन के लिए चुना गया था।

राजस्व

6.8. अप्रैल, 1993 से दिसम्बर, 1993 की अवधि में प्रभाग ने स्वयं के बनाए 25 वृत्तचित्रों, 19 समाचार पत्रिकाओं और 6 लघुचित्रों के 16,929 प्रिंट और विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा बनाए गए 5 वृत्तचित्रों और 13 न्यूजरीलों के 758 प्रिंट जारी किए। प्रभाग ने देश में और विदेशों में गैर-व्यापारिक इस्तेमाल के लिए अपनी फिल्मों के 936 प्रिंट और 2,299 वीडियो कैसेट भी बेचे। इससे प्रभाग को 4 करोड़ 87 लाख रुपये की आय हुई। इस आय में स्टॉक-शाट्स की बिक्री से हुई 4.96 लाख रुपये की आमदनी शामिल है। प्रभाग ने क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय को कुल 2,114 वीडियो कैसेट सप्लाई किए।

फिल्म समारोह निदेशालय

6.9.1. भारत सरकार ने 1973 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत फिल्म समारोह निदेशालय की स्थापना की थी। इसका मुख्य उद्देश्य अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देना था। तभी से यह निदेशालय हर वर्ष राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करके भारतीय सिनेमा की सर्वश्रेष्ठ कृतियों को प्रोत्साहन देने का जिम्मा निभा रहा है। फिल्म समारोह अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति के आदान-प्रदान और मैत्रीभाव को बढ़ाने का भी सशक्त माध्यम सिद्ध हुए हैं। इनके जरिए विश्व सिनेमा की नई प्रवृत्तियों को देश में लाने में मदद मिलती है। फिल्म समारोह निदेशालय की मुख्य गतिविधियां निम्नलिखित हैं:-

1. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का आयोजन करना।
2. भारतीय पैनोरमा वर्ग के लिए फिल्मों का चयन करना।
3. सरकार की ओर से समय-समय पर फिल्मों के विशेष कार्यक्रम आयोजित करना।
4. फिल्मों के प्रिंट एकत्र करना और लेखा-जोखा रखना।
5. भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों का आयोजन करना।

6. विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में हिस्सा लेना, और

7. भारत में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करना।

6.9.2. निदेशालय की गतिविधियों और नीति निर्धारण संबंधी दिशानिर्देश देने का कार्य एक सलाहकार समिति करती है। समिति की चार महीने में एक बार बैठक होती है। फिल्म उद्योग और उससे संबंधित विधाओं के राष्ट्रीय स्तर के जाने-माने लोग समिति के सदस्य हैं।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

6.10. चालीसवें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के सिलसिले में निर्णायक मंडल ने मार्च, 1993 में फिल्मों को देखना शुरू कर दिया था। फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री बालू महेन्द्र ने और गैर फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री घनश्याम महापात्र ने की। सिनेमा के लिए सर्वश्रेष्ठ लेखन की चयन-समिति की अध्यक्ष सुश्री मृणाल पाण्डेय थीं। पुरस्कारों की होड़ में 105 फीचर फिल्में, 92 गैर-फीचर फिल्में, 16 पुस्तकें और 26 लेख शामिल हुए थे। राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने 5 मई, 1993 को नई दिल्ली के सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार श्री जी.वी. अय्यर की 'भगवद्-गीता' (संस्कृत) को और सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म का पुरस्कार श्री अभिजित चट्टोपाध्याय की 'इन सर्च ऑफ इंडियन सिनेमा' (अंग्रेजी) को प्राप्त हुआ। सिनेमा के बारे में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार श्रीमती गायत्री चटर्जी की 'आवारा' (अंग्रेजी) को दिया गया और श्री सुधीर बोस को 1992 का सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक चुना गया। 1992 का दादा साहेब फाल्के पुरस्कार जाने-माने संगीतकार डा. भूपेन हजारिका को प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण के बाद कई पुरस्कृत फिल्में भी दिखाई गईं।

अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

6.11.1. भारत का 25 वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1994 कलकत्ता में 10 जनवरी से 20 जनवरी, 1994 तक आयोजित किया गया। यह समारोह गैर-प्रतियोगी था। कलकत्ता के करीब दस सिनेमाघरों में समारोह की फिल्में दिखाई गईं, जिनमें से चार सिनेमाघर प्रेस और समारोह-प्रतिनिधियों के लिए सुरक्षित रखे गए थे। समारोह में निम्नलिखित वर्ग थे:

1. विश्व सिनेमा
2. अफ्रीकी-अमरीकी सिनेमा पर फोकस
3. मंगोलियाई/मैक्सिको सिनेमा पर फोकस
4. इटली के निर्देशक माइकेलएंजेलो एंटोनियो की फिल्मों का पुनरावलोकन
5. नीदरलैंड के निर्देशक फोंस और लिली रेडमेकर्स की फिल्मों का पुनरावलोकन
6. स्वीडन के निर्देशक इंगमार बर्गमैन को श्रद्धांजलि
7. इटली के निर्देशक फेदेरिको फेलिनि को श्रद्धांजलि
8. भारतीय पैनोरमा '94
9. भारतीय सिनेमा की मुख्य धारा
10. उत्पल दत्त और विजय भट्ट की फिल्मों का भारतीय पुनरावलोकन।

6.11.2. अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पैनोरमा पहली बार 1978 में शुरू हुआ था। तब से इस वर्ग के लिए हर वर्ष भारतीय फिल्में चुनी जाती हैं। इस वर्ष इस वर्ग में देश भर से 107 फीचर फिल्में शामिल हुईं। पहले कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में तीन क्षेत्रीय चयन पैनलों ने प्रविष्ठियों का चुनाव किया, बाद में केन्द्रीय पैनल ने इसकी समीक्षा की। डा. भूपेन हजारिका की अध्यक्षता वाले केन्द्रीय पैनल ने 18 फीचर फिल्मों को भारतीय पैनोरमा-94 में शामिल किये जाने की सिफारिश की। गैर-फीचर फिल्म वर्ग में दिल्ली में पांच जाने- माने फिल्म निर्माताओं के चयन दल ने कुल 82 फिल्में देखीं। इसके अध्यक्ष श्री एन.वी.के. मूर्ती थे। कुल मिलाकर 19 गैर फीचर फिल्मों को 40 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1993 के लिए चुना गया था। उन्हें भारत के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह-94 के पैनोरमा वर्ग में दिखाया गया।

6.11.3. भारत में विदेशी फिल्मों के सप्ताह आयोजित किये गये जिनका विवरण इस प्रकार है:- नई दिल्ली में 17 सितम्बर से 19 सितम्बर, 93 तक आयरलैंड का फिल्म सप्ताह हुआ जिसमें चार फीचर फिल्में तथा चार वृत्त चित्र दिखाये गये: नई दिल्ली, भोपाल और भुवनेश्वर में पोलैंड का फिल्म सप्ताह मनाया गया जिसके अंतर्गत 7 फिल्में प्रदर्शित की गईं। इस समारोह में एक सदस्यीय शिष्ट मंडल ने भाग लिया।

विदेशों में भारतीय फिल्म सप्ताह

6.12.1. विदेशों में आयोजित भारतीय फिल्म सप्ताहों का ब्यौरा इस प्रकार हैं: हंगरी-8 फिल्में और एक सदस्यीय शिष्टमंडल; ग्रीस-6 फिल्में; इंडोनेशिया-7 फिल्में; तुर्कमेनिस्तान-7 फिल्में और चार फिल्मी हस्तियों और दो अधिकारियों का शिष्टमंडल; ब्राजील, घाना, बुर्कीनो, फासो और मापूतो में सात-सात फिल्में; जर्मनी-राजकपूर की आठ फिल्में; टोरांटा-(कनाडा) चार फिल्में; अमरीका में भारतीय फिल्म प्रदर्शनी-9 फिल्में; क्यूबा-दो फिल्में; ढाका-मृणाल सेन की फिल्मों का पुनरावलोकन; स्पेन-6 फिल्में; श्रीलंका-13 फिल्में और मारीशस-सात पुरानी हिट फिल्में।

6.12.2. जनवरी, 1993 से अक्तूबर 1993 की अवधि में निदेशालय ने विदेशों में 42 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में हिस्सा लिया, जिनमें एशियाई समारोह और फुकुआका एशियाई फिल्म समारोह शामिल है-जापान के एशिया-93 पर फोकस; जापान का फुकुआका एशियाई फिल्म समारोह; कोरिया गणराज्य का सिओल एशिआई प्रशांत फिल्म शो, सिंगापुर एशियाई फिल्म समारोह, हांगकांग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और टोकियो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह शामिल हैं। निदेशालय ने हालैंड के रोटेर्डम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और कनाडा के टोरांटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी अपने शिष्टमंडल भेजे थे।

6.12.3. अनेक भारतीय फिल्मों और फिल्म निर्माताओं ने विभिन्न पुरस्कार जीतकर, निर्णायक मंडल में शामिल हो कर या गोष्ठियों में भाग लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना महत्व सिद्ध किया है। जैसे:- अरुण कौल के निर्देशन में तैयार फिल्म दीक्षा को दसवें एनोने अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में दर्शक पुरस्कार 'प्री दु पब्लिक' प्राप्त हुआ। यह समारोह फ्रांस में फरवरी 1993 में हुआ था। फिनलैंड के तामोपियर 23 वें अंतर्राष्ट्रीय लघु चित्र समारोह में भारत को मुख्य विषय-वस्तु रखा गया था, इसमें 1960 के दशक से लेकर अब

तक के चुने हुए भारतीय वृत्त चित्रों में से चुने गए वृत्त चित्रों को पांच विभिन्न कार्यक्रमों में प्रस्तुत किया गया और मार्च 1993 में हुए इस तामोपियर समारोह में अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडल के अध्यक्ष श्री पी.के. नायर ने भारतीय फिल्म संगीत के बारे में दो व्याख्यान दिये; 38 वें एशिया प्रशांत फिल्म समारोह में भारत ने दो उच्च पुरस्कार जीते—डिम्पल कपाड़िया को 'रुदाली' फिल्म में शानदार अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री घोषित किया गया और भूपेन हजारिका को इसी फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार दिया गया; जुलाई 1993 में मिस्र में आयोजित तीसरे इस्माइलिया अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में बी. लेनिन के निर्देशन में तैयार लघु चित्र 'नॉक आउट' को मिस्र की फिल्म समीक्षक एसोशिएसन का 'योग्यता प्रमाण पत्र' पुरस्कार दिया गया; सितम्बर 1993 में कनाडा में टोरांटो 'फेस्टीवल ऑफ फेस्टीवल' में फिल्म समारोह निदेशालय की संयुक्त निदेशक, श्रीमती मालती सहाय को निर्णायक मंडल का सदस्य बनाया गया। इसी तरह अक्तूबर 1993 में सीरिया में हुए दमिश्क अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में श्री श्याम बेनेगल को अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडल में लिया गया।

6.12.4. इस वर्ष विदेशों में हुए विभिन्न विदेशी फिल्म समारोहों में भारतीय फिल्मों के कई सफल पुनरावलोकन आयोजित किये गये। (1) जनवरी 1993 में स्विटजरलैंड में हुए फ्राइबोर्ग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और अक्तूबर 1993 में सीरिया में आयोजित दमिश्क अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सत्यजीत राय की फिल्मों का पुनरावलोकन आयोजित किया गया। (2) फरवरी 1993 में ईरान में फज्र अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में ऋत्विक घटक की फिल्में दिखाई गईं। (3) अगस्त 1993 में फ्रांस में आयोजित 'दोआरेनेज' फिल्म समारोह पूरी तरह भारतीय सिनेमा को समर्पित था, जिसमें फिल्म समारोह निदेशालय ने 11 फिल्मों को पैकेज भेजा था। (4) नवम्बर 1993 में हुए काहिरा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में राजकपूर की फिल्मों का पुनरावलोकन शामिल किया गया था। (5) जनवरी 1994 में स्विट्जरलैंड में हुए फ्राइबोर्ग अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में जी. अरविंदन की फिल्मों का पुनरावलोकन आयोजित किया गया था।

बच्चों और युवाओं की फिल्मों का राष्ट्रीय केन्द्र

6.13.1. भारतीय बाल फिल्म समिति का नाम राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केन्द्र कर दिया गया है। यह एक स्वायत्त संस्था है, जो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में काम करती है। इसका उद्देश्य बच्चों को स्वस्थ मनोरंजन उपलब्ध कराना है। इसका मुख्यालय बम्बई में है और नई दिल्ली और मद्रास में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं। इस समय श्रीमती जया बच्चन इसकी अध्यक्ष हैं।

6.13.2. यह संगठन बच्चों के लिए फीचर फिल्मों और लघु चित्रों/ऐनिमेशन फिल्मों का निर्माण करता है। पिछले दो वर्षों में इसने बच्चों के लिए धारावाहिक बनाना भी शुरू किया है, जिन्हें दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर भी प्रसारित किया जाता है। यह केन्द्र विदेशी फिल्मों और विदेशी टेलीविजन धारावाहिकों को भारत में दिखाने के अधिकार प्राप्त करता है और दो वर्ष में एक बार अंतर्राष्ट्रीय बाल चित्र समारोह आयोजित करता है। बाल फिल्मों का आठवां समारोह राजस्थान में उदयपुर में 14 से 23 नवम्बर 1993 तक हुआ था।

6.13.3. केन्द्र ने इस वर्ष में चार हिन्दी फिल्में पूरी कीं—ये हैं— अश्वास, करामाती कोट, गौरैया की चम्पी और चेतक। एक टेलीविजन सीरियल 'पोटली बाबा की—भाग-3' का

निर्माण भी शुरू किया गया है। हिन्दी फिल्म 'मुझसे दोस्ती करोगे' को तमिल भाषा में डब किया गया है। दो और फिल्में डब करने का काम भी हाथ में लिया गया है। बंगलौर में राष्ट्रीय बाल और युवा केन्द्र परिसर बनाने की योजना हाथ में ली गयी है। इसके साथ ही इन-हाउस वीडियो-सम्पादन सुविधायें प्राप्त की जा रही हैं।

6.13.4. आठवां अंतर्राष्ट्रीय बाल और युवा फिल्म समारोह राजस्थान में उदयपुर में 14 से 23 नवम्बर 1993 तक आयोजित किया गया। इसमें 39 देशों से कुल 265 प्रविष्ठियां प्राप्त हुईं। देश-विदेश के करीब 200 संवाददाता और अन्य प्रतिनिधि समारोह में आमंत्रित किये गये थे। राजस्थान समेत 17 राज्यों ने इसमें करीब 416 बाल प्रतिनिधि भेजे। विकलांग वर्ग में 25 बाल प्रतिनिधि थे।

6.13.5. उदयपुर में ही जर्मनी के 'बी' हेंसपठ और क्लौडिया श्रोडर ने पठकथा लेखन कार्यशाला का आयोजन किया और स्वीडिश ब्रॉडकास्टिंग कम्पनी के एहरलिंग ऐरिक्शन ने ऐनिमेशन फिल्मों की कार्यशाला आयोजित की। शिल्पग्राम में हुए उद्घाटन और समापन समारोह का दूरदर्शन से सीधा प्रसारण किया गया और आकाशवाणी से इनका व्यापक कवरेज हुआ। 14 नवम्बर, 1993 को हुए उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंह देव ने और 23 नवम्बर, 1993 को समापन समारोह की अध्यक्षता राजस्थान के राज्यपाल श्री बलीराम भगत ने की। मुख्य अतिथि श्रीमती सोनिया गांधी थीं। पांच हजार से अधिक बच्चों और युवाओं ने शिल्पग्राम में बने ओपन एअर थियेटर में इन फिल्मों को देखा।

6.13.6. निम्नलिखित फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय जूरी पुरस्कार प्राप्त हुए:-

1. तुर्की के मेन्दुह उन की 'द् बुलशिट' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए स्वर्ण गजराज और एक लाख रुपये।

2. जेम्स ग्रांट के निर्देशन में बनी आस्ट्रेलिया लघु फिल्म—'द आर्ट ऑफ ड्राउनिंग' को सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म के लिए रजत गजराज और 50 हजार रुपये।

3. हालैंड के बेन सोम्बोगार्ट द्वारा निर्देशित फिल्म 'द-पेननाइफ' को दूसरी सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए रजत गजराज और 50 हजार रुपये।

4. सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन के लिए रजत गजराज और 50 हजार रुपये का पुरस्कार सम्मिलित रूप से स्वीडन की फिल्म 'सिनोआ इन मोनेट्स गार्डन' और स्वीडन की ही फिल्म 'बिंके कांट फ्लाई' को दिया गया। इनमें से पहली फिल्म का निर्देशन सेना एंडरसन और क्रिस्टीना बियोर्ग ने किया और दूसरी के निर्देशक हैं— लेनार्ट नॉटैफसन।

5. सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार ईरान के अली तालेबी को उनकी फिल्म 'बूट' के लिए दिया गया। उन्हें रजत गजराज और 50 हजार रुपये प्रदान किये गये।

6. तुर्कमेनिस्तान के निर्देशक उस्मान सापारोव की फिल्म 'लिटिल एंजिल मेड ए ज्वाय' को विशेष जूरी पुरस्कार में रजत गजराज और 50 हजार रुपये दिये गये।

7. सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार के लिए भारत के ताराशंकर मिश्र को 'लावण्य-प्रीति' में अभिनय के लिए कांस्य गजराज और 25 हजार रुपये पुरस्कार में दिये गये।

जूरी ने इनका विशेष उल्लेख किया:-

1. सेनेगल के मंसूर वेड के निर्देशन में बनी फिल्म 'द लिटिल बर्ड'
2. भारत की सुमित्रा भावे और सुनील सुकधंकर द्वारा निर्देशित फिल्म 'चकोरी' और
3. गोपी देसाई द्वारा निर्देशित भारतीय फिल्म 'मुझसे दोस्ती करोगे'।

निम्नलिखित फिल्मों को भी पुरस्कार दिये गये और इनका विशेष उल्लेख किया गया। सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए जूरी पुरस्कार उस्मान सापारोव द्वारा निर्देशित तुर्कमेनिस्तान की फिल्म 'लिटिल ऐंजिल मेड ए ज्वाय' को दिया गया और गोपी देसाई के निर्देशन में बनी भारतीय फिल्म 'मुझसे दोस्ती करोगे' का विशेष उल्लेख किया गया। अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगी वर्ग में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए श्री ए.एच. बीर द्वारा निर्देशित भारतीय फिल्म 'लावण्य प्रीति' को रजत पट्टिका और योग्यता प्रमाण पत्र दिया गया और हालैंड के बेन सोम्बोगार्ट के निर्देशन में बनी फिल्म 'द पेननाइफ' का विशेष उल्लेख किया गया। बाल और युवा फिल्मों का जूरी पुरस्कार गोपी देसाई के निर्देशन में बनी भारतीय फिल्म 'मुझसे दोस्ती करोगे' को मिला। इसमें स्वर्ण पट्टिका दी जाती है।

6.13.7. राष्ट्रीय बाल और युवा फिल्म केन्द्र द्वारा निर्मित फिल्मों ने इन समारोहों में भाग लिया—मिस्र में चौथा काहिरा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, नौवां इसफाहन अंतर्राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म समारोह, शिकागो अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह, उरूग्वे अंतर्राष्ट्रीय बाल एवं किशोर फिल्म समारोह, जापान का फुकुओका अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, चीन में पेइचिंग का तृतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और इंग्लैंड का बाल एवं वीडियो समारोह।

6.13.8. इस केन्द्र को सरकार से मिलने वाले सहायता-अनुदान के अलावा फिल्मों की बिक्री एवं वितरण तथा दूरदर्शन पर धारावाहिकों के प्रसारण से भी आय प्राप्त होती है। इस समय राष्ट्रीय बाल एवं युवा फिल्म केंद्र जिलावार बाल फिल्म समारोह आयोजित करता है और उम्मीद है कि मार्च 1994 तक लगभग 65 जिलों में ऐसे समारोह आयोजित कर लिये जायेंगे।

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

6.14.1. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मूल उद्देश्य दो चरणों में पूरा किया जाता है—पहला तो यह है कि फिल्मों को सुरक्षित ढंग से रखना। लेकिन पूरी सावधानी बरतने के बावजूद कुछ पुरानी फिल्में समय बीतने के साथ खराब या नष्ट होने लगती हैं। ऐसी फिल्मों के पूरी तरह नष्ट होने से पहले उनकी प्रतियां तैयार कर ली जाती है। यह कार्य दूसरे चरण में किया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की महत्वपूर्ण गतिविधियों का विस्तृत विवरण परिशिष्ट में दिया गया है।

6.14.2. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मुख्यालय पुणे में है। बंगलौर, कलकत्ता और तिरुअनंतपुरम में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं। अपनी वितरण लाईब्रेरी के जरिए अभिलेखागार देश भर में अपने सदस्यों को 16 एम.एम. की फिल्में उपलब्ध कराता है। विशेष मौकों पर जयन्ती कार्यक्रमों या पुनरावलोकन के लिए 35 एम.एम. की फिल्में भी सप्लाई की जाती हैं। बंगलौर, कलकत्ता, बम्बई, हैदराबाद और तिरुअनंतपुरम जैसे

महत्वपूर्ण केन्द्रों पर नियमिन रूप से संयुक्त तौर पर फिल्में दिखाई जाती हैं, जिससे दर्शकों को भारतीय सिनेमा के इतिहास और विश्व की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों के बारे में जानकारी मिलती है।

6.14.3. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने पुणे में हर वर्ष की तरह पांच सप्ताह का फिल्म मूल्यांकन कार्यक्रम चलाया और साथ ही नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय), एशियाई फिल्म पत्रिका सिनेमाया, मद्रास की चेन्नई फिल्म सोसाइटी और दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया के साथ मिलकर अल्पावधि कार्यक्रम भी चलाए।

6.14.4. अभिलेखागार के पुस्तकालय में भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा विषय पर पुस्तकों और पत्रिकाओं का शानदार संग्रह है। अभिलेखागार के संग्रह में स्टिल, पुस्तिकाओं, पोस्टरों, डिस्क रिकार्डों, ऑडियो टेपों, फिल्म समीक्षा, लेखों आदि के रूप में भारतीय सिनेमा के बारे में जानकारी और सामग्री है।

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार में संग्रहीत सामग्री का विस्तृत विवरण नीचे दिया जा रहा है:-

मद	31.12.92 को संख्या	जनवरी से नवम्बर 1993	30.11.93 को संख्या
फिल्में	12,747	175	12,922
वीडियो कैसेट	875	194	1,069
पुस्तकें	20,604	331	20,935
पत्रिकाएं	152	—	152
पत्रिकाओं के सजिल्द खंड	388	56	444
पांडुलिपियां	21, 403	—	21,403
प्री रिकार्डेड कैसेट	106	103	209
स्टिल चित्र	97,414	573	97,987
इश्तिहार (पोस्टर)	6,135	275	6,410
गानों की पुस्तिकाएं	5,943	309	6,252
ऑडियो टेप (मौखिक इतिहास)	150	3	153
समाचार कतरन	1,30,273	6,000	1,36,273
पैम्फलेट/फोल्डर	7,255	32	7,287
स्लाइड	2,820	416	3,236
माइक्रोफिश	42	—	42
माइक्रोफिल्म	1,957	—	1,957
डिस्क रिकार्ड	1,858	—	1,858

6.14.5. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार मई 1969 से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार परिसंघ का पूर्ण सदस्य है। इसके फलस्वरूप अभिलेखागार को अभिलेखा आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत दुर्लभ फिल्मों के आदान-प्रदान की सुविधा मिलती है और साथ ही संरक्षण तकनीकों, दस्तावेजों के सूचीकरण आदि के बारे में विशेषज्ञ की राय भी उपलब्ध होती है।

6.14.6. मंत्रालय के आन्तरिक कार्य अध्ययन एकक से फिल्म खरीद और फिल्म पुन:रक्षण के बारे में ताजा अध्ययन शुरू करने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। इसके लिए पिछली जानकारी और संबद्ध आंकड़े आन्तरिक कार्य अध्ययन एकक को भेज दिए गए थे।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान

6.15.1. पुणे स्थित भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान के दो स्कंध है—फिल्म स्कन्ध और टेलीविजन स्कन्ध। फिल्म स्कन्ध सिनेमा में विशेषज्ञता का डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित करता है। इस पाठ्यक्रम में (1) फिल्म निर्देशन, (2) सिनेमोटोग्राफी, (3) ध्वन्यांकन और ध्वनि इंजीनियरिंग, तथा (4) फिल्म सम्पादन शामिल हैं। पहले तीन पाठ्यक्रम तीन-तीन वर्ष के और चौथा दो वर्ष का है।

6.15.2. टेलीविजन स्कन्ध दूरदर्शन के हर वर्ग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण और तकनीकी कार्य संबंधी बुनियादी पाठ्यक्रम के अलावा विशेष क्षेत्रों में अल्पावधि पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। संस्थान एशिया प्रशांत प्रसारण विकास संस्थान, क्वालालम्पुर के सहयोग से विशेष पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं भी आयोजित करता है। यह 'सेंटर इंटरनेशनल द लायजां देस इकोलेस द सिनमा एट द टेलीविजन' का सदस्य है। संस्थान के अध्यापक और विद्यार्थी इस केन्द्र के कार्यक्रमों में नियमित रूप से हिस्सा लेते हैं।

6.15.3. कलकत्ता में सत्यजीत राय भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान की स्थापना की जा रही है। 29 जून, 1993 को इस संस्थान के लिए परियोजना निदेशक सहित चौदह पदों की स्वीकृति प्रदान की गई। कुछ महत्वपूर्ण पद भरने का कार्य चल रहा है।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

6.16.1. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की स्थापना 11 अप्रैल, 1980 को फिल्म वित्त निगम और भारतीय चलचित्र निर्यात निगम का विलय करके की गई थी। इसका उद्देश्य देश में सिनेमा के स्तर को सुधारना और इसकी पहुंच बढ़ाना है। देश में फिल्म आन्दोलन के सही विकास के लिए निगम फिल्मों से संबंधित कई कार्य करता है। यह कम बजट वाली फिल्में बनाने को बढ़ावा देता है। आज भारत में फिल्म बनाने के काम में आने वाली आर्थिक कठिनाइयों का एक हल यह हो सकता है कि कम बजट की, परन्तु ऊंचे स्तर की फिल्में बनाई जाएं।

6.16.2. अन्य देशों के साथ सहयोग करके फिल्म बनाने के कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे पहले सर रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित 'गांधी' फिल्म अत्यधिक सफल रही, फिर इसी कार्यक्रम के तहत मीरा नायर के निर्देशन में बनी 'सलाम बाम्बे' और स्वर्गीय सी. अरविन्दन द्वारा निर्देशित 'उन्नी'। पामेला रूक्स के निर्देशन में तैयार 'मिस बेटीज चिल्ड्रन' भारतीय फिल्म पैनोरमा, 93 में शामिल की गई थी। इसे मांट्रियल और लॉस एंजिलेस में आयोजित फिल्म समारोहों में दिखाया गया। केतन मेहता की 'माया मेमसाब' भारत-ब्रिटेन और फ्रांस का सह-निर्माण थी। इसे राष्ट्रीय पुरस्कारों में विशेष जूरी पुरस्कार प्राप्त हुआ था और यह भारतीय पैनोरमा 93 में शामिल की गई थी। फ्रांस के मैसर्स टैक्नीसोनार के सहयोग से तैयार सात एपीसोड वाले टेलीविजन धारावाहिक 'द न्यू इंडियन ट्रंक' को दूरदर्शन के मैट्रो चैनल से प्रसारित किया गया।

6.16.3. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन के बीच हुए एक समझौते के अन्तर्गत राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेटवर्क से प्रसारण के लिए संयुक्त रूप से अच्छी फीचर फिल्मों और टेलीफिल्मों का निर्माण किया जा रहा है। इन फिल्मों को भारत में और अन्य देशों में वाणिज्यिक और गैर-वाणिज्यिक, दोनों मंचों पर दिखाया जाएगा। अक्तूबर, 1993 तक इस योजना के तहत तीस फिल्में या तो पूरी कर ली गई थीं, या उनका निर्माण चल रहा है।

6.16.4. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम अच्छे कथानक को लेकर जाने-माने निर्देशकों के निर्देशन में फिल्में बनाने का काम भी हाथ में लेता है। 1980-81 में शुरू की गई इस योजना के तहत 1992-93 वर्ष के दौरान पूरी की गई फिल्में हैं—बुद्धदेव दासगुप्त की बंगला फिल्म 'तहादेर कथा' और डा. जब्बार पटेल की मराठी फिल्म 'एक होता विदूषक'। योजना के अंतर्गत स्वीकृत 27 फिल्मों में से 26 पूरी की जा चुकी हैं।

6.16.5. देश में दर्शकों के बैठने की अतिरिक्त सुविधा जुटाने और अच्छे सिनेमा को लोगों तक पहुंचाने की पक्की व्यवस्था करने के उद्देश्य से निगम ने थियेटर वित्त योजना तैयार करके उसे लागू किया। इस योजना के तहत बनाए गए 96 सिनेमाघरों में 31 दिसम्बर, 1992 तक फिल्मों का प्रदर्शन शुरू हो गया था। अप्रैल, 1993 से अक्तूबर, 1993 की अवधि में एक सिनेमाघर के लिए ऋण स्वीकृत किया गया और 8.50 लाख रुपये के तीन ऋण वितरित किए गए।

6.16.6. निगम प्रति वर्ष 30 से 40 फिल्में आयात करता है। प्रयास यही रहता है कि भारतीय दर्शकों को विभिन्न देशों की विविध फिल्में देखने का मौका मिले। लेकिन निगम अपने सीमित साधनों के कारण ज्यादा ध्यान अच्छी किस्म की पारिवारिक मनोरंजन वाली फिल्मों पर देता है। विदेशों से आयात की गई कई फीचर फिल्में और कार्यक्रम दूरदर्शन के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेटवर्क से प्रसारित किए गए। अप्रैल से अक्तूबर, 1993 के दौरान सिनेमाघरों में प्रदर्शन के लिए वीडियो और टेलीविज़न प्रसारण के लिए 12 फीचर फिल्में, 11 वीडियो फिल्में और दूरदर्शन कार्यक्रमों के 105 एपीसोड आयात किए गए।

6.16.7. वर्ष के दौरान निगम ने अपने वितरण नेटवर्क को मजबूत किया। कारोबार की दृष्टि से सफल रहने वाले इसके निर्माणों में 'रुदाली' और 'एक होता विदूषक' शामिल है। बम्बई के शचिनम्, सुन्दरम् और सत्यम् सिनेमाघरों से समझौता किया गया ताकि निगम की फिल्में ज्यादा समय तक दिखाई जा सकें। अक्तूबर, 1993 तक निगम ने देश भर के 75 सिनेमाघरों में 6 भारतीय फिल्में जारी की थीं।

6.16.8. देश के प्रमुख केन्द्रों पर भारतीय पैनोरमा फिल्म समारोह आयोजित करने की योजना 1985-86 में शुरू की गई थी और इसे अच्छा प्रोत्साहन मिल रहा है। इसके साथ ही निगम विभिन्न संस्थाओं और फिल्म समारोह निदेशालय के सहयोग से बड़ी संख्या में पुनरावलोकन और अन्य मिनी समारोह आयोजित करता है। इस अवधि में तिरुअनंतपुरम, पांडिचेरी और बड़ोदरा सहित 17 केन्द्रों पर पैनोरमा फिल्में दिखाई गईं। निगम भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह और अन्य गतिविधियों के आयोजन में फिल्म समारोह निदेशालय से सहयोग लेता है।

6.16.9. राष्ट्रीय फिल्म सर्किल की गतिविधियां भी वर्ष के दौरान जारी रहीं। कई महत्वपूर्ण पुनरावलोकन आयोजित किए गए, जिनमें पीटर लिलएंथल और क्लॉड चैब्रोल की फिल्मों

के दो पुनरावलोकन शामिल हैं। तुर्की, स्वीडन, चीन और जर्मनी के फिल्म-सप्ताह भी आयोजित किए गए।

6.16.10. भारत विश्व के 100 से अधिक देशों को अपनी फिल्में निर्यात करता है। निगम विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भाग लेता है और अपने प्रतिनिधि फिल्म-बाजारों में भेजता है ताकि भारतीय फिल्मों को बढ़ावा मिले। निगम विभिन्न देशों के खरीदारों को आमंत्रित भी करता है। अक्तूबर, 93 तक निगम ने 57 लाख 12 हजार रुपये मूल्य की 82 फिल्मों का निर्यात किया था।

6.16.11. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने दूरदर्शन के मैट्रो चैनल पर प्रसारण शुरू किए हैं। इस चैनल से प्रसारित कुछ सफल और महत्वपूर्ण धारावाहिक/कार्यक्रम हैं—'सुपरहिट मुकाबला', 'जबान सम्भाल के', 'देख भाई देख', 'डम डमा डम डम', 'जंगल बुक', 'फुलवारी बच्चों की', 'मालगुडी डेज़', इत्यादि। इस अवधि में निगम को मैट्रो चैनल से चार करोड़ रुपये की कुल आय हुई।

6.16.12. निगम अपने वितरकों के माध्यम से जनता के लिए पुरानी और पुरस्कार जीतने वाली भारतीय और विदेशी फिल्मों के अच्छे स्तर के अधिकृत वीडियो कैसेट बेचता है। इसने अभी तक वीडियो पर 169 फिल्में जारी की हैं। अक्तूबर, 1993 तक राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने बाजार में 12 फिल्में जारी की थीं।

6.16.13. वीडियो कैसेटों को चोरी से तैयार करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने भारतीय फिल्म उद्योग के सहयोग से एक संस्था गठित की है। जिसका नाम है कॉपीराइट चोरी विरोधी भारतीय परिसंघ। यह परिसंघ भारतीय कंपनी अधिनियम के तहत पंजीकृत है। इसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित कॉर्पीराइट क्रियान्वयन परिषद् का सदस्य बनाया गया है और इसने गठन के बाद से 686 छापे मारे हैं।

6.16.14. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का कलकत्ता केन्द्र फिल्म निर्माण की और निर्माण के बाद की सुविधाएं उपलब्ध कराता है, जिनमें 16 एम.एम. कैमरे, टेप रिकार्डर, संपादन डैस्क और री-रिकार्डिंग थियेटर शामिल हैं। इस थियेटर में 16 एम.एम. और 35 एम.एम. फिल्मों के निर्माण की इलैक्ट्रानिक स्टूडियो प्रणाली भी उपलब्ध है। इस केन्द्र में फिल्मों के संपादन के लिए स्टीनबैक टेबल और एकमेड पिकसाइन उपकरण भी उपलब्ध है।

6.16.15. बम्बई के सब-टाइटलिंग केन्द्र में समग्र तकनीकी सुविधाएं एक ही जगह उपलब्ध हैं और यह केन्द्र अपने आप में पूर्ण इकाई है। अभी तक इस केन्द्र ने एक हजार से ज्यादा फिल्मों के सब-टाइटल तैयार किए हैं, जिससे 4 करोड़ रुपये से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत करने में मदद मिली है। केन्द्र ने बांग्लादेश, श्रीलंका, ईरान वगैरह की विभिन्न एजेंसियों को भी सब-टाइटल देने का काम हाथ में लिया है और यह यू-मैटिक वीडियो कैसेटों के भी सब-टाइटल उपलब्ध कराता है। इस केन्द्र में अब 'लो' और 'हाई' बैंडों पर उच्च क्वालिटी की इलैक्ट्रोनिक सब-टाइटलिंग सुविधा भी उपलब्ध है। 1992-93 में लेसर टाइपसैटिंग और बहुभाषी सब-टाइटलिंग मशीन भी यहां आ गई थी।

6.16.16. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के मद्रास स्थित वीडियो केन्द्र में विश्व प्रसिद्ध

लो बैंड और हाई बैंड यू-मैटिक वी.सी.आर. की मदद से फिल्मों के एक कैसेट से अन्य कैसेट तैयार करने की सुविधा उपलब्ध है। यहां 120 स्लेव वी.सी.आर. की मदद से उच्च क्वालिटी की फिल्मों के अतिरिक्त प्रिंट तैयार करने की सुविधा भी है। केन्द्र में 16 एम.एम. निर्माण सुविधाओं के साथ-साथ 35 एम.एम. निर्माण के वास्ते 35 एम.एम. एरि बी.एल. 111 कैमरा और अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। यहां पर वीडियो और टेलीविजन निर्माण/निर्माण बाद की क्षमता भी मौजूद है। यह केन्द्र फिल्म निर्माताओं को यू-मैटिक कैसेटों के इस्तेमाल से उनकी फिल्में विदेशों के लिए तैयार करने में भी मदद देता है।

6.16.17. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने सिने कलाकारों के कल्याण के लिए 3.42 करोड़ रुपये के कोष से एक न्यास गठित किया है। यह न्यास इसी वर्ष से काम करने लगा है। कोष की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत 194 सिने कलाकारों को लाभ पहुंचाया गया और रिटायर हो चुके 193 सिने कलाकारों को 500 रुपये प्रतिमाह की पेंशन दी जा रही है। इस कोष की स्थापना के बाद से लेकर अक्तूबर, 1993 तक जरूरतमन्द कलाकारों को कुल 13.80 लाख रुपये की सहायता राशि वितरित की गई।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

6.17.1. भारत में फिल्मों के सार्वजनिक प्रदर्शन की अनुमति देने के लिए सरकार ने सिनेमाटोग्राफ अधिनियम, 1952 के तहत केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की स्थापना की। इसका एक अध्यक्ष और 25 अन्य गैर-सरकारी सदस्य हैं। बोर्ड का मुख्यालय बम्बई में है। इसके नौ क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर, बम्बई, कलकत्ता, कटक, गुवाहाटी, हैदराबाद, मद्रास, नई दिल्ली और तिरुअनंतपुरम में है। फिल्मों के परीक्षण में क्षेत्रीय कार्यालयों की सहायता के लिए परामर्शदाता पैनल होते हैं, जिनमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबद्ध विशिष्ट व्यक्ति शामिल होते हैं। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता श्री शक्ति सामंत बोर्ड के अध्यक्ष हैं।

6.17.2. 1993 के दौरान 812 भारतीय फीचर फिल्में (सैल्यूलॉइड) प्रमाणित की गईं। इन फिल्मों का क्षेत्रवार, भाषावार ब्यौरा परिशिष्ट-6 में दिया गया है। इनमें से 182 हिन्दी फिल्में थीं और 504 फिल्में चार दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालयों- बंगलौर, हैदराबाद, मद्रास और तिरुअनंतपुरम द्वारा प्रमाणित की गईं।

6.17.3. 812 भारतीय फीचर फिल्मों में से 657 फिल्में सामाजिक विषयों पर और 91 अपराध संबंधी विषयों पर थीं। 607 (74.75 प्रतिशत) फिल्मों को 'यू' प्रमाण पत्र (जिसका अर्थ है कि इनके सार्वजनिक प्रदर्शन पर कोई प्रतिबंध नहीं), 80 (9.85 प्रतिशत) फिल्मों को 'यू ए' प्रमाण पत्र (12 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए माता-पिता को निर्देश) तथा 125 (15.40 प्रतिशत) फिल्मों को 'ए' प्रमाण पत्र (यानी इनका प्रदर्शन सिर्फ वयस्कों के लिए हो) जारी किए गए। 1993 के दौरान 174 विदेशी फीचर फिल्में प्रमाणित की गईं। इनमें 32 (18.39 प्रतिशत) को 'यू' प्रमाण पत्र, 22 (12.65 प्रतिशत) को 'यू ए' प्रमाण पत्र और 120 (68.96 प्रतिशत) फिल्मों को 'ए' प्रमाण पत्र जारी किए गए।

6.17.4. बोर्ड ने वर्ष के दौरान फीचर्स (2 भारतीय और 3 विदेशी) तथा 749 वीडियो फिल्मों के अलावा 911 भारतीय लघु फिल्मों, 175 विदेशी लघु फिल्मों और 5 लम्बी फिल्मों को भी प्रमाणित किया।

6.17.5. वर्ष के दौरान 7 भारतीय फीचर फिल्मों और 16 विदेशी फीचर फिल्मों को प्रमाण पत्र देने से इंकार किया गया, क्योंकि उनमें वैधानिक फिल्म प्रमाणन निर्देशों का उल्लंघन किया गया था। इनमें से कुछ फिल्मों को बाद में संशोधित रूप में स्वयं बोर्ड द्वारा अथवा फिल्म प्रमाणन अपील ट्रिब्यूनल द्वारा प्रमाणित किया गया। सैल्यूलॉइड फिल्मों में से 14602.27 मीटर लम्बाई के अंश दिशा–निर्देशों के उल्लंघन के कारण काटे गये। इनमें से 12,003.04 मीटर के अंश भारतीय फीचर फिल्मों में से और 2,448.76 मीटर के अंश विदेशी फीचर फिल्मों से, 77.06 मीटर भारतीय लघु चित्रों से और 73.41 मीटर के अंश विदेशी लघु चित्रों से काटे गए।

6.17.6. केन्द्र फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने भारतीय फीचर फिल्म की हर प्रविष्टि से 1000/– रुपये का शुल्क लेना जारी रखा।

6.17.7. बोर्ड के पहले के निर्णय के अन्तर्गत सलाहकार पैनलों और जांच अधिकारियों के लाभ के लिए विभिन्न क्षेत्रीय केन्द्रों में कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन केन्द्रों में प्रमाणित फिल्मों के वे हिस्से दिखाने की व्यवस्था है, जो काटे गए थे। इन काटे हुए अंशों पर सदस्यों की प्रतिक्रिया भी प्राप्त की गई। इनमें से कुछ कार्यशालाओं में फिल्मों के अन्य क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा काटे गए अंशों पर चर्चा की गई और सदस्यों की कठिनाइयों पर भी विचार किया गया।

अध्याय 7

पत्र सूचना कार्यालय

7.1.1. पत्र सूचना कार्यालय सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी देने वाली प्रमुख एजेंसी है। यह अपने मुख्यालय और 38 क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों के जरिए सभी सूचना माध्यमों–मुद्रित, श्रव्य, दृश्य और इलैक्ट्रानिक को सूचनाएं प्रदान करता है (देखिए परिशिष्ट 8)। पत्र सूचना कार्यालय सरकार और सूचना माध्यमों के बीच सम्पर्क का कार्य करता है।

7.1.2. पत्र सूचना कार्यालय के सूचना कर्मी मंत्रालयों/विभागों से सम्बद्ध रहते हैं और विभिन्न कार्य निपटाते हैं। उनके महत्वपूर्ण कार्य हैं– सूचना माध्यमों को जानकारी देना और समाचारपत्रों में छपी अपने–अपने मंत्रालय से संबंधित रिपोर्टों तथा जनता की शिकायतों के बारे में फीड बैक उपलब्ध कराना।

7.1.3. इस वर्ष पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय और उसके क्षेत्रीय तथा शाखा कार्यालयों ने सूचना माध्यमों के लिए विभिन्न भाषाओं में 35,049 विज्ञप्तियां जारी की। पत्रकारों के लिए सरकारी सूत्रों से सूचना एकत्र करने का कार्य आसान बनाने के लिए पत्र सूचना कार्यालय, केन्द्रीय प्रेस मान्यता समिति की सिफारिश पर मान्यता प्रदान करता है। कुल 1,283 पत्रकारों, कैमरामैन और टैक्नीशियनों को मान्यता प्रदान की गईं।

वर्ष की उपलब्धियां

7.2.1. भारत सरकार की महत्वपूर्ण उपलब्धियों एवं निर्णयों को दर्शाने के लिए कार्यालय ने पिछले वर्ष के दौरान अपने प्रयास जारी रखे। ढाई वर्ष के आर्थिक सुधारों के परिणामस्वरूप प्राप्त हुए सकारात्मक परिणामों का प्रचार उच्च श्रेणी के मल्टी–मीडिया के माध्यम से किया गया। वित्त मंत्री की विशेषज्ञ दलों के साथ हुई बजट–पूर्व चर्चाओं का व्यापक रूप से प्रचार किया गया। 1993–94 के बजट में उठाए गए साहसिक कदमों और आर्थिक सर्वेक्षणों का वित्त एकक द्वारा कम्प्यूटर यूनिट में तैयार किए गए ग्राफिक्स की सहायता से व्यापक प्रचार किया गया। बजट–बाद सम्मेलनों एवं मध्यान्ह भोजन की बैठकों के दौरान बजट में किए गए प्रयासों तथा उठाए गए कदमों के पीछे किए गए तर्कों की व्याख्या करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आर्थिक विषयों के सम्पादकों का तीन दिन का सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें 150 से अधिक पत्रकारों को आर्थिक मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारियों एवं मंत्रियों द्वारा जानकारी दी गयी।

7.2.2. पत्र सूचना कार्यालय द्वारा दिसंबर 93 में नौ देशों के सबके लिए शिक्षा सम्मेलन और पूर्व सम्मेलन के लिए मल्टी–मीडिया प्रचार अभियान का आयोजन किया गया। संपादकों के एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें पूरे देश के 70 से अधिक संपादकीय लेखकों, स्तंभ लेखकों और विशेष संवाददाताओं ने भाग लिया। 'सबके लिये शिक्षा' सम्मेलन के प्रचार के लिए संवाददाता सम्मेलनों और प्रेससार–संक्षेप का प्रबंध भी किया गया। इसके अलावा एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन का आयेजन भी किया गया

जिसे सभी नौ देशों के नेताओं द्वारा संबोधित किया गया। एक महीने के प्रचार के दौरान बहुत सी प्रेस विज्ञप्तियां भी जारी की गई।

7.2.3. पत्र सूचना कार्यालय के गृह एवं कार्मिक विभाग ने जनवरी-दिसंबर 1993 की अवधि के दौरान राष्ट्रीय स्थिति को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। इसमें अयोध्या पैकेज, राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद प्रांगण में भूमि अर्जित करने संबंधी अध्यादेश की मुख्य विशेषताएं और राष्ट्रपति द्वारा सर्वोच्च न्यायालय को दिए गए संदर्भ, जम्मू-कश्मीर की स्थिति और सरकार द्वारा आतंकवाद को रोकने के लिए किए जा रहे प्रयासों पर ध्यान दिया गया। जिसमें राजनीतिक प्रक्रिया को फिर से शुरू करने के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करने एवं राज्य में आर्थिक गतिविधियों को पुनः आरम्भ किए जाने के प्रयास, पंजाब में शांति की वापसी, अयोध्या पर श्वेत-पत्र जारी करना, झारखंड समस्या को सुलझाने का प्रयास, 21 मई को आतंकवाद विरोधी दिवस मनाना और 19-25 नवंबर तक कौमी एकता सप्ताह मनाया जाना जैसे मुद्दे शामिल थे। कार्यालय ने हजरतबल संकट से निपटने के लिए सरकार के विचार को सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया।

7.2.4. सरदार सरोवर परियोजना के क्रियान्वयन से संबंधित विभिन्न मुद्दों, पुर्नवास एवं पुनस्थापित करने की समस्या, विश्व बैंक की सहायता और परियोजना से जुड़े पर्यावरण मुद्दों का व्यापक प्रचार किया गया।

7.2.5. पत्र-सूचना कार्यालय के कल्याण विभाग ने इस अवधि के दौरान केन्द्र सरकार एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अन्य पिछड़े वर्गों (ओ.बी.सी.) के लिए नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण को कार्यान्वित करने के लिए व्यापक प्रचार की व्यवस्था की। इस संदर्भ में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में लगभग 200 पत्रकारों ने हिस्सा लिया।

7.2.6. मार्च 1993 में प्रारूप कृषि नीति को मुख्य मंत्रियों द्वारा अनुमोदित किए जाने का मल्टी-मीडिया प्रचार आयोजित किया गया। चुनाव आयोग को तीन सदस्यीय आयोग में परिवर्तित करने के अध्यादेश को जारी करने के लिए व्यापक प्रचार का प्रबंध किया गया। कुछ राज्य विधान सभाओं एवं संसद के उप चुनावों से संबंधित मुद्दों का व्यापक प्रचार किया गया और प्रेस को पिछले वर्षों की सामग्री भी उपलब्ध कराई। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाने और ग्राहक संरक्षण अधिनियम और आवश्यक वस्तुओं के दामों पर नियंत्रण रखने के लिए सरकार के प्रयासों का प्रचार करने के लिए पत्रकारों के साथ संवाददाता सम्मेलन आयोजित किए गए, जिसमें पिछले वर्षों की जानकारी और ज्ञापन जारी किए गए। जनवरी 1994 में कलकत्ता में आयोजित पच्चीसवें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के पूर्व समारोह प्रचार और चालीसवें राष्ट्रीय फिल्म समारोह का व्यापक प्रचार किया गया।

7.2.7. आम आदमी के लिए सरकारी नीतियों को और अधिक स्पष्ट बनाने के उद्देश्य से सम्बद्ध मंत्रालयों के मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मीडिया प्रतिनिधियों के साक्षात्कार आयोजित किए गए। विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों के 894 संवाददाता सम्मेलनों के अलावा पत्र सूचना कार्यालय ने दिसंबर 1993 में सबके लिए शिक्षा तथा जनवरी 1994 में कलकत्ता में आयोजित भारत का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के लिए सम्मेलन आयोजित करने के उद्देश्य से एक मीडिया सेंटर भी स्थापित किया।

फीडबैक और विशेष सेवाएं

7.3.1. पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय तथा इसके क्षेत्रीय और शाखा कार्यालयों ने विभिन्न भाषाओं में 1,610 से भी अधिक विशेष फीचर जारी किये। ये सचित्र फीचर, फोटो फीचर, 'डू यू नो', 'फैक्ट शीट्स', 'फैक्ट एट ए ग्लांस', 'ग्लॉसरी', 'ट्रेन्ड्स एट ए ग्लांस', विकास संबंधी समाचारों पर ग्राफिक चित्रों, सरकारी कार्यक्रमों की विशेषताएं बताने वाले फीचरों, सद्भावना दिवस, कॉमी एकता सप्ताह और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित थे। इसके अलावा स्वाधीनता दिवस और गणतंत्र दिवस पर भी विशेष फीचर जारी किये गये।

7.3.2. पत्र सूचना कार्यालय के फीड बैक सेल ने समाचारों और विचारों पर आधारित दैनिक सार-संक्षेप तैयार किये। डंकल प्रस्तावों, जे.पी.सी. रिपोर्ट, राज्यों में चुनाव, प्रतिभूति घोटाला ,चुनाव-आयोग और कश्मीर की स्थिति पर भी 157 विशेष सार-संक्षेप जारी किये गए। इसके अलावा केंद्रीय बजट, रेल बजट और आर्थिक विषयों पर भी विशेष सार-संक्षेप जारी किये गए। विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को हिंदी और अंग्रेजी समाचारपत्रों की लगभग 8 लाख से अधिक कतरने भेजी गयीं।

फोटो सेवा

7.4. पत्र सूचना कार्यालय ने 1,775 समाचार फोटो की 2,75,546 प्रतियां समाचारपत्रों तथा अन्य प्रकाशनों के लिए जारी कीं। फोटो लाइब्रेरी के एलबमों में 5,333 नये फोटो जोड़े गये। इसके अलावा पत्र सूचना कार्यालय ने छोटे और मझोले समाचारपत्रों को 1,444 एबोनाइड ब्लाक भी दिये।

अध्याय 8

भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक

8.1.1. भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय का एक सम्बद्ध कार्यालय है। यह समाचारपत्रों के नामों की उपलब्धता की पुष्टि, नियमन तथा पंजीकरण करता है। यह एक वार्षिक रिपोर्ट 'प्रैस इन इंडिया' का प्रकाशन भी करता है। यह कार्यालय सरकारी नीति के अनुरूप पत्र-पत्रिकाओं को अखबारी कागज आबंटित करता है तथा समाचारपत्रों की आवश्यकता के अनुरूप छपाई मशीनों और अन्य संबंधित उपकरणों के आयात की अनिवार्यता का प्रमाण-पत्र देता है।

8.1.2. अप्रैल-अक्तूबर 1993 के दौरान कार्यालय ने 6,216 आवेदन पत्रों का निपटान किया। कार्यालय ने वर्ष 1993-94 के लिए निश्चित किए गए नामों के सम्बंध में 10,000 आवेदन पत्रों के लक्ष्य के मुकाबले पत्र/पत्रिकाओं के पंजीकरण के 10,510 आवेदन पत्र निपटाए। शीघ्र निपटान का यह श्रेय कम्पयूटर-प्रणाली की सहायता से की गई कड़ी मेहनत को जाता है। इसी अवधि के दौरान 870 समाचारपत्रों को पंजीकरण प्रमाण-पत्र जारी किए गए। वर्ष के अंत तक इन पंजीकरणों की संख्या 1,335 तक हो जाने की आशा है।

8.1.3. अप्रैल से अक्तूबर 1993 के दौरान भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक ने समाचार-पत्रों की प्रसार संख्या सम्बंधी 292 दावों की जांच की। वर्ष के अंत तक समाचारपत्रों के 1,000 और प्रसार सम्बंधी दावों की जांच की जाने की आशा है।

8.1.4. वार्षिक रिपोर्ट 'प्रेस इन इंडिया'- 1991 की बिक्री शुरु हो गई है। वार्षिक रिपोर्ट 1992 शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। 'प्रेस इन इंडिया' 1993 के लिए सूचनाओं का संकलन कर लिया गया है। प्रकाशन विभाग द्वारा इसका प्रकाशन-कार्य शीघ्र ही आरम्भ किया जाएगा।

8.1.5. भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक के मुख्यालय में कम्प्यूटर प्रणाली को और उन्नत बनाया जा रहा है। वर्ष के दौरान कलकत्ता के क्षेत्रीय कार्यालय को कम्प्यूटर प्रणाली से जोड़ा जाएगा। मार्च 1994 के अंत तक कम्प्यूटर और अन्य उपकरणों के स्थल-निर्माण और उनके संस्थापन का कार्य पूरा हो जाने की आशा है।

अखबारी कागज

8.2. समाचारपत्रों को अधिकार पत्र जारी करने के लिए 4 मई, 1993 को दिशा निर्देश जारी कर दिये गए, ताकि वे वर्ष 1993-94 की अखबारी कागज आयात नीति के अनुसार अखबारी कागज का आयात और खरीद कर सकें। लघु और मध्यम दर्जे के समाचारपत्रों को दी गयी सुविधाएं और रियायतें बरकरार रखी गयीं हैं। बड़े समाचारपत्रों के लिए नीतियों को उदार बनाया गया है। जिन समाचारपत्रों को वर्ष में 200 मीट्रिक टन तक स्टैंडर्ड अखबारी कागज आयात करने का अधिकार है, उन्हें अपनी इच्छानुसार अखबारी कागज आयात करने का प्रमाण पत्र जारी किया जा रहा है। पत्रिकाओं को भी अपनी इच्छानुसार ग्लेज्ड कागज आयात करने का स्वीकृति प्रमाण पत्र जारी किया जा रहा है। जिन

समाचारपत्रों का वार्षिक अधिकार निर्धारित 200 मीट्रिक टन से कम है, उन्हें भी भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक द्वारा निर्धारित मात्रा में एक या दो किस्तों में अखबारी कागज आयात करने के स्वीकृति प्रमाण-पत्र जारी किए जा रहे हैं।

छपाई मशीनें

8.3. अप्रैल-अक्तूबर 1993 के दौरान समाचारपत्र प्रतिष्ठानों को 16.28 लाख रुपये की छपाई मशीनों तथा सम्बद्ध उपकरणों के आयात की अनुमति दी गई।

अध्याय 9

प्रकाशन विभाग

9.1. प्रकाशन विभाग सरकार का सबसे बड़ा प्रकाशन संगठन है। यह 1941 में ब्यूरो ऑफ पब्लिक इन्फार्मेशन की एक शाखा के रूप में स्थापित किया गया था तथा 1944 में इसने वर्तमान नाम और अलग पहचान कायम की। स्वतंत्रता के बाद पिछले 46 वर्षों के दौरान विभाग ने राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर पुस्तकों और पत्रिकाओं के उत्पादन, बिक्री और वितरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभाग का उद्देश्य जनसाधारण तक सूचना पहुंचाना और देश भर के पाठकों को उचित मूल्य पर सूचना तथा शिक्षाप्रद साहित्य उपलब्ध कराना है।

पुस्तकें

9.2.1. प्रकाशन विभाग 'आधुनिक भारत के निर्माता', 'भारत के गौरव ग्रंथ' आदि शृंखलाओं और भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति तथा राष्ट्रीय सम्पदा से संबंधित विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन करता है। विभाग द्वारा बच्चों के लिए पुस्तकें और अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में पत्रिकाएं भी प्रकाशित की जाती हैं।

9.2.2. विभाग ने बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय का पहला खंड हिन्दी, तमिल और गुजराती में प्रकाशित कर दिया है। इसका लोकार्पण 12 अप्रैल, 1993 को प्रधानमंत्री ने किया।

9.2.3. प्रकाशन विभाग द्वारा अप्रैल 1993 से जनवरी 1994 के दौरान प्रकाशित की गई कुछ पुस्तकों में निम्नलिखित पुस्तकें शामिल हैं:– आधुनिक भारत के निर्माता शृंखला के तहत 'जगदीश चन्द्र बोस', 'काका साहेब गाडगिल', 'सलैक्टेड स्पीचिज़ एण्ड राइटिंग्ज ऑफ प्रेसीडेंट आर. वैंकटरमन' वाल्यूम-II, 'सिलैक्टेड स्पीचिज एण्ड राइटिंग्ज़ ऑफ प्राईम मिनिस्टर पी.वी. नरसिम्ह राव' वाल्यूम-II, 'इंडिया 1993-ए रेफ्रेंस एनुअल', 'ग्लिंपसिज़ ऑफ इंडियन टैक्नोलोजी', 'ए गाइड टु होम गार्डनिंग', 'चैलेंज टू दि एम्पायर, ए स्टडी ऑफ नेताजी', 'दि स्टोरी ऑफ एट सेंट रिफार्मर्ज', 'सरदार पटेल मेमोरियल लैक्चर्स–1991' (सैंटर-स्टेट रिलेशंस), 'मास मीडिया इन इंडिया–1992' और 'श्यामजी कृष्ण वर्मा'। इनके अलावा अंग्रेजी में कला विषयों से संबंधित पांच किताबें प्रकाशित की गई हैं–'सम आस्पैक्ट्स ऑफ इंडियन कल्चर', 'चौरा पंच शिखा–ए संस्कृत लव लिरिक', 'कांगड़ा पेंटिग्ज़ ऑन लव', और 'लाईफ ऑफ कृष्णा इन इंडियन आर्ट'। इस दौरान हिन्दी में प्रकाशित की गई पुस्तकों में निम्नलिखित शामिल हैं:– 'भारत–1993', 'रसिक प्रिया', 'सिस्टर निवेदिता', 'बुग्याल के देश में', 'कम्प्यूटर सबके लिए', 'बज्जिका की लोक कथाएं', 'हमारा पर्यावरण', 'भारत के दुर्ग', 'सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता', 'आदिवासी कला', 'भारत–1992', 'राजस्थान के भूले-बिसरे पत्रकार' और 'बालकृष्ण शर्मा नवीन'।

इस अवधि के दौरान विभाग ने अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में कुल 65 पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

9.3. सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय का अंग्रेजी और हिन्दी में प्रकाशन इस विभाग की एक महत्वपूर्ण परियोजना है। इसके तहत अंग्रेजी में 90 खंड और हिन्दी में 84 खंड पहले ही प्रकाशित किए जा चुके हैं। इंडैक्स के दो खंड– एक विषय से संबंधित और दूसरा नामों से संबंधित, इस वृहद गांधी साहित्य की मुख्य शृंखला की निर्देशिका का काम करते हैं। गांधी साहित्य से संबंधित आठ पुस्तकों का पुनर्मुद्रण भी किया गया है।

पत्रिकाएं

9.4.1. प्रकाशन विभाग द्वारा अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनेक पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य देश में चल रही विभिन्न घटनाओं की सूचना उपलब्ध कराना है।

9.4.2. विभाग की एक प्रमुख पत्रिका 'योजना' सभी वर्गों के लिए योजना से संबंधित सूचनाएं देती है और सामाजिक तथा आर्थिक विकास की समस्याओं पर एक गम्भीर बहस को प्रोत्साहित करती है। यह पत्रिका 13 भाषाओं में प्रकाशित होती है। इसके अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और तेलुगु संस्करण पाक्षिक हैं, जबकि शेष– असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी और उर्दू संस्करण हर महीने प्रकाशित होते हैं। उड़िया संस्करण की शुरुआत इस वर्ष गांधी जयंती के अवसर पर की गई। राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर हर साल इस पत्रिका के दो विशेषांक प्रकाशित किए जाते हैं– एक स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर और दूसरा गणतंत्र दिवस के अवसर पर। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस विशेषांक में कृषि को विशेष महत्व प्रदान किया गया। इसमें कृषि क्षेत्र के प्रख्यात विशेषज्ञों के सारगर्भित लेख प्रकाशित किए गए। गणतंत्र दिवस 1994 के अवसर पर प्रकाशित विशेषांक में 'सबके लिए शिक्षा' के सरकार के प्रयास के तहत 'शिक्षा' को मुख्य विषय बनाया गया था। औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों में, जिनमें साक्षरता, जनजातीय शिक्षा, महिलाओं के लिए शिक्षा, दूरदराज के इलाकों में शिक्षा, शिक्षा का विकेन्द्रीकरण और शिक्षा के स्तर में सुधार शामिल हैं, को इस विशेषांक में मुख्य रूप से प्रकाशित किया गया। इसके अलावा व्यावसायिक कुशलता हासिल करने के अधिक से अधिक अवसरों से संबंधित जानकारियां भी इस अंक में प्रकाशित की गई हैं। स्वामी विवेकानन्द की भारत परिक्रमा और शिकागो में धार्मिक संसद में उनके भाषण की शताब्दी के अवसर पर योजना (अंग्रेजी) ने राष्ट्रीय अखंडता विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त पत्रिका के विभिन्न अंकों में गांधी और भारतीय अर्थव्यवस्था, जवाहरलाल नेहरू, एनी बेसेंट, जलियांवाला बाग, भारत छोड़ो आंदोलन, पंचायती राज आदि से संबंधित लेख प्रकाशित किए गए। पत्रिका के अन्य अंकों में 1993–94 के केन्द्रीय बजट के बारे में गहन जानकारी और रेलवे बजट, 1992–93 का आर्थिक सर्वेक्षण, आर्थिक सुधारों, भूमि सुधारों, निर्यात, उद्योग, पर्यावरण, नई ऋणनीति, डंकल प्रस्तावों और ग्रामीण विकास आदि से संबंधित लेख प्रकाशित किए गए।

9.4.3. विभाग द्वारा ग्रामीण विभाग की ओर से एक मासिक पत्रिका 'कुरुक्षेत्र' का प्रकाशन हिन्दी और अंग्रेजी में किया जाता है। इसमें कृषि, पर्यावरण और समूचे विकास आदि से संबंधित गतिविधियों के बारे में लेख प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिका ने इस अवधि के

दौरान ग्रामीण विकास में कृषि विपणन, केन्द्रीय बजट 1993-94, ग्रामीण विकास, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और बच्चों का विकास और पंचायती राज आदि से संबंधित विषयों पर विशेष लेख प्रकाशित किए।

9.4.4. बच्चों के लिए हिंदी में प्रकाशित लोकप्रिय पत्रिका 'बाल भारती' में बच्चों की कहानियों के अलावा उन्हें महत्वपूर्ण जानकारी देने वाली सामग्री प्रकाशित की जाती है। पत्रिका ने इस वर्ष राहुल सांकृत्यायन जैसे प्रख्यात लेखकों, प्रमुख नेताओं के जन्म दिवसों और पुण्य तिथियों पर लेख प्रकाशित किए। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता नरेश मेहता और शिकागो में स्वामी विवेकानन्द के भाषण की शताब्दी के अवसर पर भी संबंधित लेख प्रकाशित किए गए।

9.4.5. साहित्यिक मासिक पत्रिका 'आजकल' हिंदी और उर्दू में प्रकाशित की जाती है। इसमें इस वर्ष राहुल सांकृत्यायन, राजा रवि वर्मा की जन्म शताब्दी और प्रख्यात कवि शमशेर बहादुर सिंह तथा 25वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह पर लेख प्रकाशित किए गए। नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर एक विशेषांक भी प्रकाशित किया गया, जिसमें साहित्यिक पहलुओं पर विशेष जोर दिया गया था।

रोजगार समाचार

9.5. प्रकाशन विभाग का रोजगार समाचार एकक हर सप्ताह अंग्रेजी में एम्प्लायमेंट न्यूज और हिंदी तथा उर्दू में रोजगार समाचार का प्रकाशन करता है। इस पत्र में केंद्र/राज्य सरकारों की नौकरियों के संबंध में सूचना प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा इसमें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं और साक्षात्कारों के लिए तैयारी करने वाले अभ्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक सामग्री भी दी जाती है। इस साप्ताहिक में विशिष्ट विषय शृंखला के जरिए सामयिक अंतर्राष्ट्रीय मसलों और घटनाओं के बारे में टिप्पणियां और विस्तृत लेख भी प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें प्रकाशित की जाने वाली लोकप्रिय सामग्री में 'डायरी ऑफ इवेंटस', 'टैस्ट युअर नालेज', 'डू यू नो?', 'इंडिया दिस वीक' और 'वर्ल्ड दिस वीक' के साथ लेखों की एक और नई शृंखला 'अपनी हिंदी सुधारें' प्रकाशित की गई। पिछले कुछ वर्षों के दौरान इस पत्र की प्रसार संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस वर्ष के दौरान पत्र की औसत संख्या कुल 4.40 लाख प्रतियां थी।

प्रदर्शनियां

9.6. आलोच्य वर्ष के दौरान विभाग ने अक्तूबर 1993 तक 40 पुस्तक-प्रदर्शनियों में भाग लिया और अपनी बिक्री बढ़ाने के प्रयासों को और तेज किया। विभाग ने अन्य मीडिया एककों के साथ मिल कर विभिन्न राज्यों में बहु-मीडिया अभियान का आयोजन किया और उसमें अपनी पुस्तकों का प्रचार-प्रसार किया। इसने नई दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में भी भाग लिया और किताबों की बिक्री से 4.24 लाख रुपये से अधिक का राजस्व अर्जित किया।

विपणन

9.7. विभाग अपनी पुस्तकों की बिक्री अपने नई दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, पटना, लखनऊ, तिरुअनंतपुरम और हैदराबाद स्थित विक्रय केंद्रों तथा विभिन्न एजेंटों के माध्यम से करता है। विभाग द्वारा अपने विक्रय केंद्रों पर सरकारी और अर्धसरकारी संगठनों की पुस्तकों की बिक्री भी की जाती है।

राजस्व

9.8. अप्रैल 1993 से जनवरी 1994 की अवधि के दौरान पुस्तकों, पत्रिकाओं और रोजगार समाचार की बिक्री से प्रकाशन विभाग ने 933.53 लाख रुपयों का कुल राजस्व कमाया। इसी अवधि के दौरान रोजगार समाचार के जरिए 802.95 लाख रुपये का राजस्व कमाया।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र पुरस्कार

9.9. जनसंचार माध्यमों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक लेखन के लिए विभाग द्वारा हर साल भारतेंदु हरिश्चन्द्र पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

अध्याय 10

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

10.1.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, क्षेत्र आधारित संगठन होने के कारण अपनी स्थापना के समय से ही राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस कार्य में वह समाज के हर वर्ग के लोगों का सक्रिय सहयोग प्राप्त कर रहा है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से कमजोर और दलित वर्गों के लोगों के लिए सरकार द्वारा बनायी गयी विकास योजनाओं और गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ाने की कोशिश करता है।

10.1.2. कुशल कर्मचारियों और उपयुक्त साज-सामान से सुसज्जित क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयां घर-घर जाकर लोगों को हमारे देश के विविधतापूर्ण सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप की जानकारी देती हैं। वे दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों को इस बात की प्रेरणा देती हैं कि वे देशवासियों के बेहतर भविष्य के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ें। इसके लिए कई तरह के कार्यक्रमों का सहारा लिया जाता है जिनमें फिल्में, गीत और नाटक मंडलियों के कार्यक्रम तथा मौखिक संचार और विशेष कार्यक्रम जैसे परिचर्चा, जनसभा, विचार गोष्ठी तथा विभिन्न किस्म की प्रतियोगिताएं शामिल हैं। फिल्मों का चयन स्थानीय परिस्थितियों और प्रचार आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। क्षेत्रीय प्रचार संगठन सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों तथा ग्राम के स्तर पर उनके क्रियान्वयन के बारे में जनता की प्रतिक्रिया प्राप्त करता है और आवश्यक कार्रवाई के लिए सरकार को इससे अवगत कराता है। इस तरह निदेशालय सरकार और जनता के बीच दोहरी संचार व्यवस्था कायम करता है।

संगठन

10.2. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। देश के विभिन्न भागों में इसके 22 क्षेत्रीय कार्यालय और 258 इकाइयां हैं। निदेशालय के प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय के अधीन 8 से 18 तक इकाइयां हैं। कुछ बड़े राज्यों को दो क्षेत्रों में बांट दिया गया है जबकि छोटे राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को मिलाकर एक क्षेत्र बनाया गया है। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के क्षेत्रीय कार्यालयों और इकाइयों की सूची परिशिष्ट 'नौ' में दी गई है।

गतिविधियां

10.3.1. प्रत्येक क्षेत्रीय इकाई अपने आप में सम्पूर्ण बहुआयामी प्रचार संगठन है, जिसके पास वाहन, सिनेमा प्रोजेक्टर, सार्वजनिक सभा को संबोधित करने के लिए उपकरण, टेप रिकार्डर और ट्रांजिस्टर उपलब्ध रहता है। इसके अलावा जिन इलाकों में बिजली नहीं होती वहां फिल्म दिखाने के लिए बिजली का जेनरेटर भी रहता है। आधुनिकीकरण की योजना के अंतर्गत कुछ इकाइयों को सचल वीडियो प्रोजेक्शन प्रणालियां उपलब्ध कराई गई हैं। क्षेत्रीय इकाइयां हर महीने 12 से 15 दिन अपने-अपने क्षेत्र में दौरे पर रहती हैं। प्रचार संबंधी गतिविधियों के संचालन में वे राज्य सरकार के संगठन और स्वयंसेवी संस्थाओं से तालमेल बनाए रखती हैं।

10.3.2. क्षेत्रीय इकाइयों ने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों जैसे राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, लोकतंत्र के प्रति वचनबद्धता, धर्म निरपेक्षता, मादक द्रव्यों के दुरुपयोग, नशाखोरी, दहेज और बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन और स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण पर विशेष प्रचार किया। इस कार्य में फिल्म प्रदर्शन, गीत और नाटक, मौखिक संचार के कार्यक्रम तथा विशेष प्रतियोगिताएं और मुकाबलों आदि की सहायता ली गई। लेकिन देश के विभिन्न भागों में स्थिति को देखते हुए राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर ज्यादा जोर दिया गया। इसके अलावा समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए सरकार के विभिन्न ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के प्रचार पर भी बल दिया गया।

10.3.3. अप्रैल 1993 से सितम्बर 1993 तक क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने समाज के सभी वर्गों के लोगों के लिए 26,780 फिल्म शो, 4,562 गीत और नाटक कार्यक्रम, 17,373 फोटो प्रदर्शनियां और 30,130 मौखिक संचार कार्यक्रम आयोजित किए।

10.3.4. निदेशालय की इकाइयों ने गांधी-जयंती, पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री लाल बहादुर शास्त्री, डा. बी.आर. अम्बेडकर और डॉक्टर राधाकृष्णन की जयंती जैसे अवसरों पर राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र, स्वाधीनता आंदोलन आदि विषयों पर संदेश प्रसारित किए। इसी तरह विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व जनसंख्या दिवस, विश्व पोषाहार दिवस, सार्क बालिका दशक, टीकाकरण दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस आदि अवसरों पर भी क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने राष्ट्रीय महत्व के विषयों और कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किया।

सद्भावना समारोह

10.4. जन साधारण में अधिक चेतना और उनमें भागीदारी की भावना पैदा करने तथा साम्प्रदायिक सद्भाव को मजबूत करने के उद्देश्य से विभिन्न संचार माध्यमों के जरिए उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और तमिलनाडु में सद्भावना समारोहों का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय इकाइयों ने गीत एवं नाटक प्रभाग, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, प्रकाशन विभाग, दूरदर्शन, आकाशवाणी, जैसे सहयोगी प्रचार माध्यमों के घनिष्ट सहयोग से ग्राम-स्तर पर गहन प्रचार कार्यक्रम भी चलाए। इन अभियानों में राज्य सरकारों के नशाबंदी, राष्ट्रीय बचत संगठन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण जैसे विभागों का कारगर सहयोग प्राप्त किया गया। इसके अलावा, इन अभियानों के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों में राज्यों के सूचना विभागों और जिला प्रशासन का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया गया। ये कार्यक्रम लोगों द्वारा सराहे गए। अभियानों के दौरान पारम्परिक और आधुनिक दोनों ही प्रकार के प्रचार माध्यमों का लोगों की आवश्यकता अनुसार उपयोग किया गया। सेमिनार, गोष्ठियां, भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, देशभक्तिपूर्ण गीत प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता और स्वस्थ बच्चा प्रतियोगिता जैसे विभिन्न प्रकार के विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय एकता

10.5. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने दृश्य-श्रव्य संचार माध्यमों के जरिए देश भर में राष्ट्रीय एकता के संदेश का प्रचार जारी रखा। कुछ चुने हुए इलाकों और नाजुक

क्षेत्रों में विशेष प्रचार कार्यक्रम आयोजित किए गए। 19 नवम्बर से 25 नवम्बर, 1993 तक देश भर में 'कौमी एकता सप्ताह' मनाया गया। कौमी एकता के संदेश के प्रचार के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें फिल्म शो, गीत और नाटकों के कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, भाषण, विचार-गोष्ठियां तथा देशभक्ति के गीतों की प्रतियोगिताएं शामिल थीं। धर्मनिरपेक्षता के प्रति देश की वचनबद्धता के प्रचार के लिए क्षेत्रीय इकाइयों ने विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। 20 अगस्त को सद्भावना दिवस के अवसर पर भी कई क्षेत्रीय कार्यक्रम आयोजित किए गए। जलियांवाला बाग शहीद दिवस की 75वीं जयंती पर देश भर में विशेष प्रचार अभियान चलाया गया। 'भारत छोड़ो' आंदोलन की स्वर्ण जयंती के वर्ष भर चले समारोहों की समाप्ति पर क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने इस आंदोलन के महत्व पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया।

20-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम का प्रचार

10.6.1. बीस सूत्री कार्यक्रम के प्रचार का उद्देश्य लोगों, विशेष रूप से समाज के कमजोर वर्गों की दशा में सुधार करना था । क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने विभिन्न संचार माध्यमों के जरिए अनेक कार्यक्रमों द्वारा इसका प्रचार किया। इन कार्यक्रमों का आयोजन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि जिस क्षेत्र और जिन श्रोताओं के लिए इन्हें बनाया गया है, उनके लिए इनके संदेश की सार्थकता बनी रहे। केन्द्रीय बजट के सकारात्मक पक्षों और गरीबों, छोटे और सीमान्त किसानों तथा मजदूरों के लिए इसमें दी गई रियायतों के प्रचार पर भी पूरा ध्यान दिया गया। कीमतें कम करने के लिए उठाए गए कदमों के प्रचार के लिए परिचर्चाएं आयोजित की गईं और मौखिक संचार विधियों का सहारा लिया गया।

10.6.2. केरल प्रादेशिक कार्यालय ने एरनाकुलम में 25 सितम्बर, 1993 को पंचायत अध्यक्षों के लिए पहली बार राज्य स्तरीय सेमिनार आयोजित किया। इस अनूठे प्रयास का उद्देश्य पंचायती राज पर चर्चा करने का था। इस सेमिनार में राज्य के लगभग 650 पंचायत अध्यक्षों ने भाग लिया तथा केरल के मुख्यमंत्री ने इसका उद्घाटन किया और केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री इसके प्रमुख वक्ता थे। सेमिनार की महत्वपूर्ण सिफारिशें थीं- (क) केरल में, केवल ब्लॉक स्तर पर ही पंचायत राज परिषदें रखना, (ख) अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के आश्रितों के लिए क्रमानुवर्तन के आधार पर आरक्षण और (ग) विधायकों की सदस्यता को जिला स्तर परिषदों तक ही सीमित रखना। सेमिनार में केन्द्रीय राज्यमंत्री द्वारा ग्रामीण विकास कार्यक्रम पर 'आमने-सामने' कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। राज्य स्तर के इस सेमिनार के बाद जिला स्तर पर भी सेमिनारों का आयोजन किया गया।

अल्पसंख्यकों का कल्याण

10.7. अल्पसंख्यकों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री के 15-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के प्रचार के लिए क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने कई कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसी सिलसिले में आयोजित परिचर्चाओं में अल्पसंख्यकों के कल्याण और उन्हें वित्तीय संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने में आने वाली परेशानियों के बारे में विस्तार से चर्चा हुई। निदेशालय की इकाइयों ने अल्पसंख्यक समुदायों की दशा सुधारने की सरकार की हार्दिक इच्छा के बारे में प्रचार किया। क्षेत्रीय कार्यक्रमों में सामाजिक न्याय और विभिन्न क्षेत्रों में अवसर उपलब्ध कराने के राज्य सरकारों के प्रयासों पर भी प्रकाश डाला गया।

शिक्षा

10.8. क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने विभिन्न दृश्य-श्रव्य माध्यमों के जरिए 'नई शिक्षा नीति' के बारे में भी प्रचार किया। इसके लिए आयोजित कार्यक्रमों में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और विकास के आधार के रूप में प्रस्तुत करने पर जोर दिया गया। क्षेत्रीय इकाइयों ने दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया और निरक्षरों तथा नव साक्षरों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने वाले कार्यक्रम आयोजित किए।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

10.9.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण पर सघन प्रचार जारी रखा। इसके लिए फिल्म शो, फोटो प्रदर्शनियां, गीतों और नाटकों के कार्यक्रम, मौखिक संचार, शिशु स्वास्थ्य प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तर सभाओं और माताओं की बैठकों का सहारा लिया गया। स्वास्थ्य और चिकित्सा अधिकारियों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, युवा क्लबों तथा अन्य स्वयंसेवी संगठनों की मदद से घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क स्थापित किया गया और स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण के बारे में जानकारी दी गई। विभिन्न इकाइयों ने निबंध और भाषण प्रतियोगिताओं, विचार गोष्ठियों तथा चित्रकला प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया। हैजा, मलेरिया और पेचिश की आशंका वाले इलाकों में इन बीमारियों की रोकथाम के उपायों की जानकारी देने के लिए अभियान चलाए गए। सभी इकाइयों ने अप्रैल में विश्व स्वास्थ्य दिवस और जुलाई में विश्व जनसंख्या दिवस मनाया और चुने हुए क्षेत्रों में प्रचार अभियान चलाए।

10.9.2. मद्रास इकाई ने डानबोस्को अनुब इलम के साथ मिलकर 'एड्स' पर एक सेमिनार आयोजित किया। राज्य के 'एड्स' प्रकोष्ठ और मद्रास स्थित यूनीसेफ के अधिकारियों ने इस सेमिनार में भाग लिया। इस अवसर पर 5 अगस्त, 1993 को 'एड्स' पर एक फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। पांडिचेरी इकाई ने 'स्तन पान और शिशु की देखभाल' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया। राजस्थान के अलवर जिले में पेचिश की रोकथाम और उपचार के बारे में 23 अप्रैल से 6 मई 1993 तक एक गहन कार्यक्रम चलाया गया, इसके अलावा, कोटा और सवाईमाधोपुर की तीन इकाइयों ने भाग लिया तथा इस अभियान में जिला प्रशासन का सक्रिय सहयोग भी प्राप्त किया गया।

आर्थिक उपाय

10.10. नए आर्थिक उपायों के अधिक-से-अधिक प्रचार के राष्ट्रीय प्रयास में योगदान करने तथा केन्द्रीय बजट की विशेषताओं पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से निदेशालय की इकाइयों ने प्रचार के विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को प्रेरित करने के लिए फिल्म शो और मौखिक संचार के जरिए व्यापक जन-सम्पर्क अभियान चलाए। इसके अलावा अनाज के मामले में आत्मनिर्भरता, नई व्यापार और उद्योग नीति, उपभोक्ता संरक्षण तथा कई अन्य विषयों पर पूरे साल परिचर्चाओं का आयोजन किया गया और इन पर विचार किया गया। शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता के अधिकार 'कन्जर्वेशन ऑफ पेट्रोलियम' और 'ड्राप-दैट काउन्ट्स' जैसी फिल्में भी प्रदर्शित की गई।

मेले और समारोहों के अवसर पर कार्यक्रम

10.11. मेलों और समारोहों के अवसर पर क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयां नियमित

रूप से कार्यक्रम आयोजित करती हैं। ऐसे अवसरों का फायदा बड़ी संख्या में इकट्ठे हुए जन समूह को राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर संदेश देने के लिए उठाया जाता है– शताब्दी पुराना मेरठ का नौचंदी मेला क्षेत्र की इकाइयों के लिए एक प्रमुख प्रचार मंच रहा। क्षेत्र की मौजूदा स्थिति को देखते हुए साम्प्रदायिक सद्भाव के इस मेले का महत्व और बढ़ गया था। पहली बार, केरल में क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने केरल के प्रमुख पर्व ओणम के सिलसिले में राज्य के सबसे बड़े सांस्कृतिक आयोजन 'पर्यटन सप्ताह' में भाग लिया। पंजाब की क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने बैसाखी मेले के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया। प्रचार इकाइयों ने कुल्लू, चंदौसी के गणेश चौथ मेले, देहरादून के जौनसारी मेले, पुरी की रथ यात्रा और असम के कामाख्या मंदिर में अम्बबासी मेले जैसे अति महत्वपूर्ण मेलों में भी भाग लिया।

अन्य विषय

10.12. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के प्रचार अभियानों की सूची में समाज में महिलाओं की स्थिति, अस्पृश्यता उन्मूलन, नशाबंदी, मादक पदार्थों की बुराई और सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका जैसे सामाजिक-आर्थिक विषय शामिल हैं। अस्पृश्यता की सामाजिक बुराई के बारे में जनसाधारण को शिक्षित करने के उद्देश्य से इकाइयों ने 'एन ऐंशेट कर्स', 'परोपकार' आदि जैसी फिल्मों का व्यापक स्तर पर प्रदर्शन किया। राजस्थान की प्रचार इकाइयों ने 'अखातीज' के दौरान बाल-विवाह की बुराइयों के बारे में जागरूक करने के लिए एक विशेष प्रचार अभियान चलाया। आंध्र प्रदेश क्षेत्र की इकाइयों ने राज्य भर में 'अरक' की बिक्री व निर्माण पर प्रतिबंध के राज्य सरकार के निर्णय के चलते जिला प्रशासन के सहयोग से अपने प्रचार अभियानों को और प्रभावशाली बनाया।

बातचीत के मुद्दे

10.13. क्षेत्रीय अधिकारियों को विभिन्न विषयों पर उचित जानकारी उपलब्ध कराने के लिए मुख्यालय में 'बातचीत के मुद्दे' तैयार किए जाते हैं और क्षेत्रीय इकाइयों को भेजे जाते हैं। इस तरह जारी किए गए 'बातचीत के मुद्दे' से क्षेत्रीय कर्मचारी देश की नवीनतम घटनाओं से अवगत रहते हैं। इससे प्रचार के कार्य में विशेष मदद मिलती है; क्योंकि इससे प्रचार के विषयों की उन्हें अच्छी जानकारी मिल जाती है। वर्ष के दौरान आम बजट 1993-94, भारतीय आर्थिक परिदृश्य, भारत में पंचायती राज संस्थान, ग्रामीण विकास के लिए महत्वपूर्ण पहलू, नई चीनी नीति, हथकरघा उद्योग, डा. अम्बेडकर आदि जैसे अधिक महत्वपूर्ण विषयों पर बातचीत के मुद्दे तैयार किए।

फीड-बैक

10.14. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय दुतरफा संचार माध्यम है। एक ओर यह सरकार की नीति और कार्यक्रम के बारे में सूचना प्रदान करता है तो दूसरी ओर जनता की प्रतिक्रिया तत्काल एकत्र कर उचित स्थान तक पहुंचाता है, ताकि उस पर उचित कार्यवाही की जा सके।

अध्याय 11

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय

11.1.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय एक बहु-माध्यम केन्द्रीय एजेंसी है जो लोगों को सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी देती है और उन्हें इन कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए प्रेरित करती है। विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय समाचारपत्रों में विज्ञापनों, प्रदर्शनियों, पुस्तिकाओं, फोल्डरों, पोस्टरों, रेडियो और टेलीविजन के विज्ञापनों, अति लघु फिल्मों (क्विकीज), बसों के पैनलों, सड़कों की होर्डिंग और किओस्कों के जरिए अपना कार्य करता है। निदेशालय ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, महिला और बाल विकास, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव, नई आर्थिक नीति, नशीले पदार्थों के नुकसान, मद्य निषेध, आय कर, ग्रामीण ऊर्जा और उपभोक्ता संरक्षण जैसे विषयों पर जानकारी का प्रचार-प्रसार किया है। 'भारत छोड़ो आंदोलन के स्वर्ण जयन्ती समारोहों का समापन' और 'सद्भावना समारोह' के सिलसिले में देश भर में प्रचार किया गया।

11.1.2. निदेशालय के मुख्यालय में विज्ञापन, बाहरी प्रचार, मुद्रित प्रचार, प्रदर्शनी, ई. डी. पी. केन्द्र, मास-मेलिंग, श्रव्य-दृश्य कक्ष, स्टूडियो, कापी खंड, अभियान खंड (विंग्स) आदि हैं। इनके अलावा देश भर में निदेशालय के कार्यालय हैं। क्षेत्रीय कार्यकलापों में तालमेल के लिए बंगलौर और गुवाहाटी में दो क्षेत्रीय कार्यालय हैं। हिंदी, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रचार सामग्री के शीघ्र वितरण के लिए कलकत्ता और मद्रास में दो क्षेत्रीय वितरण केन्द्र हैं। निदेशालय के अंतर्गत गुवाहाटी में एक प्रदर्शनी किट निर्माण केंद्र और 35 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयां भी हैं। इनमें सात प्रदर्शनी-वाहन भी शामिल हैं, मद्रास स्थित क्षेत्रीय प्रदर्शनी कार्यशाला प्रदर्शनियों के डिजाइन, निर्माण और दिखाए जाने के काम में मुख्यालय के प्रदर्शनी प्रभाग को मदद करता है।

प्रदर्शनी

11.2.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने सात प्रदर्शनी वाहनों सहित अपनी 35 क्षेत्रीय प्रदर्शनी इकाइयों के जरिए सरकार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों का प्रचार किया। इस अवधि में विभिन्न प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। इनमें आज का भारत (इंडिया टुडे), गर्ल चाइल्ड (बालिका शिशु), भारत छोड़ो आंदोलन, (क्विट इंडिया मूवमेंट), एक राष्ट्र एक प्राण, बेहतर भविष्य की ओर (टुवर्ड्स ए बैटर फ्यूचर), गांव की ओर, डॉक्टर बी.आर. अम्बेडकर, राहुल सांकृत्यायन, गंगा, स्वामी विवेकानन्द और विभिन्न फिल्म-महोत्सवों संबंधी प्रदर्शनियां शामिल हैं। 'हरे कृष्ण महताब' पर भी एक प्रदर्शनी तैयार की गई। इन प्रदर्शनियों को देश भर में दिखाया गया।

11.2.2. निम्नांकित अवसरों पर लगाई गई प्रदर्शनियों में निदेशालय की प्रमुख भागीदारी रही-वाटर इंडिया फेयर (भारतीय जल मेला), पुरी में रथयात्रा, शीतल षष्टी मेला, बिदिशा मेला, ढेंकनाल, जैसलमेर मेला, सोनपुर मेला, गांधी मेला, भरतपुर मेला, बाली-यात्रा, कार्तिक मेला, आदिवासी मेला, पुष्कर मेला, अजमेर उर्स, राजगीर मेला, सिंधेश्वराष्टमी मेला और कृषि शिल्प मेला।

11.2.3. सद्भावना समारोह के अंग के रूप में विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने मध्यवर्ती और पूर्वोत्तर राज्यों में अनेक प्रदर्शनियों का आयोजन किया। साम्प्रदायिक सद्भाव और शांति के प्रमुख संदेश का प्रचार करने के लिए निदेशालय की इकाइयों ने लगभग 75 प्रदर्शनियां लगाई। भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला-1993, के दौरान प्रगति मैदान में 'छोटा परिवार खुशिया अपार' नामक प्रदर्शनी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से लगायी गई। 'शानदार प्रस्तुतीकरण' के लिए इस प्रदर्शनी को पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'महिला और विकास' शीर्षक से एक प्रदर्शनी तीन मूर्ति के प्रांगण में लगाई गई। महिला और बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित बहु-मीडिया-उत्सव के एक हिस्से के रूप में लगाई गई इस प्रदर्शनी में महिलाओं से सम्बद्ध विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्ह राव ने किया। भारत छोड़ो आंदोलन के स्वर्ण जयन्ती समारोह के समापन अवसर पर 'भारत छोड़ो आंदोलन-स्वाधीनता संग्राम' शीर्षक प्रदर्शनी का आयोजन देश भर में किया गया।

11.2.4. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने दिसम्बर 1993 में मारिशस में 'चौथे विश्व हिन्दी सम्मेलन' के दौरान एक शानदार प्रदर्शनी लगायी। प्रदर्शनी का उद्घाटन मारिशस के राष्ट्रपति ने किया। इसमें सातवीं शताब्दी से हिन्दी के विकास को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी के दौरान हिन्दी की 3,000 से अधिक चुनी हुई पुस्तकें दर्शायी गई, जिनसे एक बड़ी भीड़ आकर्षित हुई और मारिशस के लगभग दो लाख हिन्दी जानने वाले लोगों और विद्वानों ने इसका दौरा किया।

11.2.5. निदेशालय ने कुल मिलाकर 475 प्रदर्शनियां लगाई, और 2,000 से अधिक प्रदर्शनी-दिवसों में देशभर के करीब एक करोड़ लोग इनसे आकर्षित हुए। निदेशालय का मार्च 1994 तक लगभग 400 और प्रदर्शनियां लगाने का प्रस्ताव है, जो 1500 प्रदर्शनी-दिवसों तक जारी रहेंगी।

श्रव्य-दृश्य प्रचार

11.3.1. वर्ष के दौरान निदेशालय ने लगभग 2,150 रेडियास्पॉट, जिंगल्स और प्रायोजित कार्यक्रम तथा 115 वीडियो स्पाट्स, अतिलघु फिल्में (क्विकीज) और वृत्तचित्र तैयार किये। इनके कुल 32,650 रेडियो प्रसारण और 500 टेलीविजन प्रसारण पंजीकृत किए गए।

11.3.2 श्रव्य-दृश्य एकांश ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, महिला और बाल विकास, ग्रामीण विकास, गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोत, उपभोक्ता संरक्षण और समाज कल्याण का व्यापक प्रचार किया। एकांश ने 'एमपॉवरिंग वुमैन' (महिलाओं को अधिकार), 'प्रधानमंत्री रोजगार योजना' और 'ग्रामीण निर्धनों के लिए प्रधानमंत्री रोजगार गारंटी योजना' के बारे में छह वीडियो स्पाट्स भी तैयार किये। केन्द्रीय जल आयोग की ओर से एकांश ने 'प्रगति की ओर' (टुवर्डस प्रोग्रेस) नामक 20 मिनट का वृत्तचित्र तैयार किया, जो परियोजनाओं से प्रभावित लोगों के पुनर्वास और पुनःस्थापन से सम्बद्ध था। भोजन और पोषण के बारे में तीन वीडियो स्पाट्स भी तैयार किए गए।

11.3.3. निदेशालय पांच प्रायोजित कार्यक्रम भी तैयार कर रहा है। ये परिवार कल्याण से सम्बद्ध 'हसीन लम्हें', महिला और बाल विकास के बारे में 'नया सबेरा' उपभोक्ता संरक्षण संबधी 'अपने अधिकार' समाज कल्याण से संबंधित 'आओ हाथ बढ़ाएं' और गैर-

परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के बारे में 'नई राह अपनाओ सस्ते में सुख पाओ' शामिल हैं। प्रायोजित कार्यक्रमों का प्रसारण हिन्दी और प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में 30 विज्ञापन प्रसारण केन्द्रों से देश भर में किया जाता है। परिवार कल्याण संबधी 10 मिनट के प्रायोजित कार्यक्रम 'हसीन लम्हें' को बम्बई की रापा (रेडियो एंड टी वी प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन) द्वारा पुरस्कृत किया गया।

बाह्य प्रचार

11.4. निदेशालय ने वर्ष के दौरान 340 होर्डिगों, 5,670 बस पैनलों, 38,440 सिनेमा स्लाइडों, 855 बैनरों, 3,130 किओस्कों और बस स्टापों पर बने 135 शेडों पर विज्ञापनों के जरिए विभिन्न विषयों के बारे में प्रचार किया। इनमें स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, 40वां राष्ट्रीय फिल्मोत्सव, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, शराब व अन्य नशीले पदार्थों से नुकसान, हस्तशिल्प, वैशाखी मेला, नौचंदी मेला, ऐगमार्क, महिला और बाल विकास, साक्षरता, सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क तथा आयकर शामिल थे।

मुद्रित प्रचार

11.5.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने 1993-94 के दौरान मुद्रित प्रचार सामग्री के अंतर्गत निम्न पुस्तिकाएं, फोल्डर और पोस्टर प्रकाशित किये-पंचायती राज, आठवीं पंचवर्षीय योजना, डा. अम्बेडकर, डा. ऐनी बेसेन्ट, सार्क सम्मेलन, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, भारत छोड़ो आंदोलन, स्वामी विवेकानन्द, महिला समृद्धि योजना, पर्यावरण संरक्षण, गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोत, जनसंख्या, आयकर, भारतीय पैनोरमा 1994, हथकरघा बुनकरों के लिए योजनाएं-एक नई दिशा, उपभोक्ता संरक्षण। इसके अलावा जन्म-दर नियंत्रण के बारे में विशेष पुस्तिकाएं प्रकाशित की गईं। इनमें 'नॉरप्लांट-इनसरशन एंड रिमूवल' और 'नॉरप्लांट-प्रॉडेक्ट इनफारमेशन' शामिल हैं।

11.5.2. भारतीय अर्थव्यवस्था पर एक विशेष 'किट' प्रकाशित किया गया, जिसमें छह पुस्तिकाएं भी थीं। इनमें 'विद्युत क्षेत्र में संभावनाएं', 'पैट्रो-कैमिकल्स में उज्जवल भविष्य', 'निर्यातोन्मुखी उद्योग', 'भारतीय अर्थव्यवस्था-निवेशकों के लिए मार्ग-निर्देश', 'नई नीतियों से नए अवसरों की शुरूआत', और 'दूर-संचार क्षेत्र: बड़ी उपलब्धियों की ओर' शामिल हैं। वर्ष के दौरान 'भारत विकास की ओर' (इंडिया मूव्स एहेड) शीर्षक से विशेष पुस्तिका प्रकाशित की गई। हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित इस पुस्तिका में पिछले दो वर्षों के दौरान सरकार की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है । इसे देश भर में वितरित किया गया।

11.5.3. विभिन्न अवसरों पर दिए गए प्रधानमंत्री के भाषण पुस्तिकाओं और फोल्डरों के रूप में प्रकाशित किये गए। निदेशालय के प्रकाशनों में 'सार्वभौमिक सद्भाव की ओर' (टुवर्ड्स यूनिवर्सल हारमोनी), 'व्यापक कृषि नीति' (ए कम्प्रिहेंसिव पॉलिसी ऑफ एग्रीकल्चर) 'सातवां सार्क सम्मेलन' (सेवेंथ सार्क सम्मिट) 'संसद की नई स्थायी समिति प्रणाली' (न्यू स्टैंडिंग कमेटी सिस्टम ऑफ पार्लियामेन्ट), 'आठवीं पंचवर्षीय योजना की सफलता के लिए-संसाधन बढ़ाइये खर्च घटाइये', 'कोंकण रेलवे स्टेशन-राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में सफल अनुभव', 'राष्ट्र के समक्ष कार्यसूची', 'पंचायती राज-राज्यपालों और मुख्यमंत्रियों को खत', 'स्थायी विकास के लिए एकता और स्थायित्व' और 'आर्थिक सुधार जारी रहेंगे'

शामिल हैं। निदेशालय ने हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में कुल मिलाकर 600 प्रकाशनों की 1.79 करोड़ प्रतियां प्रकाशित कीं।

प्रेस विज्ञापन

11.6. वर्ष के दौरान निदेशालय ने 16,260 से अधिक प्रेस विज्ञापन (14,970 वर्गीकृत और 1,290 प्रदर्शन विज्ञापन) जारी किये। ये विज्ञापन हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में 4,370 समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के लिए जारी किये गये। ये विज्ञापन मुख्य रूप से स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, साक्षरता, राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोत, विशेष रोग-प्रतिरक्षक टीका दिवस-7 नवम्बर, 1993, अंतर्राष्ट्रीय मितव्ययिता दिवस-30 अक्तूबर, 1993, लघु बचतों, पंचायती राज, आयकर, 40वां राष्ट्रीय फिल्मोत्सव और 'अपना सोना सरकार के पास जमा कीजिए', जैसे विषयों पर थे। निदेशालय ने 'नशीली दवाओं के सेवन और तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस-जून 26', 'ग्रामीण ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई ऊर्जा क्रान्ति की शुरूआत', 'विश्व जनसंख्या दिवस- जुलाई 11,1993', 'साहसपूर्ण पहल के दो वर्ष-विकास बढ़ाओ स्थायित्व लाओ' और 'गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत' जैसे विषयों पर परिशिष्ट भी निकाले। जनवरी-मार्च 1994 के दौरान निदेशालय द्वारा लगभग 4,500 वर्गीकृत विज्ञापन और 600 प्रदर्शन विज्ञापन जारी किये जाने की संभावना है।

मास मेलिंग शाखा

11.7. निदेशालय की मासमेलिंग शाखा ने नई दिल्ली में अपने मुख्यालय और मद्रास तथा कलकत्ता के क्षेत्रीय वितरण केन्द्रों के जरिए मुद्रित प्रचार सामग्री की 1.5 करोड़ से अधिक प्रतियां वितरित कीं। इस शाखा की डाक सूची में 15.5 लाख से ज्यादा पते और 530 से ज्यादा वर्ग थे। इनमें प्राइमरी/मिडिल स्कूल, डाकघर, ग्रामीण बैंक, सामाजिक संगठन, पंचायतें, शैक्षिक और सांस्कृतिक संगठन, संसद सदस्य, विधायक, मंत्री और अन्य अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति आदि शामिल हैं।

प्रमुख अभियान

11.8. निदेशालय ने विभिन्न माध्यमों के जरिए सरकार के नए आर्थिक उपायों का प्रचार किया। इन उपायों के विविध पक्षों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए निदेशालय ने 35 प्रकाशन छापे, इनमें भारतीय अर्थव्यवस्था, आर्थिक सर्वेक्षण 1992-93, नए आर्थिक वातावरण की चुनौतियों से निबटने के लिए नई प्रबन्ध तकनीकों की आवश्यकता, भारत तथ्य, शिक्षित बेरोजगार युवकों के लिए प्रधानमंत्री की रोजगार योजना, ग्रामीण निर्धनों के लिए प्रधानमंत्री की रोजगार गारंटी योजना, स्थायी विकास के लिए एकता और स्थायित्व, बुनकरों के कल्याण के उपाय, व्यापक कृषि नीति, महिला समृद्धि योजना, 'भारतीय अर्थव्यवस्था-नए युग में प्रवेश', आर्थिक सुधार जारी रहेंगे, और उचित मूल्य पर उर्वरक-किसानों के हितों की पूरी सुरक्षा के बारे में पुस्तिकाएं और फोल्डर शामिल हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में छह पुस्तिकाओं के विशेष किट का वितरण देश भर में और विभिन्न दूतावासों के माध्यम से विश्वभर में किया गया। श्रव्य-दृश्य सेल ने अनेक स्पॉट्स और क्विकीज तैयार किये, जिनमें विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला गया। इनमें महिला उद्यमी, प्रकल्पित कर, स्वरोजगार, विदेशी निवेशकों और अनिवासी भारतीयों

के लिए अद्यतन आर्थिक जानकारी, दूरसंचार के क्षेत्र में निवेश के अवसर, बिजली क्षेत्र में निवेश के अवसर, सॉफ्टवेयर क्षेत्र में निवेश के अवसर, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, ग्रामीण क्षेत्रों में महिला और बाल विकास (डवाकरा) और ग्रामीण युवकों के लिए रोजगार प्रशिक्षण जैसे विषय शामिल थे। नई आर्थिक नीति के बारे में सरकार द्वारा किए गए विभिन्न उपायों से संबंधित प्रेस विज्ञापन देश भर के समाचारपत्र-पत्रिकाओं के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में जारी किये गये। निदेशालय अनिवासी भारतीयों को विशेष जानकारी देने के लिए नए आर्थिक उपायों के बारे में एक विशेष पाक्षिक प्रकाशन को प्रायोजित कर रहा है। 'इंडिया इकॉनोमिक अपडेट' नामक प्रकाशन में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के विकास और गतिविधियों को दर्शाया गया है। अब तक इसके 17 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

11.9.1. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के प्रचार अभियान में तेजी लाई गई। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के बारे में विशेष कैलेंडर की 2.5 लाख प्रतियों के अलावा निदेशालय ने हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में निम्नांकित पुस्तिकाओं का भी प्रकाशन किया-दस्त जान लेवा है, मां का दूध, स्वच्छ पेय जल, लौह युक्त भोजन, सफाई अपनाएं बीमारी भगाएं, चोइसिस फॉर स्पेसिंग, राइजिंग नम्बर, तब क्यों नहीं सोचा, नॉरप्लान्ट इनसरशन एंड रिमूवल, बच्चों के जन्म में अन्तर रखने के उपाय, पी.आई.एल.एल. द ओरल मेथड और सन्तान का जन्म। 11 जुलाई.1993 को विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर दो पृष्ठ का एक परिशिष्ट देश भर के समाचारपत्रों के लिए सभी राष्ट्रीय भाषाओं में जारी किया गया। एक पुस्तिका 'राइजिंग नम्बर' और एक पोस्टर 'तब क्यों नहीं सोचा था', प्रकाशित किया गया। 'छोटा परिवार खुशियां अपार' शीर्षक से एक प्रदर्शनी भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, 1993 के दौरान प्रगति मैदान में लगाई गई। पांच प्रमुख राज्यों (उ.प्र., बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा) के दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे परिवार के आदर्श का संदेश मोबाइल वीडियो वैनों के जरिए प्रचारित किया गया। परिवार कल्याण के बारे में 18 पोस्टरों में एक विशेष सेट और 26 पोस्टरों का एक किट प्रकाशित किया गया, जिसका शीर्षक था, छोटा परिवार सुख का आधार। प्रेस विज्ञापनों के जरिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के अन्य कार्यक्रमों का भी व्यापक प्रचार किया गया।

11.9.2. स्वास्थ्य के लिए, प्रेस विज्ञापनों, बस बैक पैनलों, बड़े होर्डिंग, सिनेमा स्लाइडों और किओस्कों के जरिए एड्स के खतरों के बारे में जागरूकता पैदा की गई। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन-सार्क अधिवेशन और अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस के अवसर पर विज्ञापनों की दो शृंखलाएं जारी की गईं। सार्क अधिवेशन के अवसर पर जारी शृंखला का शीर्षक था-'आर यू रेडी टू टाक अबाउट एड्स'। इसके अलावा ऑडियो स्पाट्स भी प्रसारित किये गये। वर्ष के दौरान निरोध और माला-डी पर गहन प्रचार अभियान चलाए गए।

भारत का 25वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1994

11.10. निदेशालय ने 10 से 20 जनवरी के दौरान कलकत्ता में हुए भारत के 25वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के लिए 10 होर्डिंग, 600 किओस्क, 66 बैनर, 300 सिनेमा

स्लाइड, 10 प्रोग्राम बोर्ड प्रदर्शित किये। हिन्दी और अंग्रेजी में (द्विभाषी) दस हजार पोस्टर छापे गये। इनमें 5,000 भारतीय पैनोरमा–94 और 5,000 आई. एफ.एफ.आई.–94 के बारे में थे। भारतीय सिनेमा और आई.एफ.एफ.आई., 94 के बारे में दो ब्रोशरों की ढ़ाई–ढ़ाई हजार प्रतियां भी छापी गईं। आई.एफ.एफ.आई.–94 के बारे में सूचना पुस्तिकाओं की 3,000 प्रतियां भी प्रकाशित की गईं। 'राष्ट्रीय एकता और सिनेमा' विषय पर फिल्मोत्सव के दौरान एक प्रदर्शनी भी लगायी गई। विभिन्न थियेटरों में दिखायी जाने वाली फिल्मों के कार्यक्रमों के बारे में प्रेस विज्ञापन भी जारी किये गये।

अध्याय 12

फोटो प्रभाग

12.1.1. फोटो प्रभाग फोटोग्रफी के क्षेत्र में देश की अपने तरह की सबसे बड़ी उत्पादन इकाई है। यह प्रभाग भारत सरकार की ओर से देश तथा विदेश में प्रचार के लिए श्वेत-श्याम और रंगीन दोनों प्रकार के चित्र तैयार करता है। अप्रैल से नवंबर 1993 के दौरान प्रभाग ने विभिन्न समारोहों/घटनाओं के 2,586 से भी अधिक कार्यक्रमों के सादे और रंगीन चित्र खींचे और विभिन्न माध्यम एककों, केन्द्र/राज्य सरकार के विभागों को प्रचारार्थ फोटो उपलब्ध कराए।

12.1.2. फोटो प्रभाग का मुख्य कार्य विभिन्न क्षेत्रों में, देश में हुए विकास को छायाचित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करना तथा इस दिशा में प्रचार-प्रसार की गतिविधियों को चित्रों के माध्यम से और सशक्त बनाना है। यह प्रभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों, राष्ट्रपति सचिवालय, उपराष्ट्रपति सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, लोकसभा/राज्य सभा सचिवालय, केंद्र तथा राज्य सरकारों के अन्य मंत्रालयों/विभागों और विदेश स्थित भारतीय मिशनों को फोटोग्राफ उपलब्ध कराता है। प्रभाग द्वारा आम लोगों और गैर प्रचार संगठनों को भी भुगतान करने पर श्वेत-श्याम फोटोग्राफ तथा रंगीन स्लाइड्स/पारदर्शी उपलब्ध करायी जाती हैं। अप्रैल से नवंबर, 1993 के दौरान प्रभाग ने अपनी प्राइसिंग स्कीम (मूल्य योजना) के तहत 3.32 लाख रूपये का राजस्व अर्जित किया।

12.1.3. दिल्ली में प्रभाग के मुख्यालय में श्वेत-श्याम और रंगीन दोनों ही प्रकार के फोटोग्राफ तैयार करने के लिए सभी सुविधाओं से सम्पन्न प्रयोगशाला है। प्रभाग के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में एक फोटो आंकड़ा बैंक भी स्थापित किया गया है। फोटो आंकड़ा बैंक में फोटो रिकार्ड करने की प्रक्रिया प्रगति पर है। फोटो प्रभाग के बंबई, कलकत्ता और मद्रास में तीन क्षेत्रीय कार्यालय और गुवाहाटी में एक फोटो-एकांश है।

प्रमुख कवरेज

12.2.1. फोटो प्रभाग ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की देश-विदेश की यात्राओं की व्यापक कवरेज की। उपराष्ट्रपति की वियतनाम, मोरक्को, फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड की यात्राओं को व्यापक रुप से कवर किया गया। इसके अलावा प्रभाग ने दृश्य प्रचार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी फोटो उपलब्ध कराए। ये फोटो पत्र सूचना कार्यालय के माध्यम से देश भर के समाचार पत्रों को उपलब्ध कराए गए। राष्ट्रपति की यूक्रेन, हंगरी, ग्रीस, तुर्की और इंग्लैंड की यात्राओं के रेडियो-फोटो देश तथा विदेशों में पत्र सूचना कार्यालय तथा विदेश-स्थित हमारे दूतावासों के माध्यम से उपलब्ध कराए गए।

12.2.2. फोटो प्रभाग ने अतिविशिष्ट विदेशी मेहमानों और भारत यात्रा पर आए राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों की फोटो कवरेज भी की। इस तरह के फोटो सभी संबद्ध लोगों को देने के साथ-साथ प्रभाग ने विदेशी मेहमानों की भारत यात्रा के अंत में उन्हें भेंट करने के लिए फोटो एलबम भी तैयार किए। इसके अलावा फोटो प्रभाग ने समय-समय पर

मंत्रिपरिषद में शामिल किए गए मंत्रियों तथा महत्वपूर्ण व्यक्तियों के छायाचित्र बनाकर जारी किए।

12.2.3. फोटो प्रभाग शौकिया फोटोग्राफरों के लिए राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता तथा प्रदर्शनी का भी आयोजन करता है। सादे और रंगीन, दोनों तरह के छायाचित्रों की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं जिनमें फोटोग्राफरों के अधिकतम चार फोटो शामिल किये जाते हैं। प्रतियोगिता का विषय हर साल बदलता रहता है। 1993 में आयोजित पांचवी राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता का विषय 'आधुनिक भारत' था। इसमें देश भर के 372 शौकिया फोटाग्राफरों ने 313 सादे और 722 रंगीन फोटो भेजे। नई दिल्ली में मार्च में आयोजित प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के सदस्यों– रामेश सी. पांडे, हरबंस सिंह तथा वी.एन. मजगांवकर ने 13 रंगीन तथा 4 श्वेत-श्याम छायाचित्र चुने। उन्होंने पुरस्कार जीतने वाले छायाचित्रों के चयन के साथ-साथ 80 अन्य छायाचित्रों को प्रदर्शनी में शामिल करने के लिए चुना।

12.2.4. प्रतियोगिता में पुरस्कृत तथा निर्णायक मंडल द्वारा चुने गए छायाचित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन 22 मार्च, 1993 को सूचना और प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंह देव ने किया। इसी समारोह में उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए। सादे और रंगीन वर्गों के चित्रों के लिए तीन-तीन पुरस्कार रखे गए थे। पहला पुरस्कार 10,000 रुपये, दूसरा 7,000 रुपये और तीसरा 5,000 रुपये निर्धारित किया गया था। इसके अलावा दोनों ही वर्गों में एक-एक हजार के 10 सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए। पुरस्कृत चित्रों की यह प्रदर्शनी 22 से 28 मार्च 1993 तक लिटिल थिएटर ग्रुप आर्ट गैलरी, कापरनिकस मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

12.2.5. अप्रैल से नवंबर 1993 तक फोटो प्रभाग ने निम्नलिखित कार्य किए:

1.	समाचार और फीचर फोटोग्राफ (सादे और रंगीन दोनों)	2,586
2.	निगेटिव (सादे और रंगीन दोनों)	56,201
3.	रंगीन स्लाइड और पारदर्शियां (ट्रांसपेरेंसी)	1,207
4.	तैयार किए गए श्वेत-श्याम चित्र	2,44,412
5.	रंगीन चित्र	17,840
6.	कुल श्वेत-श्याम और रंगीन चित्र	2,62,252
7.	फोटो एलबम/वालेट्स	48

अध्याय 13

गीत और नाटक प्रभाग

13.1.1. गीत और नाटक प्रभाग सामाजिक–आर्थिक महत्व के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए जीवंत माध्यमों, विशेष रूप से लोक कलाओं और परंपरागत माध्यमों का इस्तेमाल करता है। प्रभाग नाटक, नृत्य–नाटिका, कठपुतली और लोकगीत जैसी परंपरागत मंच–कलाओं के साथ–साथ ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम का भी व्यापक उपयोग करता है। प्रभाग सीमावर्ती क्षेत्रों में सशस्त्र सेना की मनोरंजन की आवश्यकता को पूरा करता है। प्रभाग अपनी सभी गतिविधियों में केन्द्र और राज्य सरकारों के साथ पूरे तालमेल के साथ काम करता है।

13.1.2. महत्वपूर्ण समारोहों के दौरान जब बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं, जीवन्त माध्यमों का बड़े कारगर ढंग से इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे समारोहों में राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति, साम्प्रदायिक सद्भाव, नई आर्थिक नीति, पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली, आठवीं पंचवर्षीय योजना, छुआछूत की बुराई मिटाने, नशाबंदी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण आदि के बारे में संदेशों का विशेष प्रचार किया गया।

गतिविधियां

13.2. गीत और नाटक प्रभाग, निदेशक के अधीन कार्य करता है। इसका ढांचा तीन स्तरीय है: (1) दिल्ली में मुख्यालय, (2) भोपाल, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, लखनऊ, मद्रास और पुणे में आठ क्षेत्रीय केन्द्र तथा (3) भुवनेश्वर, हैदराबाद, पटना, इम्फाल, जोधपुर, दरभंगा, नैनीताल, शिमला और श्रीनगर स्थित नौ उप–केन्द्र। इसके अलावा नई दिल्ली और बंगलूर में प्रभाग के ध्वनि और प्रकाश केन्द्र तथा रांची में एक जनजातीय केन्द्र भी हैं। ये केन्द्र और उप–केन्द्र प्रचार के लिए कार्यक्रम तैयार करते हैं।

विभागीय नाटक मंडलियां

13.3. प्रभाग की छह विभागीय नाटक मंडलियां हैं। ये पुणे, हैदराबाद, श्रीनगर, दिल्ली, पटना और भुवनेश्वर में स्थित हैं। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने हिन्दी, कश्मीरी, उर्दू, मराठी, उड़िया और तेलुगू में नाटकों और प्रहसनों के रूप में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पुणे की नाटक मंडली ने औरंगाबाद में एक जनजातीय उत्सव व साक्षरता अभियान आयोजित किया। ये अभियान मराठवाड़ा की पंचायत समिति और औरंगाबाद के कलेक्टर के सहयोग से राष्ट्रीय एकता और सद्भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किए गए। हैदराबाद केन्द्र ने राज्यभर में 'भारत छोड़ो आंदोलन' पर एक बैले नृत्य भी दिखाया।

सीमा प्रचार मंडलियों द्वारा कार्यक्रम

13.4. अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से लगे क्षेत्रों में प्रभावकारी और गहन प्रचार के लिए विभागीय मंडलियों ने सीमावर्ती गांवों में स्थानीय बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों का मनोबल बढ़ाया और राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता पर बल देते हुए लोगों को देश की रक्षा सम्बन्धी तैयारियों से परिचित कराया। इन मंडलियों ने क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, सीमा सुरक्षा बल तथा केन्द्र और राज्य सरकारों की एजेंसियां तथा स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से गहन

प्रचार अभियान चलाए। आलोच्य वर्ष के दौरान गुवाहाटी केन्द्र ने उत्तर-पूर्व क्षेत्र में एकता से जुड़े विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किए। सीमा प्रचार मंडलियों ने हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर एक विशेष कार्यक्रम शुरू किया। देश के सीमावर्ती गांवों में नई आर्थिक नीति और सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा अन्य प्रमुख विषयों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। सभी सीमा प्रचार केन्द्रों ने उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, मध्यप्रदेश और कर्नाटक में सद्भावना समारोहों का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

सशस्त्र सैनिक मनोरंजन मंडलियों के कार्यक्रम

13.5. सीमावर्ती क्षेत्रों में जवानों के मनोरंजन के लिए 1967 में सशस्त्र सैनिक मनोरंजन शाखा स्थापित की गई। इसकी कुल नौ मंडलियां हैं, जिनमें से एक मद्रास में और बाकी दिल्ली में हैं। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने कठिन और बीहड़ सीमावर्ती क्षेत्रों का दौरा किया और जवानों के मनोरंजन के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किए। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने सद्भावना समारोहों में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम

13.6. दिल्ली और बंगलूर में प्रभाग की दो ध्वनि और प्रकाश इकाइयां हैं। तिरूपति में राष्ट्रीय एकता पर ध्वनि और प्रकाश का विशेष कार्यक्रम 'और कदम बढ़ते रहें', 'मंजिले और भी हैं' और 'वो राहगुज़र वो राहगीर' प्रस्तुत किए गए। ये कार्यक्रम भुवनेश्वर, ढेंकनाल, कटक, नई दिल्ली, जगदीशपुर, पिथौरागढ़, रायबरेली, जयपुर, उदयपुर, शिमला और नैनीताल में दिखाए गए। एक ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम राष्ट्रपति के अंगरक्षकों के लिए राष्ट्रपति भवन में प्रस्तुत किया गया, जिसे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सहित अनेक गणमान्य लोगों ने देखा। पुणे के सैनिक इंजीनियरिंग कालेज की स्वर्ण जयंती पर एक ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

व्यावसायिक और विशेष सेवाएं

13.7. स्थानीय प्रतिभाओं विशेषकर लोक और परम्परागत कलाकारों को सामने लाने के लिए प्रभाग की स्थापना के समय ही यह योजना शुरू की गई थी। प्रभाग विकास की दिशा में देश के बहुआयामी प्रयासों और राष्ट्रीय एकता के संदेश को कलाओं के माध्यम से व्यक्त करने में व्यावसायिक मंडलियों का उपयोग करता है। ये व्यावसायिक मंडलियां राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। इसमें राज्य सरकारों की फील्ड एजेंसियों, अर्द्ध-सरकारी एजेंसियों और स्वयंसेवी संगठनों की सहायता ली जाती है। अपनी नियमित गतिविधियों के अलावा इन मंडलियों ने सद्भावना समारोहों में भी अपना सहयोग दिया।

जनजातीय तथा लोक कलाकार

13.8. प्रभाग ने जनजातीय परियोजना कार्यक्रम के तहत मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के जनजातीय कलाकारों की प्रतिभा के उपयोग के लिए रांची में एक केन्द्र की स्थापना की है। इस योजना का मूल उद्देश्य इन समुदायों को प्रोत्साहन देना है ताकि वे अपने कार्यक्रम अपनी बोली, अपनी शैली और अपने परिवेश में अपने ही तरीके से तैयार और प्रस्तुत कर सकें। वे इन कार्यक्रमों के माध्यम से अपने उन भाइयों को शिक्षित बनाने और उन तक

सूचनाएं पहुंचाने का कार्य भी करते हैं जो अब तक किसी संचार माध्यम के सम्पर्क में नहीं आए हैं। इस योजना की विशेषता यह है कि जनजातीय मंडलियों द्वारा कार्यक्रम उनकी अपनी बोली में तैयार कराए जाते हैं, ताकि उनकी सदियों से चली आ रही परंपरागत शैली को किसी तरह का नुकसान न हो।

परिवार कल्याण

13.9.1. प्रभाग द्वारा विभिन्न एजेंसियों के सहयोग से परिवार कल्याण जैसे छोटा परिवार, बालिका, महिला कल्याण और नशीली दवाइयों के दुष्प्रभाव के बारे में राज्य सरकारों की एजेंसियों के सहयोग से विशेष प्रचार अभियान चलाए गए। प्रभाग ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की संशोधित नीति के अनुरूप तैयार किए गए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

13.9.2. प्रभाग द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों के प्रमुख विषय परिवार कल्याण जैसे छोटे परिवार की परंपरा को लोकप्रिय बनाना, बालिकाओं के अधिकार, महिलाओं का कल्याण, रोग निरोधक टीके, नशीली दवाओं के कुप्रभाव इत्यादि पर आधारित थे। इन कार्यक्रमों को विभिन्न राज्यों के स्वास्थ्य सेवाओं के नेटवर्क के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। इस संबंध में क्षेत्रों की पहचान पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रभाग द्वारा नई दिल्ली के प्रगति मैदान में भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में दिखाई गई परिवार कल्याण की प्रदर्शनी को दर्शकों ने काफी सराहा।

मेले और उत्सव

13.10. गीत और नाटक प्रभाग ने ऐसे कई मेलों और उत्सवों के अवसर पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जहां बड़ी संख्या में लोग इकटठे होते हैं। इनमें प्रमुख हैं: महाशिवरात्रि मेला, रामनवमी मेला, गांधी मेला (मध्य प्रदेश और राजस्थान में), ग्वालियर व्यापार मेला, तानसेन समारोह, लोक संस्कृति उत्सव और बुद्ध पूर्णिमा मेला (मध्य प्रदेश में), पुष्कर मेला, अजमेर का उर्स, बानेश्वर मेला, रेगिस्तान मेला, बसंत मेला, पशु मेला, लुधरवा मेला, आवरि मेला, मारियामाता मेला (सभी राजस्थान में) और पुणे में गणेश महोत्सव। प्रभाग ने देश के विभिन्न हिस्सों में बीहू, बैसाखी, गणपति उत्सव, दुर्गा उत्सव, दशहरा मेला, कार्तिक मेला और शरद मेले में भी हिस्सा लिया।

13.11. राज्यों और केन्द्र सरकार की एजेंसियों के सहयोग से पंजाब, दिल्ली, हरियाणा और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न जिलों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता/राष्ट्रीय एकता/साम्प्रदायिक सद्भाव और ग्रामीण विकास पर बहु-माध्यम प्रचार अभियान चलाए गए।

नई आर्थिक नीति और पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली

13.12. सूचना और प्रसारण मंत्रालय के क्षेत्रीय स्तर के संचार कर्मियों के समक्ष प्रधानमंत्री के भाषण में कही गई बातों के अनुपालन मे गीत और नाटक प्रभाग ने पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा नई आर्थिक नीति के प्रचार के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए। प्रभाग के क्षेत्रीय केन्द्रों ने अपने-अपने क्षेत्र में सूचनात्मक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए।

सद्भावना समारोह

13.13. अयोध्या मसले और बढ़ते हुए सांप्रदायिक तनाव को देखते हुए, प्रभाग ने कुछ राज्यों में साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए सद्भावना समारोहों के जरिए अभियान चलाए। ये समारोह प्रभाग द्वारा उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु के विभिन्न हिस्सों में आयोजित किए गए। इन समारोहों को लोगों ने काफी सराहा।

अध्याय 14

गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग

14.1.1. गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, उसके माध्यम एककों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों को संदर्भ सामग्री उपलब्ध कराता है। प्रभाग मंत्रालय के माध्यम एककों के लिए सूचनाएं एकत्र तथा उपलब्ध कराने वाले सूचना बैंक की तरह कार्य करता है। वह इन एककों को उनके कार्यक्रम तथा प्रचार अभियान बनाने में मदद करता है। प्रभाग जनसंचार माध्यमों की प्रवृतियों का भी अध्ययन करता है तथा जनसंचार और सामयिक विषयों पर संदर्भ तथा प्रलेखन सेवा भी उपलब्ध करता है। गवेषणा और संदर्भ प्रभाग-सूचना और प्रसारण मंत्रालय, इसके माध्यम एककों तथा जन संचार से जुड़े अन्य संगठनों को पृष्ठभूमि लेख, अनुसंधान और संदर्भ सामग्री तथा अन्य सेवाएं उपलब्ध कराता है।

14.1.2. प्रभाग की अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाओं में दो वार्षिक संदर्भ ग्रंथों के संकलन का कार्य भी शामिल है। 'भारत'– वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, देश के बारे में एक प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ है। 'मास मीडिया इन इंडिया' नाम का दूसरा संदर्भ ग्रंथ जनसंचार से संबंधित है।

14.1.3. इस वर्ष के दौरान प्रभाग ने विज्ञान, उद्योग, परिस्थिति विज्ञान, फिल्म और खेलकूद जैसे अनेक विषयों से संबंधित कार्य अपने हाथ में लिये हैं। उपग्रह और केबल टेलीविजन के भारत में प्रभाव से संबंधित शीर्षक 'स्काई इनवेजन एंड ग्राउंड रियल्यटीज' के प्रभाग द्वारा किये गए शोधकार्य को काफी लोगों ने पसंद किया।

14.1.4. सूचना और संचार टैक्नोलोजी में हो रहे तीव्र विकास को देखते हुए, यह विभाग जनसंचार में हो रही प्रगति और विस्तार का सामना करने के लिए अपने आपको तैयार कर रहा है। फिलहाल यह प्रभाग पुनर्गठन की प्रक्रिया में है ताकि भारतीय सूचना सेवा (आई.आई.एस) की प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। साथ ही साथ इसका उद्देश्य आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र सूचना कार्यालय, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय और क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय आदि विभिन्न माध्यम एककों में काम करने वाले भारतीय सूचना सेवा संवर्ग के मीडिया कर्मियों की व्यावसायिक क्षमता को बढ़ाना है। प्रभाग का पुनर्गठन, इस संबंध में गठित एक समिति की सिफारिशों के अनुसार किया जा रहा है।

संदर्भ पुस्तकालय

14.2. प्रभाग का अपना एक बड़ा संदर्भ पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकों के अलावा कुछ चुनी हुई पत्र-पत्रिकाओं के सजिल्द खंड और अनेक मंत्रालयों, समितियों तथा आयोगों की रिपोर्ट उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में पत्रकारिता, जन संपर्क, विज्ञापन तथा दृश्य-श्रव्य माध्यम पर पुस्तकों का विशाल संग्रह बनाया गया है। इसमें दुनिया भर के प्रकाशकों के वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सामयिक लेख और प्रमुख विश्वकोश भी उपलब्ध हैं। भारत और विदेशों के मान्यता प्राप्त संवाददाता तथा बड़ी संख्या में सरकारी अधिकारी इस पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। इस पुस्तकालय में बड़ी संख्या में देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाएं भी आती हैं।

राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र

14.3.1. मंत्रालय द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के आधार पर 1976 में प्रभाग के एक अंग के रूप में राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य जनसंचार के क्षेत्र में हो रही घटनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में सूचनाओं का संकलन, व्याख्या और प्रसार करना था।

14.3.2. राष्ट्रीय जनसंचार प्रलेखन केन्द्र ने निम्नलिखित आठ सेवाएं जारी रखीं। ये हैं– 'करंट अवेयरनेस सर्विस', 'रिफरेंस इनफोरमेशन सर्विस', 'बिब्लियोग्राफी सर्विस', 'हू इज हू इन मास मीडिया', 'ऑनर्स कन्फर्ड ऑन मास कम्यूनिकेटर्स', 'मीडिया मैमोरी', 'वर्ल्ड मीडिया सर्विस' और 'बुलेटिन ऑन फिल्म'।

अध्याय 15

भारतीय जनसंचार संस्थान

15.1.1. भारतीय जनसंचार संस्थान एक स्वायत्त संस्था के रूप में 1965 में स्थापित किया गया था। इसे भारत सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। भारतीय जनसंचार संस्थान शिक्षण और प्रशिक्षण के कई कार्यक्रम संचालित करने के साथ-साथ विचार गोष्ठियां भी आयोजित करता है। इस तरह यह भारत तथा अन्य विकासशील देशों के लिए उपयुक्त सूचना संबंधी आधारभूत ढांचा तैयार करने में भी योगदान करता है। स्थापना के बाद से संस्थान ने 259 अल्पावधि पाठ्यक्रम और विभिन्न अवधि की कार्यशालाएं आयोजित की हैं। इनमें करीब 5,980 प्रशिक्षणार्थियों (भारतीय तथा विदेशी दोनों) को फायदा हुआ है।

15.1.2. वर्ष के दौरान संस्थान ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रम और चार डिप्लोमा कार्यक्रम आयोजित किए। ये थे: (i) भारतीय सूचना सेवा के ग्रुप-ए के लिए ओरिएंटेशन पाठ्यक्रम; (ii) आकाशवाणी और दूरदर्शन कर्मचारियों के लिए प्रसारण पत्रकारिता पाठ्यक्रम; (iii) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी); (iv) विज्ञापन और जनसंपर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम; (v) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी); और (vi) गुट-निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम। समाचार एजेंसी पत्रकारिता में गुट निरपेक्ष देशों के लिए संस्थान का डिप्लोमा पाठ्यक्रम अफ्रीका, एशिया और लातीनी अमरीका के देशों के मध्यम स्तर के श्रमजीवी पत्रकारों में काफी लोकप्रिय है। हर साल इस तरह के दो पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनकी अवधि पांच-पांच महीनों की होती है।

दीक्षांत समारोह

15.2. वर्ष 1992-93 के शैक्षिक-सत्र का समापन 29 अप्रैल, 1993 को वार्षिक दीक्षांत समारोह के साथ हुआ। दीक्षांत भाषण सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री श्री के.पी. सिंह देव ने दिया। इसमें गुट निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता पाठ्यक्रम के 13, पत्रकारिता में स्नातकोत्तर पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी) के 28, पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (अंग्रेजी) के 27 और विज्ञापन और जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के 30 छात्रों को डिप्लोमा प्रदान किए गए।

शैक्षिक सत्र 1993-94

15.3. पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (हिन्दी और अंग्रेजी) और विज्ञापन तथा जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम नामक तीन पाठ्यक्रम 2 अगस्त, 1993 को आरंभ हुए, जिनमें से प्रत्येक में 30-30 छात्रों ने प्रवेश लिया। गुट निरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता में 21वां डिप्लोमा पाठ्यक्रम 8 जुलाई, 1993 को प्रारंभ हुआ जिसमें विभिन्न अफ्रीकी, एशियाई और लातीनी अमरीका देशों के 11 प्रतिभागियों ने प्रवेश लिया। भारतीय सूचना सेवा ग्रुप-ए के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए 11 महीनों की अवधि का 10वां ओरिएंटेशन पाठ्यक्रम, जनवरी, 1993 में प्रारंभ हुआ और दिसम्बर, 1993 में संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने आलोच्य अवधि में निम्नलिखित

अल्पावधि पाठ्यक्रमों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन किया (इनमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों की संख्या कोष्ठकों में दी गई है)।

1. सिंगापुर स्थित एशियन मास कम्युनिकेशन रिसर्च एंड इन्फरमेशन सेंटर के सहयोग से वीडियो निर्माण पर कार्यशाला
   28 जून से 2 जुलाई, 1993 (28)
2. पत्रकारिता और जनसंचार में कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर पत्रकारिता शिक्षकों के लिए कार्यशाला
   8 से 28 जुलाई, 1993 (14)
3. रेडियो समाचार वाचन (अंग्रेजी) कार्यशाला
   4–10 अगस्त, 1993 (11)
4. रेडियो समाचार वाचन (हिन्दी) कार्यशाला
   18–24 अगस्त, 1993 (8)
5. नेपाली पत्रकारों के लिए फ्रेडरिख एबर्ट स्टिफंग के सहयोग से पत्रकारिता कार्यशाला
   5 अक्तूबर से 4 दिसम्बर, 1993 (15)
6. लक्षद्वीप के युवाओं के लिए संचार, संस्कृति और पर्यटन विकास पर 6 महीने का विशेष पाठ्यक्रम
   19 अक्तूबर, 1993 (11)
7. 27 अगस्त, 1993 को 'नामेडिया' प्रतिष्ठान के सहयोग से 'केबल टेलीविजन और उपग्रह सम्प्रेषण' पर संगोष्ठी (60)
8. सूरजकुंड, हरियाणा में यूनिसेफ के सहयोग से माता एवं शिशु स्वास्थ्य पर मीडिया ओरिएंटेशन कार्यक्रम की पहली राष्ट्रीय समीक्षा बैठक
   13 से 15 अक्तूबर, 1993 (70)
9. सशस्त्र सेनाओं के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए मीडिया ओरिएंटेशन पाठ्यक्रम
   22 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 1993 (22)

अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन

15.4. संस्थान ने नई दिल्ली स्थित फ्रेडरिख एबर्ट स्टिफंग के आर्थिक सहयोग से उपग्रह और केबल टी.वी. पर कृषि विस्तार कार्यक्रमों में मुद्रण व जनसंचार माध्यमों का सहयोग, एशियन मास कम्यूनिकेशन सेंटर के आग्रह पर जनसंचार और जातीय संबंधों पर अनुसंधान तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से महिला स्वास्थ्य संघों के मूल्यांकन का कार्य आरंभ किया।

प्रकाशन

15.5. संस्थान ने 'कम्यूनिकेशन' (अंग्रेजी) और 'संचार माध्यम' के दो-दो अंक प्रकाशित किए। स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों और समाचार एजेंसी पत्रकारिता में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों ने प्रयोगशाला पत्रिकाएं निकालीं।

ढेंकनाल (उड़ीसा) में भारतीय जनसंचार संस्थान की शाखा

15.6.1. संचार संबंधी बुनियादी सुविधाओं और संसाधनों की दृष्टि से भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र अपेक्षाकृत कम विकसित हैं। काफी दिनों से महसूस की जा रही

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने इस क्षेत्र में संस्थान की एक शाखा खोलने का निश्चय किया। तदनुसार ढेंकनाल, उड़ीसा में 14 अगस्त, 1993 से संस्थान की एक शाखा ने काम करना शुरू कर दिया।

15.6.2. यह शाखा विकासीय संचार पर जोर देगी, विशेषकर स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण व जनजातीय संचार पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। आरंभ में ढेंकनाल शाखा दो पाठ्यक्रम चलाएगी– (क) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम और (ख) विकास संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा। पाठ्यक्रम का पहला पत्रकारिता स्नातकोत्तर डिप्लोमा 16 अगस्त, 1993 को आरंभ हुआ, जिसमें 36 छात्रों ने प्रवेश लिया।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

योजना तथा गैर-योजना बजट का विवरण

मांग संख्या 55- सूचना और प्रसारण मंत्रालय

(हजार रुपयों में)

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1993-94			संशोधित अनुमान 1993-94			बजट अनुमान 1994-95		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर -योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
	राजस्व भाग									
	मुख्य शीर्ष - 2251 - सचिवालय-सामाजिक सेवाएं									
1.	मुख्य सचिवालय	–	3,54,17	3,54,17	–	3,90,23	3,90,23	—	4,07,24	4,07,24
2.	समेकित वेतन और लेखा कार्यालय	1,00	1,57,83	1,58,83	1,00	1,68,77	1,69,77	3,00	1,78,76	1,81,76
	योग	1,00	5,12,00	5,13,00	1,00	5,59,00	5,60,00	3,00	5,86,00	5,89,00
	मुख्य शीर्ष - 2205 - कला एवं संस्कृति									
	सिनेमेटोग्राफिक फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रमाणीकरण									
3.	केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड	10,00	64,75	74,75	12,00	63,75	75,75	12,00	67,75	79,75
4.	फिल्म प्रमाणीकरण अपील न्यायाधिकरण	—	3,25	3,25	—	3,25	3,25	—	3,25	3,25
	योग:	10,00	68,00	78,00	12,00	67,00	79,00	12,00	71,00	83,00
	मुख्य शीर्ष - 2220 - सूचना और प्रचार									
5.	फिल्म प्रभाग	1,47,00	16,29,17	17,76,17	1,46,94	16,32,67	17,79,61	1,02,00	16,94,01	17,96,01
6.	फिल्म समारोह निदेशालय	2,24,00	1,62,68	3,86,68	2,24,00	1,67,70	3,91,70	2,45,00	1,79,00	4,24,00
7.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार	20,00	29,95	49,95	44,28	33,76	78,04	72,00	34,99	1,06,99
8.	भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, कलकत्ता	10,00	—	10,00	5,00	—	5,00	5,00	—	5,00
9.	राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र को अनुदान सहायता	1,40,00	15,00	1,55,00	1,10,00	—	1,10,00	1,50,00	10,00	1,60,00
10.	भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान को अनुदान सहायता	65,00	2,34,22	2,99,22	75,00	2,53,22	3,28,22	5,50,00	2,69,00	8,19,00
11.	फिल्म समितियों को अनुदान सहायता	3,00	—	3,00	3,00	—	3,00	3,00	—	3,00
12.	गवेषणा संदर्भ प्रशिक्षण प्रभाग	—	35,25	35,25	—	36,25	36,25	—	39,31	39,31
13.	भारतीय जनसंचार संस्थान को अनुदान सहायता	70,00	1,08,91	1,78,91	58,78	1,16,81	1,75,59	1,10,00	1,24,69	2,34,69
14.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय	30,00	24,00,89	24,30,89	30,00	25,80,17	26,10,17	30,00	27,19,00	27,49,00
15.	पत्र सूचना कार्यालय	30,00	7,48,21	7,78,21	30,00	7,68,96	7,98,96	40,00	7,74,44	8,14,44
16.	भारतीय प्रेस परिषद	—	35,95	35,95	—	39,43	39,43	—	44,34	44,34
17.	समाचार एजेंसियों को सहायता अनुदान	—	50	50	—	—	—	—	—	—
18.	पी. टी. आई. को ऋण के ब्याज पर सबसिडी	—	1,90	1,90	—	1,90	1,90	—	1,43	1,43
19.	व्यावसायिक तथा विशेष सेवाओं के लिए भुगतान	—	38,22	38,22	—	29,50	29,50	—	38,22	38,22
20.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	47,00	9,13,73	9,60,73	47,00	9,65,03	10,12,03	67,00	10,15,00	10,82,00
21.	गीत और नाटक प्रभाग	97,00	5,69,78	6,66,78	1,26,00	6,23,13	7,49,13	1,26,00	6,63,00	7,89,00
22.	प्रकाशन विभाग	30,00	6,05,00	6,35,00	9,00	6,03,41	6,12,41	30,00	6,36,49	6,66,49
23.	रोजगार समाचार	—	7,85,88	7,85,88	—	6,98,58	6,98,58	—	7,61,51	7,61,51
24.	एस. टी. सी. को नुकसान की भरपाई	—	2,00	2,00	—	—	—	—	—	—
25.	भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक	5,00	67,87	72,87	9,50	83,14	92,64	5,00	82,87	87,87
26.	फोटो प्रभाग	25,00	1,20,59	1,45,59	22,50	1,13,56	1,36,06	12,00	1,22,40	1,34,40
27.	संचार के विकास के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए अंशदान	—	16,00	16,00	—	16,00	16,00	—	16,00	16,00
28.	विभागीय कैन्टीन	—	6,30	6,30	—	7,78	7,78	—	8,30	8,30
	कुल : मुख्य शीर्ष- 2220	**9,43,00**	**85,28,00**	**94,71,00**	**9,41,00**	**87,71,00**	**97,12,00**	**15,47,00**	**92,34,00**	**1,07,81,00**
	कुल : राजस्व खण्ड	**9,54,00**	**91,08,00**	**100,62,00**	**9,54,00**	**93,97,00**	**103,51,00**	**15,62,00**	**98,91,00**	**1,14,53,00**

(हजार रुपयों में)

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1993-94			संशोधित अनुमान 1993-94			बजट अनुमान 1994-95		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर -योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
	पूंजी खंड									
	मुख्य शीर्ष - 4220 - सूचना और प्रचार के लिए पूंजी परिव्यय									
	अ) मशीनें और उपकरण									
1.	फिल्म प्रभाग, बंबई के लिए उपकरणों की खरीद	—	—	—	—	—	—	1,65,00	—	1,65,00
2.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार, पुणे के लिए उपकरणों की खरीद	30,00	—	30,00	28,00	—	28,00	15,00	—	15,00
3.	पत्र सूचना कार्यालय के लिए उपकरणों की खरीद	1,14,00	—	1,14,00	92,50	—	92,50	90,00	—	90,00
4.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के लिए उपकरणों की खरीद	50,00	—	50,00	38,00	—	38,00	28,00	—	28,00
5.	गीत और नाटक प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	32,00	—	32,00	30,00	—	30,00	88,00	—	88,00
6.	फोटो प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	13,00	—	13,00	13,00	—	13,00	14,00		14,00
	(आ) भवन									
7.	फिल्म प्रभाग की बहुमंजिला इमारत का मुख्य निर्माण कार्य	2,85,00	—	2,85,00	48,00	—	48,00	33,00	—	33,00
8.	भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के कार्यालय भवन का मुख्य निर्माण कार्य	2,00	—	2,00	2,00	—	2,00	3,00	—	3,00
9.	फिल्म समारोह काम्प्लेक्स में नये निर्माण तथा पुराने में परिवर्तन संबंधी प्रमुख निर्माण कार्य	20,00	—	20,00	45,00	—	45,00	55,00	—	55,00
10.	कलकत्ता में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान की स्थापना - भूमि अधिग्रहण तथा भवन निर्माण	5,58,00	—	5,58,00	40,00	—	40,00	5,63,00	—	5,63,00
11.	सूचना भवन परिसर - प्रमुख निर्माण कार्य	39,00	—	39,00	20,50	—	20,50	80,00	—	80,00
12.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के अन्तर्गत कार्यालय तथा आवासीय भवनों का निर्माण - प्रमुख निर्माण कार्य	—	—	—	—	—	—	5,00	—	5,00
13.	पत्र सूचना कार्यालय के लिए राष्ट्रीय प्रेस केन्द्र व लघु माध्यम केन्द्र की स्थापना करना	—	—	—	—	—	—	20,00	—	20,00
	(इ) अन्य पूंजी निवेश									
14.	दूसरे राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल के संचालन के लिए प्रस्तावित संयुक्त क्षेत्र की कम्पनियों में पूंजीनिवेश	4,53,00	—	4,53,00	1,00,00	—	1,00,00	1,47,00	—	1,47,00
15.	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम	2,00,00	—	2,00,00	2,00,00		2,00,00	1,00,00	—	1,00,00
16.	दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ 'मेकिंग ऑफ महात्मा' फीचर फिल्म का संयुक्त निर्माण	—	—	—	—	—	—	2,50,00	—	2,50,00
	कुल : मुख्य शीर्ष - 4220	**17,96,00**	**—**	**17,96,00**	**6,57,00**	**—**	**6,57,00**	**16,56,00**	**—**	**16,56,00**
	मुख्य शीर्ष - 6220 - सूचना और प्रचार के लिए ऋण सार्वजनिक क्षेत्र के तथा अन्य उपक्रमों को ऋण									
	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड	2,00,00	—	2,00.00	2,00,00	—	2,00,00	1,00,00	—	1,00,00
	कुल : मुख्य शीर्ष 6220	2,00,00	—	2,00.00	2,00,00	—	2,00,00	1,00,00	—	1,00,00
	कुल : पूंजी खण्ड	19,96,00	—	19,96,00	8,57,00	—	8,57,00	17,56,00	—	17,56,00
	कुल : मांग सं. 55	29,50,00	91,08,00	120,58,00	18,11,00	93,97,00	112,08,00	33,18,00	98,91,00	1,32,09,00

मांग संख्या 56 – प्रसारण सेवाएं

राजस्व

(हजार रुपयों में)

क्रम सं.	माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1993-94			संशोधित अनुमान 1993-94			बजट अनुमान 1994-95		
		योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर -योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
राजस्व खंड										
मुख्य शीर्ष 2221										
आकाशवाणी										
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	34100	88600	122700	24300	88100	112400	32200	92300	124500
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	219800	355900	575700	129300	360500	489800	134100	39,2200	526300
3.	विज्ञापन प्रसारण सेवा	1600	141900	143500	1600	173900	175500	2100	178200	180300
4.	कार्यक्रम सेवा	422400	1077800	1500200	235100	1182100	1417200	353900	1249900	1603800
5.	समाचार सेवा प्रभाग	1900	101400	103300	1100	112400	113500	2500	111100	113600
6.	श्रोता अनुसंधान	4800	7100	11900	4300	7100	11400	5900	7700	13600
7.	विदेश प्रसारण सेवा	2100	24200	26300	400	26000	26400	300	26800	27100
8.	योजना और विकास	24800	47700	72500	19500	50300	69800	23900	52300	76200
9.	अनुसंधान तथा प्रशिक्षण	13500	22000	35500	10200	22900	33100	11200	24700	35900
10.	उचन्त	—	574400	574400	—	560000	560000	—	600000	600000
11.	एन एल एफ में हस्तांतरण	—	426800	426800	—	407700	407700	—	401600	401600
12.	विभागीय कैंटीन	—	—	—	—	—	—	—	5100	5100
	कुल आकाशवाणी (राजस्व)	**725000**	**2867800**	**3592800**	**425800**	**2991000**	**3416800**	**586100**	**3141900**	**3708000**
दूरदर्शन										
1.	निर्देशन तथा प्रशासन	2700	70600	73300	1600	80300	81900	2000	75700	77700
2.	परिचालन तथा रख-रखाव	145500	610400	755900	141000	563500	704500	189500	622300	811800
3.	वाणिज्यिक सेवाएं	—	572100	572100	—	572300	572300	—	572600	572600
4.	कार्यक्रम सेवाएं	349200	1247000	1596200	381900	1173400	1555300	657200	1182600	1839800
5.	दर्शक अनुसंधान	500	6500	7000	300	6500	6800	500	7000	7500
6.	उचन्त	—	763500	763500	—	589800	589800	—	871700	871700
7.	आकाशवाणी और दूरदर्शन वाणिज्यिक कोष को हस्तांतरण	—	3151200	3151200	—	3165500	3165500	—	3144600	3144600
8.	विभागीय कैंटीन	—	—	—	—	—	—	200	3000	3200
	कुल : दूरदर्शन (राजस्व)	**497900**	**5421300**	**5919200**	**524800**	**6161300**	**6676100**	**849400**	**6479500**	**7328900**
	कुल : मुख्य शीर्ष 2221	**1222900**	**9289100**	**10512000**	**950800**	**9142300**	**10092900**	**1415500**	**9621400**	**11036900**
	कुल : राजस्व खंड	**1222900**	**9289100**	**10512000**	**950800**	**9142300**	**10092900**	**1415500**	**9621400**	**11036900**
	पारित	1222900	9288500	10511400	950600	9141550	10092150	1415500	9620800	11036300
	भारित	—	600	600	—	750	750	—	600	600
पूंजी खंड मुख्य शीर्ष- 4221										
1.	मशीनें तथा उपकरण	6600	—	6600	2100	—	2100	5300	—	5300
2.	स्टूडियो	319300	1000	320300	273400	200	273600	179100	500	179600
3.	ट्रान्समीटर	660100	—	660100	622200	—	622200	316600	—	316600
4.	उचन्त	—	54700	54700	—	43500	43500	—	47000	47000
5.	अन्य खर्च (स्थापना तथा विभिन्न निर्माण योजनाएं)	319000	—	319000	234300	600	234900	256100	—	256100
	कुल : आकाशवाणी	1305000	55700	1360700	1132000	44300	1176300	757100	47500	804600
	पारित	1304000	55700	1359700	1130000	44300	1174300	755100	47500	802600
	भारित	1000	—	1000	2000	—	2000	2000	—	2000

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
दूरदर्शन										
1.	मशीनें तथा उपकरण	5200	—	5200	7800	—	7800	8200	—	8200
2.	स्टूडियो	469600	1000	470600	463500	100	463600	427400	500	427900
3.	ट्रान्समीटर	501600	100	501700	386600	100	386700	1033300	—	1033300
4.	उचन्त	—	50000	50000	—	50000	50000	—	43400	43400
5.	अन्य व्यय (स्थापना तथा विविध निर्माण)	225700	—	225700	344200	500	344700	241700	—	241700
	योग : दूरदर्शन	**1202100**	**51100**	**1253200**	**1202100**	**50700**	**1252800**	**1710600**	**43900**	**1754500**
	पारित	**1201100**	**51100**	**1252200**	**1196100**	**50700**	**1246800**	**1706600**	**43900**	**1750500**
	भारित	**1000**	—	**1000**	**6000**	—	**6000**	**4000**	—	**4000**
	कुल : मुख्य शीर्ष – 4221	**2507100**	**106800**	**2613900**	**2334100**	**95000**	**2429100**	**2467700**	**91400**	**2559100**
	कुल : पूंजी खंड	**2507100**	**106800**	**2613900**	**2334100**	**95000**	**2429100**	**2467700**	**91400**	**2559100**

आकाशवाणी

वर्ष 1994–95 में चालू होने वाले आकाशवाणी केन्द्र और अन्य परियोजनाएं

प्रसारण केन्द्र

1	पौड़ी	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
2.	माउंट आबू	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
3.	चमोली	2x5 किलोवाट एफ. एम. ट्रांसमीटर
4.	किन्नौर (रिले)	स्टीरियो ट्रांसमिशन
5.	पिथौरागढ़ (रिले)	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
6.	अलीगढ़	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
7.	बुड़ानांदपुर	टाइप III सी.बी.एस. स्टूडियो
8.	मोकोकचुंग	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
9.	जीरो	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
10.	कोकराझार	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
11.	जोवाई	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
12.	डिफ्रु	स्टीरियो ट्रांसमिशन
13.	आसनसोल (रिले)	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
14.	बीजापुर	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
15.	कावारत्ती	टाइप IV स्टूडियो
		200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
		2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
		200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
		20 किलोवाट मीडियम वेवे ट्रांसमीटर
		20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
		2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर

अन्य परियोजनाएं

1.	किंग्सवे दिल्ली	3x50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
2.	दिल्ली	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
3.	दिल्ली	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
4.	इलाहाबाद (वी.बी.)	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
5.	इलाहाबाद	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
6.	उदयपुर	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
7.	रामपुर	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
8.	जालंधर	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
9.	गोरखपुर	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
10.	आगरा	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
11.	अल्मोड़ा	1 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
12.	जम्मू (सी.बी.एस.)	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
13.	गुवाहाटी	स्टूडियो का नवीनीकरण
14.	गुवाहाटी	100 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
15.	गुवाहाटी (एन.सी.)	2x3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
16.	गुवाहाटी (सी.बी.एस.)	2x3 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
17.	गंगटोक	टाइप 1 (आर) स्टूडियो
18.	गंगटोक	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
19.	तेजपुर	2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
20.	त्वांग	10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
21.	कोहिमा	50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
22.	कलकत्ता	स्टूडियो का नवीनीकरण
23.	कलकत्ता	200 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
24.	कलकत्ता	2x5 किलोवाट एफ.एम. ट्रांसमीटर
25.	भागलपुर	20 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर
26.	रांची	50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
27.	आइजावाल	10 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर
28.	सम्बलपुर	
29.	अगरतला	
30.	सिलीगुड़ी (सी.बी.एस.)	
31.	बंबई	
32.	बंबई (एन.सी.)	
33.	पणजी	
34.	बोरीविली	
35.	ग्वालियर	
36.	सांगली	
37.	परभनी	
38.	जबलपुर (सी.बी.एस.)	
39.	मद्रास	
40.	मद्रास (एन.सी.)	
41.	कालीकट	
42.	हैदराबाद	
43.	हैदराबाद	
44.	मदुरई	
45.	कोयम्बटूर	
46.	नागरकोइल	
47.	तिरुअनंतपुरम (वी.बी.)	
48.	विशाखापत्तनम	
49.	विशाखापत्तनम (सी.बी.एस.)	
50.	भद्रावती	
51.	गुलबर्गा	
52.	अल्लैपे	
53.	पांडिचेरी	
54.	कोचीन (सी.बी.एस.)	

सी. बी. एस. – विज्ञापन प्रसारण सेवा
एन. सी. – राष्ट्रीय चैनल सेवा
वी. बी. – विविध भारती सेवा

आकाशवाणी

विविध भारती और प्राथमिक चैनल पर विज्ञापनों से प्राप्त राजस्व

वर्ष	विविध भारती	प्राथमिक चैनल से प्राप्त सकल राजस्व		
		प्रथम चरण	द्वितीय चरण	कुल
1975-76	6,25,87,679	—	—	6,25,87,679
1976-77	6,85,54,222	—	—	6,85,54,222
1977-78	7,82,06,252	—	—	7,82.06,252
1978-79	8,90,75,436	—	—	8,90,75,436
1979-80	10,31,43,702	—	—	10,31,43,702
1980-81	12,51,32,824	—	—	12,51,32,824
1981-82	15,23,44,716	—	—	15,23,44,716
1982-83	15,39,89,422	72,64,000	—	16,12,53,422
1983-84	16,00,34,250	42,30,500	—	16,42,64,750
1984-85	15,93,53,046	66,78,500	—	16,60,31,546
1985-86	17,54,89,035	50,06,275	2,13,84,761	20,22,80,071
1986-87	17,71,77,765	1,06,68,575	5,20,92,195	23,99,38,535
1987-88	19,26,24,082	88,13,025	8,51.64,751	28,66,01,858
1988-89	21,99,92,445	84,81,675	9,60,46,546	32,45,20,666
1989-90	23,72,28,116	68,02,372	10,59,36,265	35,06,66,753
1990-91	25,25,09,742	64,71,500	13,40,37,024	39,30,18,266
1991-92	34,89,00,000	83,62,000	17,00,38,000	52,73,00,000
1992-93	37,66,00,000	1,38,00,000	19,87,00,000	58,91,00,000

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

1993 में प्रमाणित भारतीय फीचर फिल्में

क्र.सं.	भाषा	क्षेत्र								
		बंबई	कलकत्ता	मद्रास	बंगलौर	तिरुअनंतपुरम	हैदराबाद	कटक	दिल्ली	कुल
1.	हिंदी	146	3	14	3	2	13	—	1	182
2.	तमिल	1	—	115	11	3	38	—	—	168
3.	तेलुगु	1	—	50	6	4	87	—	—	148
4.	कन्नड़	—	—	—	78	—	—	—	—	78
5.	मलयालम	—	—	60	—	10	1	—	—	71
6.	बंगला	3	53	1	—	—	—	—	—	57
7.	मराठी	35	—	—	—	—	—	—	—	35
8.	उड़िया	2	2	1	—	—	—	15	—	20
9.	पंजाबी	14	—	—	—	—	—	—	—	14
10.	असमिया	4	4	1	—	—	—	—	—	9
11.	नेपाली	7	—	—	—	—	—	—	—	7
12.	राजस्थानी	5	—	—	—	—	—	—	—	5
13.	गुजराती	3	—	—	—	—	—	—	—	3
14.	मणिपुरी	—	2	1	—	—	—	—	—	3
15.	हरियाणवी	1	—	—	—	—	—	—	—	1
16.	भोजपुरी	2	—	—	—	—	—	—	—	2
17.	गुज्जर	1	—	—	—	—	—	—	—	1
18.	टुलु	—	—	—	1	—	—	—	—	1
19.	कोडावा	—	—	—	1	—	—	—	—	1
20.	अंग्रेजी	—	—	2	—	—	—	—	—	2
21.	गढ़वाली	1	—	—	—	—	—	—	—	1
22.	कोक बोरोक	—	1	—	—	—	—	—	—	1
23.	उर्दू	1	—	—	—	—	1	—	—	2
	कुल	**227**	**65**	**245**	**100**	**19**	**140**	**15**	**1**	**812**

परिशिष्ट–छह

दूरदर्शन

दूरदर्शन प्रसारण केन्द्र (08–2–1994 की स्थिति)

क्रम सं.	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	उच्च शक्ति	अल्प शक्ति	अतिअल्प शक्ति	ट्रान्सपोंजर	कुल
1.	असम	3	9	0	2	14
2.	आंध्र प्रदेश	5	30	0	2	37
3.	अरुणाचल प्रदेश	1	2	16	0	19
4.	बिहार	5	26	0	1	32
5.	गोवा	1	0	0	0	1
6.	गुजरात	4	27	1	0	32
7.	हरियाणा	0	5	0	0	5
8.	हिमाचल प्रदेश	1	6	5	2	14
9.	जम्मू–कश्मीर	3	2	15	1	21
10.	केरल	2	13	0	0	15
11.	कर्नाटक	4	26	0	0	30
12.	मध्यप्रदेश	6	47	0	1	54
13.	मेघालय	2	2	1	0	5
14.	महाराष्ट्र	5	38	0	1	44
15.	मणिपुर	1	1	3	0	5
16.	मिजोरम	1	0	2	0	3
17.	नागालैंड	1	2	3	1	7
18.	उड़ीसा	3	27	0	1	31
19.	पंजाब	3	4	0	1	8
20.	राजस्थान	2	36	1	2	41
21.	सिक्किम	0	1	3	0	4
22.	तमिलनाडु	2	23	0	3	28
23.	त्रिपुरा	1	0	0	1	2
24.	उत्तर प्रदेश	8	43	10	4	65
25.	पश्चिम बंगाल	4	13	2	0	19
26.	दिल्ली	1	0	0	0	1
27.	अंडमान निकोबार द्वीपसमूह	0	2	6	0	8
28.	दमन और दीव	0	1	1	0	2
29.	पांडिचेरी	0	1	3	0	4
30.	लक्षद्वीप	0	0	9	0	9
31.	चंडीगढ़	0	1	0	0	1
32.	दादरा और नागर हवेली	0	0	1	0	1
	कुल	69	388	82	23	562

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार की सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों के आंकड़े

संरक्षण	रील की संख्या	
1. फिल्मों की विस्तृत जांच	16 एम. एम.	35 एम. एम.
2. फिल्मों की सामान्य जांच	56 चरखियां	1212 रील
3. सेफ्टी बेस में स्थानांतरित	1061चरखियां	19688 रील
नाइट्रेट रील		57 रील

फिल्म संस्कृति का प्रसार

1. पुस्तकालय सदस्य (वितरण)	17 (नये)	87 (नवीनीकरण)	104 (सदस्य)
2. पुस्तकालय सदस्य (वितरण) को दिए गए फिल्मों की संख्या		156	
3. विशेष अवसरों के लिए फिल्मों की आपूर्ति		108 +वीडियो 141	
4. संयुक्त अवलोकन		165	
5. फिल्म मूल्यांकन पाठ्यक्रम के लिए फिल्मों की आपूर्ति		65	
6. शैक्षिक अवलोकन के लिए भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान को फिल्मों की आपूर्ति		422 + वीडियो 65	
7. संसद सदस्यों के अवलोकनार्थ फिल्मों की आपूर्ति		23	
8. निर्माताओं/वीडियों प्रतिलिपियों के स्वामित्वधारकों के लिए फिल्मों की आपूर्ति		45	
9. शोधकर्ताओं को दिखाई गई फिल्मों की संख्या		56 भारतीय 26 विदेशी	
10. दिखाई गई फिल्मों की संख्या		117 फिल्म	

पत्र सूचना कार्यालय
क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	शाखा कार्यालय	कार्यालय तथा सूचना केन्द्र	सूचना कार्यालय	अस्थायी केन्द्र	कुल
		I. उत्तरी क्षेत्र			
चंडीगढ़	1. जम्मू 2. शिमला	1. श्रीनगर 2. जालंधर	—	—	5
		II. मध्य क्षेत्र			
भोपाल	1. जयपुर 2. इंदौर 3. कोटा 4. जोधपुर	—	—	—	5
		III. मध्य-पूर्व क्षेत्र			
लखनऊ	1. वाराणसी 2. कानपुर 3. पटना	—	—	—	4
		IV. पूर्वी क्षेत्र			
कलकत्ता	1. कटक 2. अगरतला	1. गंगटोक	पोर्ट ब्लेयर	भुवनेश्वर	6
		V. पूर्वोत्तर क्षेत्र			
गुवाहाटी	1. शिलांग	1. कोहिमा 2. इम्फाल	आइज़ोल	—	5
		VI. दक्षिण-मध्य क्षेत्र			
हैदराबाद	1. विजयवाड़ा 2. बंगलौर	—	—	—	3
		VII. दक्षिणी क्षेत्र			
मद्रास	1. मदुरै 2. तिरुअनंतपुरम 3. कोचीन	—	—	—	4
		VIII. पश्चिमी क्षेत्र			
बम्बई	1. नागपुर 2. पुणे 3. पणजी 4. अहमदाबाद 5. राजकोट	—	—	—	6
कुल 8	22	5	2	1	38

क्षेत्रीय प्रचार

प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालय

1. आंध्र प्रदेश

1. कडप्पा
2. गुंटूर
3. हैदराबाद
4. काकीनाडा
5. कुरनूल
6. नलगोंडा
7. मेडक
8. नेल्लोर
9. निज़ामाबाद
10. श्रीकाकुलम
11. विशाखापत्तनम
12. वारंगल

2. अरुणाचल प्रदेश

1. अलांग
2. अनीनी
3. बोमडिला
4. दपोरिजो
5. खोंसा
6. नामपोंग
7. न्यू ईटानगर
8. पासीघाट
9. सेप्पा
10. त्वांग
11. तेजू
12. ज़िरो

3. असम

1. बरपेटा
2. धुबरी
3. डिब्रूगढ़
4. डिफू
5. गुवाहाटी
6. हाफलांग
7. जोरहाट
8. नलबाड़ी
9. उतरी लखीमपुर
10. नौगांव
11. सिलचर
12. तेजपुर

4. बिहार (उत्तरी), पटना

1. भागलपुर
2. बेगूसराय
3. छपरा
4. दरभंगा
5. फारबिसगंज
6. किशनगंज
7. मुंगेर
8. मोतीहारी
9. मुजफ्फरपुर
10. पटना
11. सीतामढ़ी

5. बिहार (दक्षिणी), रांची

1. डाल्टनगंज
2. धनबाद
3. दुमका
4. गया
5. गुमला
6. हजारीबाग
7. जमशेदपुर
8. रांची

6. गुजरात

1. अहमदाबाद
2. अहवा
3. भावनगर
4. भुज
5. गोधरा
6. हिम्मतनगर
7. जूनागढ़
8. पालनपुर
9. राजकोट
10. सूरम
11. वडोदरा

7. जम्मू और कश्मीर

1. अनंतनाग
2. बारामूला
3. चदूरा
4. डोडा
5. जम्मू (तवी)
6. कंगन
7. कारगिल
8. कठुआ
9. कुपवाड़ा
10. लेह
11. पुंछ
12. राजौरी
13. शोपियां
14. श्रीनगर
15. उधमपुर

8. कर्नाटक

1. बंगलौर
2. बेलगांव
3. बेल्लारि
4. बीजापुर
5. चित्रदुर्ग
6. धारवाड़
7. गुलबर्गा
8. हसन
9. मंगलूर
10. मैसूर
11. शिमोगा

9. केरल

1. एलेप्पी
2. कण्णूर
3. एर्नाकुलम
4. कैलपट्टा (विनाद)
5. कोट्टायम
6. कोझिकोड
7. मल्लपुरम
8. पालघाट
9. क्विलोन
10. त्रिचूर
11. तिरुअनंतपुरम

10. मध्य प्रदेश (पूर्व), रायपुर

1. अम्बिकापुर
2. बालाघाट
3. बिलासपुर
4. दुर्ग
5. जबलपुर
6. जगदलपुर
7. कांकेर
8. रायपुर
9. रीवां
10. शहडोल
11. सीधी

11. मध्य प्रदेश (पश्चिम), भोपाल

1. भोपाल
2. छतरपुर
3. छिंदवाड़ा
4. गुना
5. ग्वालियर
6. होशंगाबाद
7. इन्दौर
8. झाबुआ
9. मंदसौर
10. सागर
11. उज्जैन

12. महाराष्ट्र और गोवा

1. अहमदनगर
2. अमरावती
3. औरंगाबाद
4. बम्बई
5. चंद्रपुर
6. जलगांव
7. कोल्हापुर
8. नागपुर
9. नांदेड़
10. नासिक
11. पुणे
12. रत्नागिरी
13. सतारा
14. शोलापुर
15. वर्धा
16. पणजी

13. मेघालय, मिज़ोरम और त्रिपुरा क्षेत्र

1. अगरतला
2. आइज़ोल
3. जोवाई
4. कैलाशहर
5. लुंगलेई
6. सेहा
7. शिलांग
8. तुरा
9. उदयपुर

14. नागालैंड और मणिपुर

1. चंदेल
2. चूड़ाचांदपुर
3. इम्फाल
4. कोहिमा
5. मोकोकचुंग
6. मोन
7. तामंगलोंग
8. त्यूनसांग
9. उखरुल

15. उत्तर-पश्चिम

1. अम्बाला
2. अमृतसर
3. चंडीगढ़
4. धर्मशाला
5. फिरोजपुर
6. हमीरपुर
7. हिसार
8. जालंधर
9. काल्पा
10. लुधियाना
11. मंडी
12. नाहन
13. नारनौल
14. नई दिल्ली (I)
15. नई दिल्ली (II)
16. पठानकोट
17. रोहतक
18. शिमला

16. उड़ीसा

1. बालासोर
2. बारीपाड़ा
3. बरहामपुरा
4. भवानी पटना
5. भुवनेश्वर
6. कटक
7. जेपोर
8. क्योंझर
9. फूलबनी
10. पुरी
11. सम्बलपुर

17. राजस्थान

1. अजमेर
2. अलवर
3. बाड़मेर
4. बीकानेर
5. डूंगरपुर
6. जयपुर
7. जैसलमेर
8. जोधपुर
9. कोटा
10. सवाई माधोपुर
11. सीकर
12. श्रीगंगानगर
13. उदयपुर

18. तमिलनाडु और पांडिचेरी

1. कोयम्बटूर
2. धर्मपुरी
3. मद्रास
4. मदुरै
5. पांडिचेरी
6. रामनाथपुरम्
7. सेलम
8. तंजावूर
9. तिरुचिरापल्ली
10. तिरुनेलवेलि
11. बेल्लोर

19. उत्तर प्रदेश (मध्य-पूर्व), लखनऊ

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. बांदा
4. गोंडा
5. गोरखपुर
6. झांसी
7. कानपुर
8. लखीमपुर-खीरी
9. लखनऊ
10. मैनपुरी
11. रायबरेली
12. सुल्तानपुर
13. वाराणसी

20. उत्तर प्रदेश (उत्तर-पश्चिम), देहरादून

1. आगरा
2. अलीगढ़
3. बरेली
4. देहरादून
5. गोपेश्वर
6. मेरठ
7. मुरादाबाद
8. मुजफ्फरनगर
9. नैनीताल
10. पौड़ी
11. पिथौरागढ़
12. रानीखेत
13. उत्तरकाशी

21. पश्चिम बंगाल (उत्तर), सिलीगुड़ी

1. कूच बिहार
2. गंगटोक
3. जलपाईगुड़ी
4. जोरेथांग
5. कालिंमपोंग
6. मालदा
7. रायगंज
8. सिलीगुड़ी

22. पश्चिम बंगाल (दक्षिण), कलकत्ता

1. बांकुरा
2. बैरकपुर
3. बरहामपुर
4. बर्दवान
5. कलकत्ता
6. कार निकोबार
7. चिनसुरा
8. मिदनापुर
9. पोर्ट ब्लेयर
10. रानीघाट
11. कलकत्ता (एफ.डब्ल्यू.)